Sant Baba
GURU GHASI DAS

Ram Prasad Baghel

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Ram Prasad Baghel 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-769-8

Cover design: Shariq Ansari
Typesetting: Simran Maurya

First Edition: June 2026

लेखक की कलम से — प्रस्तावना (हिंदी)

इस कहानी के संवाद मैंने जानबूझकर सरल, प्रचलित और आम बोलचाल की भाषा में लिखे हैं, ताकि यह कथा बिना किसी भाषाई बाधा के सामान्य जन–जन तक पहुँच सके। साहित्यिक या अलंकारिक शब्दों के प्रयोग से बचते हुए मेरा प्रयास रहा है कि भाव सीधे और सहज रूप में पाठक तक पहुँचे।

वर्तमान समय में सोशल मीडिया, डिजिटल माध्यमों और त्वरित दृश्य सामग्री के बढ़ते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, इस कथा के संवादों को पूर्णतः स्क्रीनप्ले स्क्रिप्ट के स्वरूप में रचा गया है। इसका उद्देश्य यह है कि जो भी व्यक्ति इस कहानी को फ़िल्म, वेब-सीरीज़, शॉर्ट फ़िल्म, एनीमेशन, ग्राफ़िक्स, ऑडियो बुक, ई-बुक या एआई-आधारित वीडियो रूपांतरण में बदलना चाहता हो, वह सीधे इन संवादों का उपयोग कर सके और किसी अतिरिक्त मध्यस्थ या पुनर्लेखन की आवश्यकता न पड़े।

यह प्रयास इसलिए भी किया गया है ताकि उच्च गुणवत्ता वाले तकनीकी संसाधनों से युक्त फ़िल्म निर्देशक हों या सीमित अथवा न्यून बजट में कार्य करने वाले रचनाकार—दोनों ही इस स्क्रिप्ट को पढ़कर स्वतंत्र रूप से यह निर्णय ले सकें कि यह कहानी उनके माध्यम के अनुकूल है या नहीं।

मेरी इच्छा है कि यह कथा केवल एक पुस्तक तक सीमित न रहे, बल्कि विभिन्न माध्यमों के द्वारा विश्व के हर स्तर के पाठकों और दर्शकों तक पहुँचे। यदि यह कहानी किसी रचनाकार को नए प्रयोग के लिए प्रेरित करती है, तो इसे मैं अपनी लेखनी की सार्थकता मानूँगा।

— राम प्रसाद बघेल

From the Author's Pen — Preface (English)

The dialogues in this story have been intentionally written in simple, commonly spoken language so that the narrative can reach a wide and diverse audience without linguistic barriers. I have consciously avoided the use of complex or ornamental literary expressions, allowing emotions and ideas to flow in a direct and accessible manner.

Keeping in mind today's social media–driven culture and the growing demand for visual storytelling, the dialogues have been structured entirely in the format of a complete screenplay script. The intention is to ensure that anyone interested in adapting this story into a film, web series, short film, animation, graphics-based content, audiobook, e-book, or AI-generated video can directly use the existing dialogues without the need for additional scriptwriters or intermediaries.

This approach also enables filmmakers—whether working with advanced technology and high production value, or operating within limited or modest budgets—to independently evaluate the screenplay and make informed creative decisions without external dependency.

My aspiration is for this story to travel beyond the boundaries of a single medium and reach readers and creators across the world through multiple platforms. If this work inspires experimentation, adaptation, or new forms of storytelling, I will consider the purpose of my writing fulfilled.

— Ram Prasad Baghel

प्रस्तावना

संत बाबा गुरु घासी दास जी के दिव्य ज्ञान पर आधारित यह कृति कोई साधारण पुस्तक नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक चेतना के गहनतम रहस्यों का एक सजीव प्रकाशस्तंभ है। इस ग्रंथ में उन सूक्ष्म और गूढ़ सत्यों का सरल भाषा में उद्‌घाटन किया गया है, जिन्हें स्वयं संत बाबा गुरु घासी दास ने अपने कठोर तप, साधना और अनुभव के माध्यम से आत्मसात किया।

इस पुस्तक में उनके तपकालीन जीवन का विस्तारपूर्वक वर्णन है—कैसे उन्होंने सोनाखान के छाता पहाड़ में एकांत साधना करते हुए दिन-रात आध्यात्मिक अभ्यासों के माध्यम से साधारण मानव से गुरु बनने तक का अद्‌भुत पथ तय किया। "सातों कमलों का जागरण", उनके बीज मंत्र, ध्यान की विधि, तथा रीढ़ के मध्य स्थित सुषुम्ना तंत्र के जागरण जैसे गहन विषयों को अत्यंत सहज और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया गया है।

यह कृति यह भी उजागर करती है कि किस प्रकार उन्होंने जटिल आध्यात्मिक साधनाओं को जनसाधारण के लिए सरल और सुलभ बनाने हेतु पंथी नृत्य और गीतों का सृजन किया—जहाँ बीज मंत्रों को एक संगीतमय सरगम में ढालकर साधना को एक आनंदमय अनुभव बना दिया गया।

साथ ही, इस ग्रंथ में अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर दिया गया है—

जय स्तम्भ का वास्तविक अर्थ क्या है? जैत खम्भ किसके प्रतीक हैं? सरई लकड़ी का प्रयोग क्यों किया गया? पंथी नृत्य और गीत का आध्यात्मिक महत्व क्या है? ध्यान में बैठने से पूर्व कौन-से अभ्यास आवश्यक हैं?

इस पुस्तक का मूल संदेश अत्यंत स्पष्ट और सार्वभौमिक है—

“सतनाम” वह सर्वोच्च सत्य है, जो समस्त ब्रह्मांड और प्रत्येक जीव में समान रूप से विद्यमान है। हर मानव समान है, और यही सच्चे धर्म का आधार है।

यह पुस्तक केवल सतनाम धर्म के साधकों के लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी जिज्ञासु आत्माओं के लिए है जो आत्मज्ञान, शांति और मोक्ष की खोज में हैं—चाहे वे किसी भी जाति, धर्म या पंथ से जुड़े हों।

यदि कोई साधक इस पुस्तक में वर्णित साधना और सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात कर ले, तो निःसंदेह यह कृति उसके लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम है।

Preface

This book, based on the divine knowledge of Guru Ghasidas, is not an ordinary work. It is a profound exploration of the subtle and esoteric truths of the Satnam philosophy, revealed through deep spiritual practice, discipline, and realization.

Within these pages, the life of Guru Ghasidas during his period of intense meditation and penance is described in detail—how he practiced tirelessly in the forests and hills of Sonakhan, transforming himself from an ordinary human into an enlightened Guru. The book presents complex spiritual concepts such as the awakening of the seven chakras, seed mantras, meditation techniques, and the activation of the Sushumna channel in a simple and accessible manner.

This work also highlights how Guru Ghasidas transformed intricate spiritual practices into a collective and joyful experience. By integrating spiritual discipline with rhythm and music, he gave rise to Panthi dance and songs, turning profound spiritual exercises into a form of cultural expression and devotion.

Furthermore, the book provides thoughtful insights into important spiritual and symbolic elements—such as the true meaning of Jai Stambh, the significance of Jaitkham, the use of sacred wood, and the essential practices required before meditation.

At its core, this book conveys a universal truth:

“Satnam” is the supreme reality that exists equally in all living beings. All humans are equal, and this equality is the foundation of true spirituality.

This book is not only for followers of the Satnam tradition, but for all seekers of truth, inner growth, and liberation—regardless of caste, religion, or belief system.

If a sincere seeker applies the practices described in this book in their life, this single work can serve as a gateway to spiritual liberation.

आभार

इस पुस्तक के सृजन की प्रेरणा मुझे मेरी प्रिय पुत्री जाह्नवी बघेल से प्राप्त हुई। उसकी निष्कलंक जिज्ञासा और सतनाम धर्म के प्रति गहरी आस्था ने मुझे इस कृति को लिखने के लिए प्रेरित किया। उसके इस पावन आग्रह ने मेरे भीतर सोई हुई चेतना को जागृत किया, जिसके लिए मैं उसका हृदय से आभारी हूँ।

मैं अपने प्रिय मित्र कमलेश गेंद्रें (वकील साहब) के प्रति विशेष कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने संत बाबा गुरु घासी दास जी के जीवन से जुड़े अनेक प्रसंगों की मार्मिकता के साथ समीक्षा करते हुए मुझे इस ग्रंथ को सशक्त रूप देने में अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

मेरे पुत्र पूर्वादित्य बघेल तथा मेरी धर्मपत्नी संगीता बघेल का सहयोग इस यात्रा में अतुलनीय रहा। उनके धैर्य, समझ और निरंतर समर्थन ने इस पुस्तक को पूर्णता तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंत में, मैं समस्त सतनाम धर्म के अनुयायियों तथा विश्व के सभी आध्यात्मिक जिज्ञासुओं से विनम्र निवेदन करता हूँ कि इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें और इसमें निहित सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारें।

मैं उन सभी ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस कृति के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान किया।

Acknowledgement

The inspiration for this book came from my beloved daughter, Jahnavi Baghel, whose sincere curiosity and deep spiritual inclination encouraged me to write on the subject of Satnam philosophy. Her heartfelt request awakened a sense of purpose within me, for which I remain deeply grateful.

I extend my sincere thanks to my dear friend Kamlesh Gendare (Advocate), who provided invaluable support by thoughtfully reviewing and contributing to various aspects of the life and teachings of Guru Ghasidas. His insights added depth and clarity to this work.

I am also profoundly thankful to my son Purvaditya Baghel and my wife Sangeeta Baghel, whose constant support, patience, and encouragement made it possible for me to complete this book.

Finally, I humbly request all followers of Satnam philosophy and spiritual seekers around the world to read this book and apply its teachings in their lives.

I express my heartfelt gratitude to all those, known and unknown, who directly or indirectly contributed to the completion of this work.

लेखक परिचय

राम प्रसाद बघेल छत्तीसगढ़ राज्य के कवर्धा क्षेत्र से संबंधित एक समर्पित चिंतक, आध्यात्मिक साधक और सतनाम दर्शन के गहन अध्येता हैं। आपने अपने जीवन को सत्य, समानता और मानवता के मूल सिद्धांतों को समझने और उन्हें समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से समर्पित किया है।

सतनाम पंथ के प्रवर्तक संत बाबा गुरु घासी दास जी के जीवन, उनके उपदेशों तथा उनके द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक मार्ग से प्रेरित होकर आपने इस पुस्तक की रचना की है। यह कृति आपके वर्षों के चिंतन, अध्ययन और साधना का सार है, जिसमें आपने जटिल आध्यात्मिक विषयों को अत्यंत सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

लेखक का मानना है कि "सतनाम" केवल एक शब्द नहीं, बल्कि जीवन का परम सत्य है, जो प्रत्येक जीव में समान रूप से विद्यमान है। इसी विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए आप निरंतर प्रयासरत हैं।

कवर्धा (छत्तीसगढ़, भारत) में निवासरत श्री बघेल का उद्देश्य समाज में आध्यात्मिक जागरूकता का प्रसार करना और मानव मात्र को समानता, सत्य तथा आत्मज्ञान के मार्ग पर अग्रसर करना है।

Author Biography

Ram Prasad Baghel is a dedicated spiritual thinker, practitioner, and student of Satnam philosophy from Kawardha, Chhattisgarh, India. He has devoted his life to understanding and spreading the values of truth, equality, and humanity.

Deeply inspired by the life and teachings of Guru Ghasidas, he has authored this book as a result of his continuous study, contemplation, and spiritual inclination. His aim is to present profound spiritual knowledge in a simple and accessible manner so that it can benefit people from all walks of life.

He believes that "Satnam" is not merely a word, but the ultimate truth that resides equally in every being. Through his writing, he seeks to inspire individuals toward self-realization, inner peace, and spiritual awakening.

Residing in Kawardha, Chhattisgarh, India, Ram Prasad Baghel continues his efforts to promote spiritual awareness and guide humanity toward a path of truth and equality.

लेखक की ओर से प्रार्थना एवं अपील (हिंदी)

संत बाबा गुरु घासी दास जी के दिव्य जीवन और उनके द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित यह पुस्तक मेरे जीवन की सबसे अमूल्य कृतियों में से एक है। इसमें उनके जीवन से जुड़े उन गूढ़ रहस्यों और आध्यात्मिक सत्यों को संजोने का विनम्र प्रयास किया गया है, जो मानव जीवन को दिशा प्रदान करने में समर्थ हैं।

मैं समस्त सतनाम धर्म के अनुयायियों तथा सभी धर्मों, संप्रदायों और पंथों के श्रद्धालु मानवों से करबद्ध विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि इस पुस्तक को अपने घर में अवश्य स्थान दें तथा समय-समय पर अपने मित्रों, परिजनों और परिचितों को उपहार स्वरूप भेंट करें।

ऐसा करने से संत बाबा गुरु घासी दास जी के अमूल्य उपदेश, विशेष रूप से "मनखे मनखे एक समान" का महान संदेश, जन-जन तक पहुँचेगा और मानव समाज में समानता, प्रेम तथा सद्भाव का विस्तार होगा।

मैं विशेष रूप से सतनामी बंधुओं से निवेदन करता हूँ कि जब भी वे किसी अन्य धर्म, संप्रदाय या पंथ के बंधुओं के यहाँ किसी भी अवसर पर जाएँ, तो इस पुस्तक को एक पवित्र उपहार के रूप में अवश्य भेंट करें। इसी प्रकार, किसी भी जाति, धर्म या समुदाय के शुभ अवसरों पर इस पुस्तक का उपहार देना, मानवता के इस संदेश को आगे बढ़ाने का एक श्रेष्ठ माध्यम बन सकता है।

मैं यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता हूँ कि इस अपील के पीछे मेरा कोई व्यावसायिक उद्देश्य नहीं है। मेरा एकमात्र ध्येय यही है कि संत बाबा गुरु घासी दास जी के अमर ज्ञान और गूढ़ संदेश समस्त विश्व में फैलें, तथा "मनखे मनखे एक समान" का सिद्धांत प्रत्येक हृदय में स्थान पाकर समस्त जीवों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे।

Author's Prayer and Appeal (English)

This book, based on the divine life and teachings of Guru Ghasidas, is one of the most precious creations of my life. It is a humble effort to preserve and present the profound spiritual truths and hidden wisdom associated with his life—truths that have the power to guide humanity toward a higher path.

With folded hands, I sincerely appeal to all followers of the Satnam tradition, as well as to people of all religions, faiths, and communities, to keep this book in their homes and to offer it as a gift to their friends, family members, and loved ones on various occasions.

By doing so, the invaluable teachings of Guru Ghasidas, especially the noble message "All human beings are equal," will reach every corner of society and help foster unity, compassion, and harmony among people.

I particularly request members of the Satnami community that whenever they visit families of other religions, sects, or traditions on any occasion, they may kindly present this book as a sacred gift. Likewise, on any social or cultural occasion—regardless of caste, creed, or belief—this book can be shared as a meaningful gesture to spread the message of equality and spiritual awareness.

I would also like to clearly state that this appeal is not driven by any commercial intention to promote the sale of this book. My sole purpose is to ensure that the timeless wisdom and spiritual message of Guru Ghasidas reach people across the world, and that the principle of "equality among all human beings" contributes to the well-being of all living beings.

🎬 Screenplay Script

BABA GURU GHASI DAS JI

SCENE 1

🌿 दृश्य 1 (HINDI)

EXT. सोनाखान का घनघोर जंगल
दोपहर 12 बजे
वर्ष 1774

तेज़ धूप।
जंगल घना, गूढ़ और रहस्यमय।
चारों ओर सन्नाटा, केवल पक्षियों की आवाज़ और हवा में पत्तों की सरसराहट।
एक नवयुवक — गठीला बदन, नीचे धोती, ऊपर निर्वस्त्र शरीर —
हाथ में तेज़ धार वाली टंगिया लिए जंगल में आगे बढ़ रहा है।
उसकी आँखें लगातार बिल्कुल सीधे, 90 डिग्री खड़े पेड़ को खोज रही हैं।
चलते-चलते वह जंगल के काफी भीतर पहुँच जाता है।
तभी—
उसकी नज़र एक विशाल, मोटे तने वाले साल के वृक्ष पर पड़ती है,
जो धरती से आकाश की ओर बिल्कुल सीधा, 90 डिग्री में खड़ा है।
नवयुवक उस वृक्ष के पास आता है।
वह अपनी कमर पर बंधा कपड़ा कसकर बाँधता है।
पास रखे एक पत्थर पर टंगिया को घिसकर तेज़ करता है।
फिर—
वह साल के वृक्ष को दोनों हाथों से स्पर्श कर, माथे से लगाकर प्रणाम करता है।

नवयुवक दोनों हाथों में टंगिया थामता है और पूरी ताक़त से वृक्ष पर प्रहार करता है।
धप!
टंगिया के वार से शांत जंगल गूँज उठता है।
हर वार के साथ जंगल काँपता है।
वह लगातार वार करता रहता है।
कुछ समय बाद—
नवयुवक पसीने से लथपथ हो जाता है।
वह रुकता है।
लुंगी में बँधे कपड़े को खोलकर अपने शरीर का पसीना पोंछता है।
ज़मीन पर बैठ जाता है।
वह साल के वृक्ष की ऊँचाई को
आकाश की ओर देखकर निहारता है।
फिर—
वह उठता है और दुबारा काटना शुरू करता है।
अचानक—
पीछे से एक अत्यंत वृद्ध पुरुष प्रकट होता है।
लंबे, घने, सफ़ेद बाल — कंधों से नीचे तक।
पूरी तरह सफ़ेद दाढ़ी-मूँछ — दाढ़ी छाती से भी नीचे।
एक हाथ में पानी से भरा तुमा,
दूसरे हाथ में अजीब-सा लकड़ी का डंडा।
वह अत्यंत कोमल हाथों से
नवयुवक के कंधे पर स्पर्श करता है।

बूढ़ा आदमी (कोमल स्वर में)
"बेटा..."
नवयुवक चौंक जाता है।
वह तुरंत वृक्ष काटना रोक देता है

और पीछे पलटकर देखता है।
इतने सुनसान जंगल में किसी को देखकर
वह घबरा जाता है।
उसकी नज़र उस वृद्ध पर टिक जाती है।
वृद्ध मुस्कुराता है।

बूढ़ा आदमी
बेटा घासी, थोड़ा पानी पी लो।
वृक्ष काटते-काटते थक गए होगे।
बहुत तेज़ धूप है, यहाँ उमस भी बहुत है।
पूरा शरीर पसीने से भर गया होगा।
वह तुमा को आगे बढ़ाता है।
घासी बिना कुछ बोले
दोनों हथेलियाँ जोड़कर पानी पीता है।
वह ऐसे पानी पीता है
मानो जन्म-जन्म से प्यासा हो।
कुछ देर बाद वह पानी पीना रोकता है।
बूढ़ा आदमी (स्नेह से)
बहुत ही प्यारा हो, बेटा घासी।
घासी आश्चर्य से देखता है।

घासी
आप मेरा नाम कैसे जानते हैं?
और आप कौन हैं?
इतने घने जंगल में क्या कर रहे हैं?
आपको देखकर लगता है आप कोई साधु-संत हैं।
और यह कैसा पानी था?
मुझे लगा मेरी कई जन्मों की भूख और प्यास मिट गई।

घासी हाथ जोड़कर प्रणाम मुद्रा में खड़ा हो जाता है।

बूढ़ा आदमी
मैं सब जानता हूँ, बेटा घासी।
समाज में ऊँच-नीच, जाति-पाँति,
अमीरी-गरीबी,
धार्मिक आडंबर और कुरीतियाँ
तुम्हें बचपन से व्याकुल करती रही हैं।
तुम्हारे हृदय में
सभी प्राणियों के लिए करुणा, दया और प्रेम है।
लेकिन—
यह क्या कर रहे हो?
एक बेजुबान, असहाय वृक्ष पर
तेज़ धार वाली टंगिया चला रहे हो।
कितना दर्द हो रहा होगा इसे।
यह अपनी पीड़ा कह नहीं सकता,
तो क्या तुम महसूस नहीं कर सकते?
हर प्राणी में जीवन समान है—
चाहे मनुष्य हो, पशु हो,
छोटी-सी चींटी हो
या यह विशाल साल का वृक्ष।
वृद्ध उसी कटे हुए वृक्ष की ओर इशारा करता है।

बूढ़ा आदमी
देखो, कितनी गहराई तक काट दिया है तुमने।
यह पीड़ा से काँप रहा है।
वह तुमा से पानी
अपनी हथेली में लेकर

कटे हुए स्थान पर दूर से छींटा मारता है।
तुरंत—
साल का वृक्ष
पहले जैसा संपूर्ण और स्वस्थ हो जाता है।
घासी स्तब्ध रह जाता है।
वह तुरंत वृद्ध के चरण पकड़ लेता है।

घासी (रोते हुए)
बाबा, मुझे माफ़ कर दीजिए।
वृद्ध उसके कंधे पकड़कर उसे उठाता है।

बूढ़ा आदमी
यदि भूल हो जाए,
तो उसे सुधारो।
यह साल का वृक्
धरती और आकाश के बीच सीधा खड़ा है।
यह अपने भीतर
प्राकृतिक और ब्रह्मांडीय ज्ञान
पूरे जीवन भर ग्रहण करता है।
इसे नष्ट नहीं—
संरक्षित करना है।
तुम भी साल के वृक्ष की तरह
अपने शरीर और विचारों को सीधा रखो,
ऊँचा बनो—
ताकि सत्य ज्ञान प्राप्त कर सको।
इतना कहते ही—
वह वृद्ध क्षण भर में अदृश्य हो जाता है।
घासी वहीं खड़ा

अचंभित होकर देखता रह जाता है।
उसे कुछ भी समझ में नहीं आता।

FADE OUT.

🌍 SCENE 1 (ENGLISH)

EXT. DENSE FOREST OF SONAKHAN
NOON
YEAR 1774

Harsh sunlight.

A deep, mysterious forest.

Silence everywhere, broken only by birds and rustling leaves.

A YOUNG MAN – muscular build, wearing a dhoti, upper body bare –

walks through the forest holding a sharp axe.

His eyes search for a perfectly straight, 90-degree standing tree.

He moves deeper into the jungle.

Suddenly–

He sees a massive, thick SAL TREE,

standing upright between earth and sky.

The young man approaches the tree.

He tightens the cloth around his waist.

Sharpens the axe on a stone.

Then–

He touches the tree with both hands,
presses his forehead to it,
and bows in reverence.
He grips the axe with both hands
and strikes the tree with full force.
THUD!
The silent forest echoes.
Each strike sends a tremor through the jungle.
Time passes.
The young man is drenched in sweat.
He stops.
Wipes his body.
Sits on the ground.
He looks up at the towering tree touching the sky.
Then—
He rises and starts chopping again.
Suddenly—
An OLD MAN appears behind him.
Long white hair flowing past his shoulders.
A fully white beard reaching below his chest.
In one hand, a water-filled gourd.
In the other, a mysterious wooden staff.
He gently places his hand on the young man's shoulder.

OLD MAN (softly)

Son...
The young man is startled.
He stops chopping and turns around.

In this deserted forest, fear fills his eyes.
The old man smiles.

OLD MAN
Son Ghasi, drink some water.
You must be tired.
The sun is harsh, the air heavy.
Your body is soaked in sweat.
He offers the gourd.
Ghasi drinks silently, as if he has been thirsty for lifetimes.
After a moment, he stops.

OLD MAN (affectionately)
You are very dear, my son Ghasi.
Ghasi looks astonished.

GHASI
How do you know my name?
Who are you?
What are you doing in this forest?
You seem like a saint.
And this water—
it feels like my hunger and thirst of many lives are gone.
Ghasi folds his hands in reverence.

OLD MAN
I know everything, Ghasi.

Since childhood, you have been troubled by inequality, caste, wealth, religious hypocrisy, and social evils.

Your heart is full of compassion for all beings.

But—

what are you doing?

Striking a helpless, voiceless tree with a sharp axe.

Can you imagine its pain?

It cannot speak—

but can you not feel it?

Life is equal in all—whether human, animal, ant, or this mighty sal tree.

He points at the wounded trunk.

OLD MAN

See how deeply you have cut it.

It trembles in agony.

He sprinkles water from his palm

onto the wounded spot.

Instantly—

The tree becomes whole again.

Ghasi is stunned.

He falls at the old man's feet.

GHASI (crying)

Forgive me, Baba.

The old man lifts him up.

OLD MAN

If you make a mistake,
correct it.
This sal tree stands straight
between earth and sky.
It absorbs natural and cosmic wisdom
throughout its life.
It must be protected, not destroyed.
You too—
stand straight like this tree,
rise high—
so you may attain true knowledge.
With these words—
The old man vanishes instantly.
Ghasi stands frozen,
unable to comprehend.

FADE OUT.

SCENE 2

🌿 दृश्य 2 (HINDI)

EXT. घासी दास का घर — संध्या — वर्ष 1774

एक साधारण खपरैल का घर।
मिट्टी की दीवारें।
गरीब किसान परिवार की सादगी।
सोनाखान के जंगल से थका हुआ
घासी दास घर पहुँचता है।

INT. घर — रात
घासी भोजन करता है।
पर उसका मन कहीं और है।
वह सोने के लिए लेटता है।

INT. घर — आधी रात
घासी करवट बदलता है।
बार-बार।
उसकी आँखों में नींद नहीं।
उसके सामने—
साल का वृक्ष,
कट का निशान,
और बूढ़े आदमी का चेहरा।
उनकी आवाज़ कानों में गूँजती है—
“हर प्राणी में जीवन समान है...”

पानी का स्वाद
अब भी उसके होठों पर है।
अचानक—
घासी के पूरे शरीर में एक अलग तरह की ऊर्जा दौड़ जाती है।
वह उठकर बैठ जाता है।
उसका दिल तेज़ धड़क रहा है।

घासी (स्वगत)
मैं उन्हें फिर देखना चाहता हूँ...
मुझे उनसे मिलना ही होगा...
रात भर उसकी व्याकुलता बढ़ती जाती है।

🌄 अगली सुबह

EXT. गाँव से सोनाखान जंगल की ओर जाने वाला रास्ता — सुबह

घासी दास नंगे पाँव जंगल की ओर चल पड़ता है।

🌲 EXT. सोनाखान का घनघोर जंगल — दिन

जंगल इतना घना कि दिन में भी अँधेरा।
पगडंडी सँकरी।
चारों ओर— बाघ, तेंदुआ, लकड़बग्घा, विशाल हाथी, सियार, सोनकुत्ता, नीलगाय, वनभैंसा, अजगर और विषैले साँपों की उपस्थिति।
हर कदम पर खतरा।
कहीं—
झाड़ियों में हलचल।
कहीं—
किसी जानवर की गुर्राहट।
घासी का शरीर काँपता है।

पर उसकी आँखों में लक्ष्य है।

घासी (स्वगत)
मुझे उनसे मिलना है...
उसी बूढ़े बाबा से...
चिड़ियों की चहचहाहट
मन को मोहती है।
लेकिन—
अचानक झाड़ियों से
किसी जानवर की आवाज़।
घासी ठिठक जाता है।
उसकी साँस तेज़।

समय बीतता है।
सुबह से
दोपहर हो जाती है।

घासी के तलवों में
काँटे चुभते हैं।
काँटेदार झाड़ियाँ
उसके शरीर को चीरती हैं।
भूख-प्यास से
गला सूखने लगता है।

घासी (टूटती आवाज़ में)
अब क्या करूँ...?
अचानक—
वह ज़ोर से आवाज़ लगाता है।

घासी (चिल्लाते हुए)
गुरुदेव!
सदगुरु!
कहाँ हो आप?
मुझे आपसे मिलना है!
मुझे दर्शन दो!
उसकी आवाज़
जंगल में गूँजती है।
वह भटकता हुआ
एक विशाल चट्टान के पास पहुँचता है।

EXT. विशाल चट्टान — संध्या

घासी चट्टान पर चढ़ता है।
आसमान में
सूरज ढलने लगता है।

घासी (पूरी ताक़त से)
गुरुजी!
कहाँ हो आप?
हे सदगुरु!
मुझे रास्ता दिखाओ!

अचानक—
चट्टान के भीतर से
तेज़ प्रकाश फूटता है।
प्रकाश के बीच—
सफ़ेद वस्त्र,
घने सफ़ेद बाल और दाढ़ी।

एक हाथ में तुमा,
दूसरे में डंडा।
वही बूढ़ा आदमी
धीरे-धीरे आकार लेता है।

बूढ़ा आदमी (मुस्कुराते हुए)
क्या हुआ बेटा घासी?
रात भर सो नहीं पाए?
भूखे-प्यासे
मुझसे मिलने आ गए?
घासी रो पड़ता है।
वह दौड़कर
उनके चरण पकड़ लेता है।

घासी (रोते हुए)
गुरुजी...
मुझे सब जानना है...

बूढ़ा आदमी
अत्यंत कोमल स्वर में—
घासी के कंधों को पकड़कर
उसे उठाता है।

बूढ़ा आदमी
उठो बेटा।
क्या जानना चाहते हो?

घासी (व्याकुलता से)

मुझे केवल सत्य जानना है।
क्या ऊँच-नीच, जाति-पाँति,
छुआछूत, अमीरी-गरीबी
के आधार पर ईश्वर मिलता है?
क्या ईश्वर सबके लिए समान नहीं है?
अगर ऐसा है, तो फिर यह भेदभाव क्यों?

अचानक—
बूढ़ा आदमी
क्षण भर में
घासी के समान
हट्टा-कट्टा नवयुवक बन जाता है।

युवा रूप में गुरु घासी, तुम मुझे मित्र, गुरु, भाई या जो भी नाम चाहो, उसी नाम से पुकार सकते हो।
मैं वही रहूँगा।
कुछ समय पहले मैं बूढ़ा था, अब तुम्हारी उम्र का हूँ।
घासी विस्मय से देखता है।

घासी
आप जो भी हैं,
मेरे सतगुरु स्वरूप सत्पुरुष ही हैं।
कृपा करके
मुझे सत्य का मार्ग दिखाइए।

सतपुरुष
थोड़ा और धैर्य रखो घासी।
सात दिन बाद पूर्णिमा है।

अपने परिवार से अनुमति लेकर आना।
अब संध्या हो चुकी है।

सतपुरुष
घासी के कंधे पर हाथ रखते हैं।
एक क्षण में—
घासी जंगल के बाहर गाँव के रास्ते पर खड़ा होता है।

सतपुरूष (दूर से)
यहाँ से आधा कोस ही है।
घर जाओ।
चिंता मत करो।
घासी स्तब्ध।

घासी (स्वगत)
एक पल में
इस भयानक जंगल से बाहर...?

सतपुरूष (गूंजती आवाज़)
सात दिन बाद
यहीं मिलूँगा, घासी।
सदगुरु अदृश्य हो जाते हैं।
घासी आश्चर्य से खुली आँखों से देखता रह जाता है।

FADE OUT.

🌍 SCENE 2 (ENGLISH)

EXT. GHASI DAS' HOUSE
EVENING
YEAR 1774

A small mud house with a tiled roof.

A poor farmer's dwelling.

Ghasi Das returns from the forest.

INT. HOUSE – NIGHT

He eats quietly.

His mind is elsewhere.

He lies down.

INT. HOUSE – MIDNIGHT

Ghasi turns restlessly.

The old man's face.

The wounded tree.

The echoing words.

The taste of water still lingers.

A strange energy surges through his body.

He sits up, breathless.

GHASI (V.O.)

I must meet him again...

🌄 MORNING

EXT. PATH TO SONAKHAN FOREST

Ghasi walks barefoot toward the forest.

🌲 EXT. DENSE FOREST — DAY

Dark even in daylight.
Narrow trails.
The presence of
tigers, leopards, hyenas,
elephants, jackals,
wild boars, nilgai,
pythons, and venomous snakes.
Every step is danger.
Birdsong soothes the mind—
animal growls freeze the soul.

Time passes.
Morning becomes noon.
Thorns pierce his feet.
Thick bushes tear his skin.
Hunger and thirst overwhelm him.

GHASI (desperate)
What should I do now…?
He shouts.

GHASI

Gurudev!

Satguru!

Where are you?

Give me your darshan!

His voice echoes.

He reaches a giant rock formation.

EXT. GIANT ROCK — EVENING

Standing atop the rock—

A sudden blinding light.

The old man emerges.

OLD MAN

What happened, Ghasi?

Did you not sleep?

Hungry and thirsty you came searching for me?

Ghasi collapses at his feet.

GHASI

I want to know the truth!

The old man gently lifts him.

OLD MAN

What do you wish to know?

GHASI

Does God belong only to the rich, the high caste, the powerful?

Is God not equal for all?

The old man transforms into a strong young man.

Satpurush (YOUNG FORM)

Call me friend, brother, or guru.

I remain the same.

GHASI

You are my satpurush.

Show me the path of truth.

SATPURUSH

Wait until the full moon.

Come after seven days.

With a touch—

Ghasi stands outside the forest.

Satpurush (ECHOING)

Go home, Ghasi.

We shall meet again.

Satguru disappears.

Ghasi stands in awe.

FADE OUT.

SCENE 3

🌕 दृश्य 3 (HINDI)

EXT. सोनाखान जंगल — छाता पहाड़ का शिखर
संध्या 6 बजे
वर्ष 1774

छाता पहाड़ के शिखर पर एक विशाल चट्टान।
उस पर सदगुरु और घासी दास आमने-सामने सुखासन मुद्रा में बैठे हैं।
नीचे—
पूरा सोनाखान का जंगल।
अंधकारमय।
भयानक।
असीम।
दूर कहीं—
हाथियों की चिंघाड़।
शेर और बाघ की दहाड़।
सियारों की “हुआँ-हुआँ”।
पूरा जंगल भय से काँपता हुआ प्रतीत होता है।
धीरे-धीरे—
पक्षियों की चहचहाहट वातावरण को थोड़ा शांत करती है।
आकाश में—
पूर्णिमा का विशाल गोल चंद्रमा।
आज का चाँद
कुछ अधिक उज्ज्वल,
कुछ अधिक समीप प्रतीत हो रहा है।

ऐसा लगता है—
मानो इस जंगल में आज
केवल तीन साक्षी उपस्थित हों—
सतपुरुष,
घासी दास,
और यह पूर्णिमा का चंद्रमा।
मानो चंद्रमा
सतपुरूष और घासी दास के बीच होने वाले संवाद को
सुनने के लिए
धरती के सबसे निकट आ गया हो।

कुछ समय तक
दोनों मौन हैं।
आँखें बंद।
सतपुरूष का आज का रूप—
अत्यंत वृद्ध।
लंबे, घने, सफ़ेद बाल।
छाती तक आती सफ़ेद दाढ़ी।
चारों ओर
प्राकृतिक फूलों की दिव्य सुगंध।
पूर्णिमा की दूधिया रोशनी
पूरे दृश्य को आलौकिक बना देती है।
ऐसा लगता है—
मानो जन्म-जन्मांतरों का बंधन
आज खुल रहा हो।
घासी दास के
करोड़ों जन्मों के पुण्य
आज फलित हो रहे हों।

समय
एक पल के लिए
थम गया हो।

सतपुरुष
अपने तुंबे से पानी निकालते हैं।
मन ही मन
कुछ मंत्रों का जप करते हैं।
फिर—
एक झटके के साथ
घासी दास के पूरे शरीर पर
पानी का छींटा मारते हैं।
क्षण भर में—
घासी दास के शरीर पर
एक नया, स्वच्छ, श्वेत वस्त्र प्रकट हो जाता है।
घासी दास
अब भी ध्यानमुद्रा में हैं।
आँखें बंद।

सतपुरूष
अपना दंड हाथ में लेते हैं।
पूर्णिमा के चंद्रमा की ओर देखते हुए
चंद्रमा के समान एक गोलाकार
अपने दंड से आकाश में अंकित करते हैं।
सात बार
मंत्रोच्चार करते हैं—
सतपुरूष (मंत्रोच्चार)
"पूनम चाँद साक्षी भए,

पूरण माला दे।
जैसी ऊर्जा शीतल तेरी,
वैसी ही मन दे।
पूरण तेरी चमके काया
वैसी ही कर दे।
युगों-युगों से तेरी प्रभा
वैसी कीर्ति दे।
पूरण चंदा! पूनम चंदा!
जनम करम पूरन कर दे!"
मंत्र पूर्ण होते ही—
सतपुरूष के दंड पर
तुलसी की माला प्रकट होती है।

सतपुरुष
माला को उठाकर
घासी दास के गले में धारण कराते हैं।
जैसे ही माला गले में पड़ती है—
घासी दास के भीतर
आत्मा और शरीर दोनों में
दिव्य प्रकाश फूट पड़ता है।
मानो
लाखों जन्मों से सुप्त
आत्मिक ज्योति
आज जाग उठी हो।
घासी दास
ऐसी अनुभूति
पहले कभी नहीं किए हैं?
सतपुरूष (कोमल स्वर में)

बेटा घासी दास...
अपनी आँखें खोलो।
वह स्वर
फूलों की खुशबू जैसा है।
घासी को लगता है—
उसके कानों ने
ऐसा मधुर शब्द
पहली बार सुना है।

घासी दास
धीरे-धीरे
अपनी आँखें खोलते हैं।
आँख खुलते ही—
सामने
सतपुरूष का
मंद-मंद मुस्कराता
दिव्य चेहरा।
और उनके पीछे—
पूर्णिमा का
प्रकाश से नहाया
विशाल चंद्रमा।
पूरे जंगल में
एक अद्‌भुत सुगंध फैल जाती है।
हिंसक पशु
शांत होकर
निद्रा में चले जाते हैं।

घासी दास की दृष्टि—

अद्‌भुत रूप से स्वच्छ।
दुनिया उन्हें पहली बार इतनी स्पष्ट दिखाई देती है।
शरीर का रोम-रोम जागृत हो उठा है।
ऊर्जा हर श्वास में प्रवाहित है।

सतपुरुष
खड़े होते हैं।
सतपुरुष
खड़े हो जाओ, बेटा।
अब मैं तुम्हें
एक शारीरिक अभ्यास सिखाऊँगा।
तुम मेरे साथ-साथ
करके दिखाना।
घासी दास
भी खड़े हो जाते हैं।

सतपुरूष (अभ्यास समझाते हुए)
अपने मन को
पैर की प्रत्येक उँगली की अनुभूति से जोड़ो।
पैर के नाखून से
कमर तक
शरीर के प्रत्येक भाग को
धीरे-धीरे महसूस करो।
मन को शरीर से जोड़ो, बेटा।
और अनुभूति करते रहो।
यह अभ्यास
हर बारह घंटे के अंतराल में करना है।
कमर से

पैर की उँगलियों तक
शरीर की क्रियाशीलता को
जागृत करो।

सतपुरुष
साथ-साथ अभ्यास करते हैं।

सतपुरुष
मैंने तुम्हें
मन और शरीर को जोड़ने का योग सिखाया है।
इसे प्रतिदिन करना।
इससे शरीर ऊर्जावान रहेगा
और मन
शरीर में ही संयमित रहेगा।
आज इतना ही।
आगे यह अभ्यास
अनवरत चलेगा।
इतना कहते ही—
सतपुरुष
अंतरध्यान में लीन हो जाते हैं।
घासी दास
पूर्णिमा की रोशनी में
नव-जन्मे साधक की भाँति
स्थिर खड़े हैं।

FADE OUT.

SCENE 3 (ENGLISH)

EXT. SONAKHAN FOREST — CHHATA PAHAD SUMMIT
6 PM
YEAR 1774

At the peak of Chhata Pahad,
a massive rock platform.
Satpurush and Ghasi Das
sit facing each other in meditation.
Below—
the entire Sonakhan forest.
Dark.
Vast.
Terrifying.
Elephants trumpet.
Tigers and lions roar.
Jackals howl.
Fear fills the forest.
Slowly—
birds begin to chirp, softening the atmosphere.
In the sky—
A huge full-moon,
brighter and closer than ever.
It feels as if
only three beings exist—
Satpurush

Ghasi Das,
and the Full Moon.
As if the moon itself
has descended closer
to listen to their sacred dialogue.

Both remain silent.
Eyes closed.
Satpurush appears aged—
long white hair,
beard touching his chest.
A divine fragrance of flowers
fills the air.
Moonlight bathes everything in silver.
It feels like
lifetimes of bondage
are breaking free.
Time itself
seems to pause.

Satpurush takes water from his gourd, chants silently, and suddenly sprinkles it over Ghasi Das.
Instantly—
Ghasi Das is adorned in a pure white garment.
He remains in meditation.

Satpurush raises his staff, draws a circular form mirroring the moon, and chants seven times—

Satpurush (CHANTING)
"O Full Moon, witness be,
Grant the sacred garland to me.
As your energy is calm and pure,
Let the same in his mind endure.
As your glow fills the sky so bright,
Let his body shine in sacred light.
From ages past your rays extend,
Let such grace on him descend.
O Full Moon! O Sacred Moon!
May every karma, every birth be complete."
A Tulsi garland appears on the staff.
Satpurush places it
around Ghasi Das's neck.
A divine light erupts within him.
A spiritual awakening beyond time.

Satpurush (softly)
Ghasi Das...
Open your eyes.
Ghasi opens them slowly.
Before him—
Satpurush's serene smile, and behind him— the glowing Full Moon.
The forest fills with fragrance.
Wild animals fall into peaceful sleep.
Ghasi sees the world
clearer than ever before.

Every cell awakens.

Satpurush stands.
SATPURUSH
Stand up, my son.
I will now teach you
a bodily discipline.
Ghasi stands.

SATPURUSH
Feel each toe of your feet.
From nails to waist,
experience every part.
Unite mind and body.
Practice every twelve hours.
This is the yoga
of connecting mind and body.
Practice daily.
Your body will stay energized,
your mind controlled.
For today—
this is enough.
Satputuah enters deep meditation.
Ghasi stands transformed.

FADE OUT.

SCENE 4

🌄 दृश्य 4 (HINDI)

EXT. सोनाखान का जंगल — छाता पहाड़ का शिखर —
विशाल चट्टान
सुबह 5 बजे
वर्ष 1774

भोर की हल्की रोशनी।
कोहरे की पतली परतें।
चारों ओर सन्नाटा।
विशाल चट्टान के ऊपर
सतपुरूष बाबा और घासी दास
सामने-सामने बैठे हैं।
पूरा जंगल
गहरी निःशब्दता में डूबा हुआ।
केवल
पत्तों की सरसराहट
और दूर-दूर से आती पक्षियों की मध्यम चहचहाहट।

सतपुरूष (शांत, स्थिर स्वर में निर्देश देते हुए)
घासी...
कमर से सिर तक
अपने प्रत्येक अंग को
अपनी अनुभूति में लाओ।
कमर के चारों ओर—

भीतर और बाहर—
मन को टिकाओ।
अब—
पीठ,
पेट,
पीठ के भीतर और बाहर के भागों को
मन से महसूस करो।
छाती और छाती के पीछे के
भीतरी और बाहरी भागों पर
अपना ध्यान लगाओ।
छाती के भीतर—
हृदय,
फेफड़े,
यकृत—
सभी आंतरिक अंगों की
अनुभूति करो।

घासी दास
आँखें बंद किए
हर निर्देश का पालन करता है।

सतपुरूष
अब—
दोनों हाथों की दसों उँगलियों पर मन को ले जाओ।
कलाई, कोहनी, कंधे—
फिर गले के भीतरी और बाहरी भाग को अनुभव करो।
अब—
गर्दन से ऊपर सिर के समस्त भाग को अपने अहसास में लो।

कान, नाक, आँखें, मुख—
भीतर और बाहर
सब पर ध्यान लगाओ।

घासी दास का चेहरा
पूर्णतः शांत।

सतपुरूष
अब—
अपने मस्तिष्क के भीतर मन को ले जाओ।
भीतरी और बाहरी दोनों भागों को महसूस करो।
फिर—
पुनः पैर के नाखून से सिर तक हर अंग पर मन को घुमाते हुए अनुभूति करो।
कानों से सूक्ष्म ध्वनियों को सुनने का प्रयास करो।
मन को सूक्ष्म ध्वनि में स्थिर करो।

सतपुरूष पद्मासन में बैठे-बैठे योगिक ध्यान का अभ्यास करा रहे हैं।
घासी दास पूरी तन्मयता से अनुभव कर रहा है।
कुछ क्षण—
पूर्ण मौन।

सतपुरूष
घासी बेटा...
यह योग शरीर और मन का योग है।
इस योग से मन बाहरी संसार में भटकता नहीं।
मन
शरीर में ही रम जाता है।
जिससे—

शरीर के पाँचों तत्वों का संतुलन बना रहता है।

सतपुरूष (आगे समझाते हुए)
जब मन
बाहरी दुनिया में भटकता है,
तो शारीरिक और मानसिक
ऊर्जा का क्षय होता है।
लेकिन—
यदि मन को
बाहरी संसार से मोड़कर
शरीर में स्थिर कर दो,
तो ऊर्जा का संरक्षण होता है।
यही ऊर्जा
समस्त उन्नति का आधार बनती है।
शरीर और मन को
बल मिलता है—
और तभी
आध्यात्मिक यात्रा आगे बढ़ती है।

सतपुरुष
अपने स्थान पर
खड़े हो जाते हैं।
हाथ के इशारे से
घासी दास को भी
खड़े होने का संकेत देते हैं।
घासी दास
उठ खड़ा होता है।

सतपुरुष
अब—
शरीर और मन के बीच
सेतु बनाने वाला
श्वास-अभ्यास सीखो।

EXT. चट्टान — निरंतर

दोनों खड़े।

सतपुरूष (व्यावहारिक निर्देश)
पैर की उँगलियों को
आगे-पीछे,
दाएँ-बाएँ मोड़ो।
उन्हें
घुमाओ।
श्वास को खींचकर
फेफड़ों में रोको,
फिर
धीरे-धीरे छोड़ो।

क्रमशः—
टखने,
घुटने,
जांघ,
कूल्हे का जोड़,
कमर—
फिर—
हाथों की उँगलियाँ,

कलाई,
कोहनी,
कंधे,
गर्दन—
सभी का अभ्यास।

सतपुरुष
जिस अंग का अभ्यास हो—
पूरा मन
उसी में लगाओ।
ताकत लगाते समय
श्वास बाहर छोड़ो।
आराम की अवस्था में
श्वास भीतर भरो।

अब—
सतपुरूष (तीव्र अभ्यास दिखाते हुए)
शरीर के भीतर के अंगों को
स्वस्थ रखने के लिए—
दोनों हाथ
सामने सीधा करो।
पूरी ताकत से
झटके के साथ
अपनी ओर खींचो
और उसी क्षण
श्वास बाहर छोड़ो।

फिर—
दोनों हाथ

दाएँ-बाएँ फैलाकर
झटके से
अपनी ओर खींचो
और श्वास छोड़ो।

फिर—
दोनों हाथ
ऊपर उठाकर
झटके से
खींचते हुए
श्वास बाहर निकालो।

फिर—
हाथों को
पीठ के पीछे
नीचे की ओर रखकर
झटके के साथ
अपनी ओर खींचो
और श्वास बाहर छोड़ो।

सतपुरुष
इस अभ्यास को
त्रि-तल योग कहते हैं।
यह—
शरीर,
श्वास
और मन—
तीनों का
एक साथ योग है।

इससे
तीनों
नियंत्रण में रहते हैं।

सतपुरुष
अब, घासी—
सुखासन में बैठो।
सतपुरुष
अपने आसन में बैठ जाते हैं।
घासी दास
भी सामने बैठ जाता है।

सतपुरूष (अत्यंत कोमल वाणी में)
घासी बेटा...
यदि
अधार्मिक उन्नति से निकलकर
धार्मिक-आध्यात्मिक उन्नति की ओर
जाना है—
तो इस अभ्यास से
गुज़रना आवश्यक है।
इसे
पंथ कहा जाता है।
और
इस पंथ पर चलने वाले पंथी कहलाते हैं।

आज का प्रातःकालीन अभ्यास सम्पूर्ण हुआ।
अब—
जंगल से मीठे, पके फल इकट्ठे करो।
भोजन करो और विश्राम करो।

इतना कहते ही—
सतपुरूष बाबा
तेज प्रकाश-कणों में
परिवर्तित हो जाते हैं।
वे धीरे-धीरे आकाश में विलीन हो जाते हैं।
घासी दास
निश्चल बैठा
उस दिव्य दृश्य को देखता रहता है।

FADE OUT.

🌍 SCENE 4 (ENGLISH)

EXT. SONAKHAN FOREST – CHHATA PAHAD SUMMIT – MASSIVE ROCK 5 AM YEAR 1774

Soft dawn light.
Mist in the air.
Deep silence.
On the massive rock,
Satpurush Baba and Ghasi Das
sit facing each other.
The forest is still.

Satpurush (calm, guiding voice)
Ghasi...

Bring your awareness
from the waist to the head.
Feel the waist—
inside and outside.
Move the mind to the back,
the stomach,
inner and outer layers.
Feel the chest—
front and back.
Now feel the inner organs—
heart, lungs, liver.

Ghasi follows with closed eyes.

SATPURUSH
Move awareness to
all ten fingers.
Wrists, elbows, shoulders.
Feel the throat—
inside and outside.
Move to the head.
Ears, nose, eyes, mouth—
inside and out.

SATPURUSH
Now move the mind
inside the brain.
Feel inner and outer regions.

Again—
scan from toes to head.
Listen to subtle sounds.
Let the mind rest in subtle vibration.

Silence.

SATPURUSH
This is the yoga
of body and mind.
When the mind stays within the body, the five elements remain balanced.
When the mind wanders outward, energy is lost.
When it turns inward, energy is preserved.
This energy fuels spiritual progress.

SATPURUSH stands.
Signals Ghasi to stand.

SATPURUSH
Now learn the breath—
the bridge between body and mind.

They practice movements.
SATPURUSH
Bend and rotate the toes.
Hold the breath, release slowly.
Practice ankles, knees, hips, waist.

Fingers, wrists, elbows, shoulders, neck.
Focus the mind on each part.
Exhale with effort, inhale with relaxation.

SATPURUSH
Extend both arms forward,
pull sharply while exhaling.
Repeat sideways.
Repeat upward.
Repeat behind the back.
This is Tri-Tal Yoga—
union of body, breath, and mind.

SATPURUSH sits.

SATPURUSH (gently)
To move from material progress to spiritual elevation, this path is essential.
This is called Panth.
Those who follow it are Panthis.
Today's practice is complete.
Collect ripe fruits, eat, and rest.

SATPURUSH dissolves into radiant particles and merges into the sky.
Ghasi remains seated, transformed.

FADE OUT.

SCENE ~ 5

🎬 दृश्य 5 — "सुषुम्ना का जागरण"
(Scene 5 – Awakening of Sushumna)

🌿 हिंदी स्क्रीनप्ले

EXT. सोनाखान का जंगल – छाता पहाड़ का शिखर – विशाल चट्टान – संध्या
YEAR: 1774
TIME: शाम 6 बजे

सूर्य अस्त हो रहा है।
आकाश के रंग केसरिया से नीले में बदल रहे हैं।
विशाल चट्टान के ऊपर
नवयुवक घासी दास पद्मासन में बैठे हैं।
लंबे उलझे बाल,
घनी दाढ़ी,
मुखमंडल पर एक अलौकिक तेज।
पूरा शरीर स्थिर—
केवल श्वास की सूक्ष्म गति।
जंगल निःशब्द है।
अचानक—
एक तेज प्रकाश-पुंज हवा में प्रकट होता है।
प्रकाश धीरे-धीरे सघन होता है।
प्रकाश से
सतपुरूष बाबा प्रकट होते हैं—

अत्यंत वृद्ध,
सफेद लंबे बाल,
छाती तक आती दाढ़ी,
आँखों में अनंत करुणा।
घासी दास अब भी ध्यानमग्न हैं।
उन्हें कुछ भी भान नहीं।
सतपुरूष बाबा उनके सामने
सुखासन में बैठ जाते हैं।
कुछ क्षण—
पूर्ण मौन।
फिर—सतपुरूष बाबा (कोमल स्वर में)
"बेटा घासी दास...
मैं आ गया हूँ।
आँखें खोलो।"
घासी दास का ध्यान टूटता है।
वे धीरे-धीरे आँखें खोलते हैं।
सामने सतपुरूष बाबा।
घासी दास तुरंत उठकर
हाथ जोड़ते हैं,
सतपुरूष के चरणों में शीश झुकाते हैं।
घासी दास
"प्रणाम गुरुदेव।"
सतपुरूष बाबा आशीर्वाद देते हैं।
सतपुरूष बाबा
"बैठो बेटा।"
घासी दास अपने स्थान पर बैठ जाते हैं।
सतपुरूष बाबा
"आज प्रातः जो अभ्यास बताया था—

उसे पुनः कर के दिखाओ।"
घासी दास खड़े होते हैं।
वे एक-एक कर
पंथी अभ्यास करते हैं—
शरीर,
श्वास,
और मन—
तीनों पूर्ण समन्वय में।
हर गति में नियंत्रण,
हर श्वास में चेतना।
सतपुरूष बाबा ध्यान से देखते हैं।
अभ्यास पूर्ण।
सतपुरूष बाबा (प्रसन्न होकर)
"बहुत सुंदर, बेटा।
यह अभ्यास—
पंथी का प्रदर्शन है।
इसीलिए करने वाले 'पंथी' कहलाते हैं।"
वे संकेत करते हैं।
सतपुरूष बाबा
"अब आसन पर बैठो।"
दोनों आमने-सामने बैठ जाते हैं।
सतपुरूष बाबा (गंभीर स्वर में)
**"पंथी अभ्यास से
दोनों श्वास समान हो जाती हैं।
दाहिने नासाछिद्र से चलने वाली श्वास—
सूर्य स्वर कहलाती है।
यह अग्नि है, शक्ति है।" **
सतपुरूष बाबा

“बाएँ नासाछिद्र की श्वास—
चंद्र स्वर है।
शीतल, जल-तत्त्व।”
सतपुरूष बाबा
“जब दोनों समान चलें—
तो सुषुम्ना जागृत होती है।”
घासी दास मंत्रमुग्ध सुन रहे हैं।
सतपुरूष बाबा
“सुषुम्ना के जागरण के बाद
ध्यान आरंभ होता है।”
वे निर्देश देते हैं
सतपुरूष बाबा
“रीढ़ को सीधा रखो।
मन को रीढ़ के भीतर ले जाओ।”
घासी दास आँखें बंद करते हैं।
सतपुरूष बाबा
“कमर से सिर तक
सुषुम्ना को अनुभव करो।”
धीमी हवा बहती है।
सतपुरूष बाबा
“अब दाहिने से बाएँ
वृत्त की कल्पना करो...
फिर बाएँ से दाहिने।”
घासी दास के चेहरे पर
सूक्ष्म कंपन।
सतपुरूष बाबा
“इसे ही
समुद्र-मंथन कहा जाता है।”

अचानक—
घासी दास के शरीर से
हल्का प्रकाश फूटता है।
कुछ क्षण बाद—
सतपुरूष बाबा
"इस अभ्यास को
निरंतर करना।
तभी आगे बढ़ोगे।"
तेज प्रकाश।
सतपुरूष बाबा
प्रकाश में विलीन हो जाते हैं।
प्रकाश कणों में बदलकर
आकाश में समा जाता है।
घासी दास
ध्यान में स्थिर बैठे हैं।

FADE OUT.

🌍 **ENGLISH SCREENPLAY**

EXT. SONAKHAN FOREST – CHHATA HILL PEAK – GIANT ROCK – EVENING
YEAR: 1774
TIME: 6:00 PM

The sun sinks behind the forest.
The sky shifts from amber to deep blue.
On a massive rock sits

YOUNG GHASI DAS,
in PADMASANA.
Long flowing hair.
Thick beard.
A luminous glow on his face.
The body still—
only breath moves.
The forest is silent.
Suddenly—
A SPHERE OF LIGHT appears midair.
The light condenses.
From it emerges
SATPURUSH BABA—
ancient, radiant, timeless.
Ghasi Das remains in deep meditation.
SATPURUSH BABA sits before him
in SUKHASANA.
A long silence.
SATPURUSH BABA (softly)
"My child, Ghasi Das...
I have arrived.
Open your eyes."
Ghasi Das slowly opens his eyes.
He rises, folds his hands,
bows at the SATPURUSH's feet.
GHASI DAS
"Pranam, Gurudev."

Sadguru blesses him.
SATPURUSH BABA
"Sit."
Ghasi Das sits.
SATPURUSH BABA
"Show me the practice
taught this morning."
Ghasi Das stands and performs
the Panthi practice—
Body, breath, and mind
in perfect harmony.
Each movement precise.
Each breath aware.
The practice ends.
SATPURUSH BABA (pleased)
"Excellent.
This is Panthi discipline.
Those who practice it
are called Panthis."
He gestures.
SATPURUSH BABA
"Now sit."
They face each other.
SATPURUSH BABA
**"Panthi practice balances both breaths.
Right nostril—
Surya breath, fire, power.

Left nostril—
Chandra breath, water, calm."**
SATPURUSH BABA
"When both flow together—
Sushumna awakens."
Ghasi Das listens intently.
SATPURUSH BABA
"Only then does true meditation begin."
SATPURUSH BABA
"Keep the spine erect.
Take the mind inside the spine."
Ghasi Das closes his eyes.
SATPURUSH BABA
"Feel the channel
from waist to crown."
A gentle wind flows.
SATPURUSH BABA
"Rotate awareness—
right to left...
left to right."
A subtle vibration appears on Ghasi Das's face.
SATPURUSH BABA
"This is called
the Churning of the Ocean."
A faint glow radiates from Ghasi Das.
SATPURUSH BABA
"Practice this regularly.

Only then shall you proceed."
A burst of light.
SATPURUSH Baba dissolves into radiance,
merging with the sky.
Ghasi Das remains motionless—
absorbed in deep meditation.

FADE OUT.

SCENE 6

🎬 दृश्य 6 — "रीढ़ और ब्रह्मज्ञान का रहस्य"
(Scene 6 – The Secret of the Spine and Cosmic Knowledge)

🌿 हिंदी

EXT. सोनाखान का जंगल – छाता पहाड़ का शिखर – विशाल चट्टान – भोर
YEAR: 1774
TIME: सुबह 5 बजे (सूर्योदय से ठीक पहले)

पूर्व दिशा में
लालिमा से भरा आकाश।
सूर्य अभी क्षितिज से नीचे है।
चारों ओर—
चिड़ियों की चहचहाहट,
जंगल के भीतर से आती
भारी, रोंगटे खड़े कर देने वाली
हिंसक पशुओं की आवाज़ें।
बीच-बीच में
कोयल और मोर का मधुर गीत।
प्रकृति भय और सौंदर्य—
दोनों का संगम है।
विशाल चट्टान के ऊपर
घासी दास
पद्मासन लगाए

ध्यान मुद्रा में बैठे हैं।
आँखें बंद।
श्वास-प्रश्वास नियंत्रित।
मन—सतपुरुष द्वारा बताए गए
योगाभ्यास में लीन।
धीरे-धीरे—
एक प्रकाश पुंज प्रकट होता है।
प्रकाश सघन होता है।
उसी प्रकाश से
सतपुरुष
अपने वही वृद्ध, दिव्य रूप में
प्रकट होते हैं।
घासी दास आँखें खोलते हैं।
वे तुरंत
दंडवत प्रणाम करते हैं।
घासी दास
(विनम्र स्वर में)
"प्रणाम सतपुरुष।"
सतपुरुष
आशीर्वाद मुद्रा बनाते हैं।
सतपुरुष
"कृति को प्राप्त करो, पुत्र।"
वे अपने आसन पर बैठ जाते हैं।
कुछ क्षण मौन।
जंगल की आवाज़ें
मानो रुक गई हों।
सतपुरुष
"बेटा घासी दास,

आज मैं तुम्हें
आगे के योगाभ्यास का
गूढ़ रहस्य बतलाता हूँ।"
घासी दास
पूर्ण एकाग्रता से सुनते हैं।
सतपुरुष
"रीढ़ की हड्डी को
जागृत करने का तरीका
समझाने से पहले
कुछ बातें समझना
अत्यंत आवश्यक है।"
सतपुरुष
धरती की ओर संकेत करते हैं।
सतपुरुष
"इस संसार में
जिस-जिस प्राणी की
रीढ़ की हड्डी
धरती की सतह से
जितने अंश पर
आकाश के साथ कोण बनाती है—
उसके अनुसार
उसकी बुद्धि
पूरे जीवनकाल में
विकसित रहती है।"
घासी दास का मुख गंभीर।
सतपुरुष
"जैसे बैल, गाय, बकरी, भेड़—
इनकी रीढ़

धरती से मात्र
तीन से पाँच अंश
ऊपर उठी होती है।"
सतपुरुष
"इसीलिए उनकी बुद्धि
तीन से पाँच प्रतिशत
विकसित होती है।"
सतपुरुष
हाथ ऊपर उठाते हैं।
सतपुरुष
"वानर और चिंपैंज़ी जाति—
इनकी रीढ़
बीस से पैंतीस अंश तक
आकाश की ओर उठी है।"
सतपुरुष
"इसीलिए उनकी बुद्धि
अन्य जीवों से अधिक
विकसित होती है।"
सतपुरुष
घासी दास की ओर देखते हैं।
सतपुरुष
"और मनुष्य को
कुदरत ने
नब्बे अंश पर
सीधा खड़े होने का
उपहार दिया है।"
एक क्षण मौन।
सतपुरुष

"इसीलिए मनुष्य
पूरे संसार में
सबसे अधिक बुद्धिमान
और विकसित मस्तिष्क का
मालिक है।"
सतपुरुष
"बस थोड़ा-सा प्रयत्न करके
इसे और अधिक
सक्रिय किया जा सकता है—
जिससे लौकिक
और पारलौकिक
दोनों प्रकार का
ज्ञान जाना जा सकता है।"
सतपुरुष
"आज मैं तुम्हें
यही रहस्य दे रहा हूँ,
बेटा घासी दास।"
घासी दास का ध्यान और गहरा।
सतपुरुष
"जिस दिन तुम
सरई वृक्ष को काट रहे थे—
मैंने तुम्हें क्यों रोका था?"
सतपुरुष
"उसका कारण
उस दिन भी बताया था,
पर आज
उसका विस्तार से
वर्णन कर रहा हूँ।"

सतपुरुष
“जो भी वृक्ष
नब्बे अंश में
सीधा होकर बढ़ता है—
वह स्वाभाविक रूप से
ब्रह्मांड में
अनवरत बहने वाले
ईश्वरीय ज्ञान को
ग्रहण करता रहता है।”
सतपुरुष
“उसमें संसार की
सबसे अधिक
सकारात्मक ऊर्जा
प्रवाहित होती है।”
सतपुरुष
“इसीलिए वह
पुण्य और पूजनीय होता है।”
सतपुरुष
“उसके आसपास होना भी
भाग्य से मिलता है—
चाहे वह
जिस रूप में हो।”
सतपुरुष
घासी दास की रीढ़ की ओर संकेत करते हैं।
सतपुरुष
“तुम भी
अपनी रीढ़ की हड्डी को
नब्बे अंश में

सीधा रखते हुए
सुषुमना नाड़ी को
सक्रिय करो।"?
सतपुरुष
"ताकि वह
ईश्वरीय ज्ञान को
ग्रहण करने के लिए
एक सक्षम यंत्र
के रूप में
कार्य कर सके।"
घासी दास
सिर झुकाकर सुनते हैं।
सतपुरुष
"हमारी रीढ़ में
मुख्य रूप से
पाँच ऐसे स्थान होते हैं—
जिन्हें जागृत करने से
ईश्वरीय ज्ञान
ग्रहण करने की
क्षमता आती है।"
सतपुरुष
"और दो स्थान
हमारे मस्तिष्क के ऊपर
आभा मंडल में होते हैं।"
सतपुरुष
"ये दो स्थान
शरीर के अंग में नहीं होते—
फिर भी

हमारी चेतना से
अप्रत्यक्ष रूप से
जुड़े रहते हैं।”
सतपुरुष
“इन सातों स्थानों को
सक्रिय करने के लिए
मैं तुम्हें
एकमात्र और
अकाट्य विधि का
योगाभ्यास कराऊँगा।”
सतपुरुष
धीरे स्वर में निर्देश देते हैं।
सतपुरुष
“बेटा घासी दास,
नाक से
पूरी ताकत के साथ
श्वास अंदर भरो।”
सतपुरुष
“और बहुत धीरे-धीरे
‘सा’ शब्द का
मन-ही-मन उच्चारण करते हुए
श्वास छोड़ो।”
घासी दास
अनुसरण करते हैं।
सतपुरुष
“जब ‘सा’ शब्द के साथ
श्वास बाहर (छोड़ते समय)जाती है—
जब वह श्वास बाहर की ओर (गति)जाती है,तब

एक बल
पीछे की ओर
लगता हुआ
शरीर से बाहर निकलता है।"
सतपुरुष
"उस विपरीत बल के
केंद्र स्थान को
पूरे मनोयोग से
महसूस करो।"
सतपुरुष
"जब उस केंद्र को
अनुभूति में ले लो—
तो उसे
बाएँ से दाएँ
गोलाकार एक चक्र की भांति घुमाने की
कल्पना करो।"?
सतपुरुष
"इस अभ्यास को
तब तक दोहराओ—
जब तक
रीढ़ की हड्डी के अंदर
उस स्थान की
स्पष्ट अनुभूति
होने न लगे।"?
सतपुरुष
"यह स्थान
रीढ़ के सबसे निचले
प्रथम भाग में होता है।"

सतपुरुष
"इसे
मूल कमल कहते हैं।"
सतपुरुष
इतना कहकर धीरे-धीरे अदृश्य हो जाते हैं।
प्रकाश कण आकाश में विलीन हो जाते हैं।
घासी दास गहरे ध्यान में स्थिर बैठे रहते हैं।

FADE OUT.

🎬 SCENE 6 — "THE SECRET OF THE SPINE AND COSMIC AWAKENING"

Title: Baba Guru Ghasi Das Ji
Year: 1774

EXT. SONAKHAN FOREST – CHHATA HILL PEAK – GIANT ROCK – PRE-DAWN
TIME: 5:00 A.M. – JUST BEFORE SUNRISE

The eastern sky is painted with a deep crimson glow.

The sun has not yet risen, but its presence is felt.

Birds chirp continuously.

From deep within the forest come heavy, spine-chilling roars of wild animals—

sounds that make the air tremble.

Between them flow the sweet, soothing calls of cuckoos and peacocks.

Fear and beauty coexist.

On the summit of CHHATA HILL,

atop a GIANT ROCK,

GHASI DAS, a young ascetic,

sits in PADMASANA, eyes closed,

immersed in deep meditation.

His breath is steady.

His mind is absorbed in the yogic practices taught by the SATPURUSH.

Suddenly—

A SPHERE OF DIVINE LIGHT appears in the air.

The light slowly condenses.

From it emerges the SATPURUSH,

taking the same ancient, aged form—

long white hair, flowing beard, radiant calm.

Ghasi Das opens his eyes.

He immediately falls flat in DANDAVAT PRANAM.

GHASI DAS

(with devotion)

Salutations, Satpurush.

The Satpurush raises his hand in blessing.

SATPURUSH

Receive the grace of realization, my child.

He sits calmly on his seat.

A sacred silence follows.

The forest sounds soften,

as if nature itself is listening.

SATPURUSH

Ghasi Das, today I shall reveal to you
the profound secret of the next stage of yogic practice.
Ghasi Das listens with absolute attention.
SATPURUSH
Before explaining how to awaken the spine,
it is essential that you understand
certain fundamental truths.
The Satpurush gestures toward the earth and sky.
SATPURUSH
In this universe,
the degree to which a living being's spine
rises from the surface of the earth
and aligns with the sky—
determines the level of intelligence
it develops throughout its lifetime.
Ghasi Das remains motionless, deeply focused.
SATPURUSH
Consider animals like oxen, cows, goats, and sheep.
SATPURUSH
Their spines rise only
three to five degrees
from the surface of the earth.
SATPURUSH
Therefore, their intelligence develops
only three to five percent.
The Satpurush slowly raises his hand higher.
SATPURUSH

Monkeys and chimpanzees—
their spines rise
twenty to thirty-five degrees
toward the sky.
SATPURUSH
That is why their intelligence
is more developed
than other animals.
He now looks directly at Ghasi Das.
SATPURUSH
But human beings—
A pause.
SATPURUSH
Nature has gifted humans the ability to stand at ninety degrees, perfectly upright.
SATPURUSH
That is why humans possess
the most advanced intellect
and the most developed brain
in the entire world.
The words echo through the silence.
SATPURUSH
With just a little effort, this intelligence can be activated further— allowing one to access both worldly and transcendental knowledge.
SATPURUSH
Today, Ghasi Das,
I am granting you this very secret.

Ghasi Das bows his head slightly.

SATPURUSH

Do you remember the day

you were cutting the Sarai tree?

SATPURUSH

Why did I stop you?

SATPURUSH

I explained the reason then—

but today I will explain it in depth.

The Satpurush's voice becomes firm yet gentle.

SATPURUSH

Any tree that grows

perfectly upright at ninety degrees

naturally absorbs

the divine knowledge

that flows continuously

through the universe.

SATPURUSH

Such a tree contains

the highest concentration

of positive cosmic energy.

SATPURUSH

That is why it becomes sacred and worthy of reverence.

SATPURUSH

Even being near such a tree is a matter of great fortune— in whatever form it exists.

He gestures toward Ghasi Das's spine.

SATPURUSH
You must also keep your spine
perfectly upright at ninety degrees
and activate the Sushumna Nadi.
SATPURUSH
Only then can your body become
a capable instrument
for receiving divine knowledge.
Ghasi Das listens, unmoving.

SATPURUSH
Within the human spine
there are five primary centers.
SATPURUSH
When these are awakened,
one becomes capable
of receiving divine wisdom.
SATPURUSH
Additionally, there are two centers
above the brain
in the aura field.
SATPURUSH
Though they are not physical organs,
they remain indirectly connected
to human consciousness.
SATPURUSH
To awaken all seven centers,

I will teach you
the only infallible method.
The Satpurush begins instructing gently.

SATPURUSH
Ghasi Das,
inhale deeply through your nose
with full strength.
SATPURUSH
Then exhale very slowly,
mentally chanting the sound
"SA".
Ghasi Das follows precisely.
SATPURUSH
As you exhale with the sound "SA,"
the breath moves outward—
SATPURUSH
—but simultaneously,
a force pulls backward
within the body.
SATPURUSH
You must feel this reverse force
with complete awareness.
SATPURUSH
When you perceive this center clearly,
mentally rotate it
in a circular motion

from left to right.
SATPURUSH
Repeat this practice
until the sensation
within the spine becomes unmistakable.
SATPURUSH
This point lies
at the lowest region of the spine.
SATPURUSH
It is known as the
MUL KAMAL
—the Root Lotus.
The Satpurush falls silent.
His form begins to dissolve.
Particles of light rise upward
and merge into the sky.
Ghasi Das remains seated,
motionless,
absorbed in deep meditation.
The forest breathes.

FADE OUT.

SCENE 7

दृश्य 7 — "मूल कमल का जागरण"

🌿 हिंदी

EXT. सोनाखान का घना जंगल – छाता पहाड़ का शिखर – विशाल चट्टान – संध्या (1774)

सूर्य अस्त हो रहा है।
आकाश के पश्चिमी क्षितिज पर सुनहरी लालिमा।
घने जंगल में गहरा सन्नाटा।
झींगुरों की आवाज़।
हवा में पत्तों की हल्की सरसराहट।

WIDE SHOT
छाता पहाड़ के शिखर पर
एक विशाल चट्टान।
उस पर
घासी दास
सुखासन मुद्रा में
शांत, स्थिर, नेत्र अर्धनिमीलित।
उनके सम्मुख
सतपुरुष
दिव्य आभा से युक्त।

CLOSE-UP – घासी दास का चेहरा
शांत श्वास-प्रश्वास।
मौन में डूबा ध्यान।

सतपुरूष (मधुर, गंभीर स्वर)
पुत्र घासी दास...
क्या तुमने
“सा” शब्द के ध्यानयुक्त श्वासों को
लयबद्धता और मन की एकाग्रता से
मूल कमल स्थान पर अभ्यास किया?
(क्षण भर रुककर)
क्या वहाँ
कोई अनुभूति हुई?

घासी दास (नम्र, विनीत)
हाँ गुरुजी।
आज दिन भर
आपके बताए योग का अभ्यास करता रहा।
कभी वहाँ
गरमाहट की अनुभूति हुई...
कभी शीतलता की।
(धीरे से)
और...
एक मीठे स्वाद का
अद्‌भुत अहसास।
(भावुक होकर)
अब भी वह अनुभूति
वहीं बनी हुई है।

CLOSE-UP – आँखें खुलती हैं

घासी दास (जिज्ञासा से)
गुरुजी...
एक क्षण के लिए
धरती के भीतर की संरचना
स्वप्न की तरह
मेरे मन में दिखाई दी।
क्या ऐसी अनुभूति
स्वाभाविक है?

सतपुरूष (संतोषपूर्ण मुस्कान)
हाँ पुत्र।
जिस केंद्र का
तुम अभ्यास करते हो—
जब वह केंद्र
चेतन और सक्रिय होने लगता है—
तो वह
अपने गुणों और प्रभावों द्वारा
साधक से
परिचय कराने लगता है।
(धीरे)
तभी साधक जान पाता है
कि केंद्र जागृत हुआ है
या नहीं।

MID SHOT
सतपुरुष का प्रकाश
हल्का तेज़ होता है।

सतपुरूष (CONT’D)
तुम्हारी जो अनुभूतियाँ हैं—
वे संकेत हैं
कि तुम्हारा मूल कमल
सक्रिय हो चुका है।
पर याद रखो—
यदि अभ्यास छोड़ दिया,
तो वह
पुनः निष्क्रिय हो जाएगा।
अभ्यास और अनुभूति—
इन्हीं से
यह सदा जागृत रहता है।

घासी दास
गुरुजी...
मूल कमल के जाग्रत होने से
साधक को
क्या प्राप्त होता है?

सतपुरूष (गंभीर, दिव्य)
पुत्र—
मूल कमल के जागरण से
साधक को
अद्भुत शारीरिक स्थिरता
और मानसिक दृढ़ता प्राप्त होती है।
यह शरीर में ऊर्जा, उत्साह और निर्भीकता का संचार करता है।

CLOSE-UP – सतपुरूष
यह सुषुम्ना नाड़ी का मूल आधार है।

इसके जागरण से अन्य केंद्रों को सक्रिय करने हेतु आवश्यक बल प्राप्त होता है।

सतपुरूष (CONT'D)
यह ब्रह्मचर्य की सिद्धि, ध्यान की एकाग्रता और पृथ्वी तत्व से गहन जुड़ाव में सहायक है।
साधक के तेज में अभूतपूर्व वृद्धि होती है।
शारीरिक आलस्य समाप्त होता है।

WIDE SHOT
जंगल, आकाश, चट्टान —
सब जैसे स्थिर हो जाते हैं।

सतपुरूष (CONT'D)
यह हड्डियों, रीढ़ और गुदा क्षेत्र को सुदृढ़ बनाता है।
पाँचों इंद्रियों की संवेदनशीलता को संतुलित करता है।
और शारीरिक इच्छाओं पर नियंत्रण से कायाकल्प का अनुभव देता है।

PAUSE

सतपुरूष
अब पुत्र—
द्वितीय कमल के अभ्यास से पूर्व
पंथ अभ्यास करो।

ACTION
घासी दास उठते हैं।
पंथ अभ्यास प्रारंभ करते हैं।
सतपुरूष– REACTION

चेहरे पर
मंद, संतोषपूर्ण मुस्कान।

सतपुरूष
बहुत अच्छा, घासी दास।
अब
आसन ग्रहण करो।

घासी दास
पद्मासन में बैठते हैं।
नेत्र बंद।

सतपुरूष (मधुर स्वर)
जिस प्रकार
मूल कमल का अभ्यास किया—
उसी प्रकार
द्वितीय कमल का करना है।
अंतर केवल इतना—
“रे” शब्द का
उच्चारण
मन ही मन करना है।

SPIRITUAL VISUALS
श्वास भीतर जाती है।
धीरे-धीरे बाहर आती है।

सतपुरूष (CONT’D)
जब श्वास बाहर निकले—
उसके विपरीत

एक सूक्ष्म बल अनुभव करो।
जहाँ वह बल लगे—
वही
द्वितीय कमल है।

सतपुरूष (CONT'D)
उस स्थान पर
"रे" शब्द की शक्ति से
दाहिनी दिशा में
कमल पुष्प की कल्पना करो—
और
उसे
घूमते हुए अनुभव करो।
जब तक अनुभूति न हो—
अभ्यास दोहराते रहो।

FINAL MOMENT
सतपुरुष धीरे-धीरे प्रकाश-पुंज में परिवर्तित होते हैं।
और अदृश्य हो जाते हैं।

LAST SHOT
घासी दास
ध्यान में लीन।
झींगुरों की आवाज़।
संध्या गहराती है।

FADE OUT.

🌍 ENGLISH

SCENE 7 – "AWAKENING OF THE ROOT LOTUS"

EXT. DENSE FOREST OF SONAKHAN – CHHATA HILL PEAK – EVENING (1774)

The sun sets behind the hills.
Golden-red light fades into dusk.
Deep silence.
Crickets echo through the forest.

WIDE SHOT
A massive rock atop Chhata Hill.
GHASI DAS
sits in Sukhasana, calm and composed.
Before him—
THE SATPURUSH,
radiating divine light.

SATPURUSH
My child, Ghasi Das...
Have you practiced the meditative breaths
of the sound "Sa",
with rhythm and deep focus
at the Root Lotus?
Did you feel anything there?

GHASI DAS
Yes, Guruji.
All day I practiced the yoga you taught.
Sometimes I felt warmth…
sometimes coolness.
And a strange sweetness.
(softly)
The sensation still lingers.

GHASI DAS (curious)
For a moment,
I saw the structure of the earth within—
like a dream.
Is this natural, Guruji?

SATPURUSH
Yes, my son.
When a center becomes active,
it reveals itself
through sensations and influence.
That is how a seeker knows
it has awakened.

SATPURUSH (CONT'D)
Your Root Lotus is awakening.
But remember—
without continued practice,
it will fall dormant again.

Practice sustains awakening.

GHASI DAS
Guruji...
What does the awakening
of the Root Lotus grant a seeker?

SATPURUSH
It grants immense physical stability
and mental strength.
It awakens energy, courage, and vitality.
It is the foundation of the Sushumna Nadi.
Its awakening empowers all higher centers.

SATPURUSH (CONT'D)
It strengthens discipline, focus,
and connection to the Earth element.
The seeker's radiance increases.
Lethargy dissolves.
The body, spine, and senses become balanced.
Desires come under control—
leading to inner renewal.

SATPURUSH
Now, my son—
before practicing the Second Lotus,
perform the Path Practice.
ACTION

Ghasi Das rises and practices.

The Satpurush smiles gently.

SATPURUSH

Well done.

Now, sit.

GHASI DAS

Assumes Padmasana.

Eyes closed.

SATPURUSH

Practice the Second Lotus as before.

But now—

chant "Re" silently.

As the breath leaves the body, sense the opposing subtle force.

Where it is felt—

that is the Second Lotus.

Visualize it rotating like a blooming lotus.

Repeat until you feel it.

FINAL IMAGE

The Satpurush dissolves into a beam of light.

Ghasi Das remains in meditation.

Crickets echo.

FADE OUT.

SCENE 8

🎬 दृश्य 8
त्रिदल कमल की ओर प्रथम स्पर्श

🌄 EXT. SONAKHA FOREST – CHHATA PAHAD PEAK – GIANT ROCK – PRE-DAWN

समय: सुबह 5:00 बजे

भोर के तारे अभी भी आकाश में झिलमिला रहे हैं।
पूरा घना जंगल गहन शांति में डूबा है।
छाता पहाड़ के शिखर पर,
विशाल चट्टान पर
घासी दास खड़े होकर पंथ अभ्यास कर रहे हैं।
लगभग आधे घंटे के अभ्यास के बाद—
वे अपने आसन पर आकर
पद्मासन में बैठते हैं।
धीरे-धीरे
वे योग अभ्यास में प्रवेश करते हैं।
उनकी साँसें गहरी और स्थिर हैं।
वे अब तक सतपुरुष द्वारा बताए गए सभी अभ्यासों
को क्रमशः दोहराते हैं।
उनका ध्यान
मूल कमल और द्विदल कमल पर केंद्रित है।
भीतर ही भीतर
वे अपनी शारीरिक और मानसिक अनुभूतियों का रसास्वादन कर रहे हैं।
उनका मुख मंडल पूर्णतः शांत है।

एक दिव्य आभा
स्पष्ट रूप से उनके चारों ओर चमक रही है।

तभी—
आकाश की ओर से एक प्रकाशपुंज प्रकट होता है।
प्रकाश सघन होता है।
उसके मध्य से सतपुरुष दिव्य रूप में अवतरित होते हैं।
वे घासी दास के सामने अपने आसन पर ध्यान मुद्रा में बैठ जाते हैं।
कुछ क्षण गहन मौन।

सतपुरूष
(धीरे, करुण स्वर में)
पुत्र... आँखें खोलो।
घासी दास धीरे-धीरे आँखें खोलते हैं।
सबसे पहले
वे सतपुरुष को प्रणाम करते हैं।
फिर—
आकाश की ओर दृष्टि उठाते हैं।
सूर्यदेव
लालिमा के साथ
उदय हो रहे हैं।
सूर्य
ठीक सतपुरुष के मुख मंडल के पीछे
दमक रहा है।
ऐसा प्रतीत होता है
मानो वह सतपुरुष का
विशाल आभा मंडल हो।
घासी दास

एक अलौकिक दृश्य के साक्षी हैं।
उनका रोम-रोम
ऊर्जा से भर उठता है।
वे निःशब्द।
मौन।

सतपुरूष (मंद मुस्कान के साथ)
वत्स घासी,
जैसे यह सूर्य की आभा
त्रिदल कमल की साधना भी
वैसी ही अलौकिक
और कांतिमय होती है।
आज
मैं तुम्हें
त्रिदल कमल स्थान का अभ्यास कराऊँगा।
लेकिन उससे पहले—
द्विदल कमल के अभ्यास के दौरान जो अनुभूति तुम्हें हुई—
उसे मुझे बताओ।

घासी दास
(विनम्रता और भाव से)
गुरुदेव...
मैंने
मन ही मन
"रे" का उच्चारण करते हुए
धीरे-धीरे
श्वास छोड़ी।
"रे" के उच्चारण के समय

मैंने
साँस की गति के
विपरीत दिशा में
लगने वाले बल पर
ध्यान केंद्रित किया।
मूल कमल के ऊपर—

जन्मांग के ठीक पीछे—
रीढ़ की हड्डी के भीतर जिस स्थान को आपने द्विदल कमल कहा है—
उस स्थान का मुझे स्पष्ट ज्ञान हुआ।
फिर
मैंने अपनी धारणा शक्ति से
उस बिंदु को
बाएँ से दाएँ
वृत्ताकार घूमते हुए
कल्पित किया।
कुछ समय के ध्यान के बाद—
उस स्थान पर
अत्यंत शीतलता की अनुभूति हुई।
मेरे
मन-दृष्टि-पटल पर
एक विशाल क्षेत्र में फैला
असीम गहराई वाला
समुद्र दिखाई दिया।
मैं कुछ समय तक उस अलौकिक दृश्य को निहारता रहा।
मुझे असीम शीतलता की शारीरिक और मानसिक अनुभूति हुई, गुरुदेव।

सतपुरूष
(प्रसन्न होकर, मंद मधुर मुस्कान)
वत्स...
द्विदल कमल के सक्रिय होने से साधक के जीवन में—
खुशी,
साहस,
लचीलापन
और
कलात्मकता
का प्रादुर्भाव होता है।
यह स्थान
तुम्हारे बताए हुए
स्थान पर ही होता है।
यही
स्वयं का
निज निवास है।
यही
आत्मा का निवास स्थान है।
यह
सहजता की
अनुभूति देता है।

सतपुरूष
अब पुत्र घासी—
एक बार फिर मूल कमल और द्विदल कमल का एक साथ अभ्यास करो।
सबसे पहले नाक के माध्यम से शक्ति से भरी गहरी श्वास लो।
फिर धीरे-धीरे “सा... रे...” का उच्चारण करते हुए
श्वास छोड़ो।

दोनों स्थानों की
अनुभूति करो।

घासी दास
सतपुरुष के निर्देशों का पूर्ण पालन करते हुए फिर से योगाभ्यास में लीन हो जाते हैं।
चारों ओर
मौन।
प्रकृति साक्षी है।

FADE OUT.

🎬 SCENE 8 — THE RADIANCE OF THE TRI-PETALLED LOTUS

EXT. SONAKHA FOREST – CHHATA HILL PEAK – GIANT ROCK – PRE-DAWN
TIME: 5:00 A.M.

The dawn stars still shimmer faintly in the sky.
The dense forest is wrapped in complete silence.
On the summit of Chhata Hill,
upon a giant rock,
GHASI DAS performs Panth practice.
After nearly half an hour,
he comes to his seat
and sits in PADMASANA.
He enters deep yogic practice.

His breathing is slow and steady.
He mentally repeats
all the disciplines
taught by the SATPURUSH so far.
His awareness rests
on the Root Lotus (Mul Kamal)
and the Two-Petalled Lotus (Duj Kamal).
Internally,
he observes and savors
his physical and mental experiences.
His face is completely serene.
A divine radiance clearly surrounds him.

Suddenly—
A COLUMN OF LIGHT appears in the sky.
The light condenses.
From it emerges the SATPURUSH, radiant and divine.
He sits before Ghasi Das in meditative posture.
A sacred silence.

SATPURUSH
(gently)
My son… open your eyes.
Ghasi Das slowly opens his eyes.
He first bows in reverence
to the Satpurush.
Then he looks toward the sky.
The Sun God rises with crimson hues.

The sun shines
directly behind the face of the Satpurush.
It appears
as if the sun itself
is the vast aura of the Satpurush.
Ghasi Das beholds
an otherworldly vision.
Every cell of his body
fills with energy.
He remains silent.
Awestruck.

SATPURUSH
(with a gentle smile)
Child Ghasi,
just as radiant as this sun
is the practice
of the Tri-Petalled Lotus.
Today,
I shall guide you
into the practice
of the Tridal Kamal.
But before that—
Tell me
what you experienced
during the practice
of the Two-Petalled Lotus.

GHASI DAS

(humbly)

Gurudev...

I practiced by mentally chanting the sound “RE”, slowly releasing my breath.

While chanting “RE,”

I focused on the force acting opposite to the direction of the breath.

Above the Root Lotus— just behind the generative organ—

within the spinal column, at the place you called the Two-Petalled Lotus—

I became fully aware of that center.

Using my power of visualization,

I imagined it rotating

in a circular motion

from left to right.

After some time in meditation—

I felt profound coolness there.

On the inner screen of my mind,

I saw a vast expanse—

an infinitely deep ocean.

I observed that divine vision for a while.

I experienced

immense coolness

both physically and mentally, Gurudev.

SATPURUSH

(smiling with satisfaction)

My child…

When the Two-Petalled Lotus becomes active, it brings into a seeker’s life— joy, courage, flexibility, and creativity.

This center exists exactly at the place you described.

It is one’s own inner abode.

It is the dwelling place of the soul.

It grants a sense of natural ease.

SATPURUSH

Now, Ghasi Das— once again practice the Root Lotus

and the Two-Petalled Lotus together.

First, inhale deeply through the nose, filling yourself with strength.

Then slowly exhale, chanting “SA… RE…”

Experience both centers simultaneously.

Ghasi Das follows the instructions and immerses himself once again in deep yogic practice.

The forest remains silent.

Nature bears witness.

FADE OUT.

SCENE 9

🎬 दृश्य 9 — त्रिदल कमल का जागरण

🎥 HINDI

EXT. छाता पहाड़ का शिखर — विशाल शिला — भोर घना जंगल।

भोर के तारे अब भी आकाश में टिमटिमा रहे हैं।
चारों ओर पूर्ण निस्तब्धता—केवल हल्की वायु और दूर कहीं पक्षियों की प्रथम पुकार।
विशाल चट्टान पर घासीदास पद्मासन में स्थिर बैठे हैं।
उनके सामने दिव्य तेज से आलोकित सतपुरुष।
कुछ क्षणों का मौन।
सतपुरुष की वाणी गूंजती है—गंभीर, करुण और आदेशात्मक।
सतपुरूष (धीमे, गूढ़ स्वर में)
पुत्र घासीदास...
त्रिदल कमल हमारे नाभि के बिल्कुल सीध में,
रीढ़ की हड्डी के भीतर सुषुम्ना में स्थित है।
घासीदास पूर्ण श्रद्धा से सुनते हैं।
सतपुरूष (जारी)
त्रिदल कमल को क्रियाशील
करने के लिए—
पूर्व की भांति नासिका से श्वास लो...
और अपनी पूरी शक्ति से वायु को शरीर के भीतर भरो।
घासीदास गहरी श्वास लेते हैं।

सतपुरूष
अब धीरे-धीरे
“गा”
का उच्चारण करते हुए श्वास को छोड़ो।
घासीदास के होंठों से मंद स्वर निकलता है—
“गा...”
सतपुरूष
अपने मन को श्वास में लगाओ।
और जब श्वास शरीर से बाहर निकलने लगे—
तो “गा” शब्द की ध्वनि
और श्वास की गति के विपरीत बल के संयोग से
त्रिदल कमल के केंद्र (स्थान) को कंपित करेगा।
कैमरा घासीदास की नाभि से रीढ़ की दिशा में सूक्ष्म ऊर्जा-प्रवाह का आभास देता है।
सतपुरूष
उसी स्थान को
अपनी अनुभूति में
शारीरिक रूप से महसूस करो।
घासीदास का चेहरा ध्यान में और अधिक स्थिर।
सतपुरूष
अब मन की शक्ति से कल्पना करते हुए—
एक गोलाकार ऊर्जा-वृत्त को
बाएँ से दाएँ दिशा में
पूर्ण मनोयोग से घुमाओ, पुत्र।
घासीदास गहन अभ्यास में लीन।
कुछ क्षणों का मौन—केवल श्वास और सूक्ष्म ध्वनि।
सतपुरूष
इस त्रिदल कमल का योग-अभ्यास

तब तक करो
जब तक उसे शारीरिक रूप से अनुभव न कर लो।
घासीदास के ललाट पर दिव्य शांति।
सतपुरूष (जारी)
जब त्रिदल कमल का अभ्यास पूर्ण हो जाए—
तो पुनः
मूल कमल,
द्विदल कमल
और त्रिदल कमल का अभ्यास
"सा–रे–गा"
के उच्चारण के साथ दोहराना।
सतपुरुष का स्वर और अधिक करुण हो जाता है।
सतपुरूष
और स्मरण रहे, पुत्र—
जब भी ध्यान-मुद्रा में बैठकर अभ्यास करो,
उससे पहले
पंथ अभ्यास अत्यंत आवश्यक है।
सतपुरूष
पंथ अभ्यास ही
साधक को दीर्घ समय तक
ध्यान-योग करने की शक्ति देता है।
घासीदास नेत्र बंद किए
पूरी श्रद्धा से सिर झुकाते हैं।
घासी दास
(मौन प्रणाम)
सतपुरुष करुण दृष्टि से देखते हैं।
सतपुरूष
अब तुम अभ्यास में लग जाओ, पुत्र।

सतपुरुष आशीर्वाद मुद्रा में हाथ उठाते हैं।
धीरे-धीरे उनका सम्पूर्ण शरीर
एक दिव्य प्रकाश-पुंज में परिवर्तित होता है
और फिर
प्रकाश में विलीन होकर अदृश्य हो जाता है।
घासीदास पूर्ण निष्ठा से सिर झुकाते हैं।
घासी दास
(मन ही मन)
प्रणाम, गुरुदेव।
वे नेत्र बंद करते हैं।
श्वास स्थिर।
शरीर अचल।
कैमरा ऊपर उठता है—
उगते सूर्य की पहली किरण
घासीदास के मुख को स्पर्श करती है।

FADE OUT.

🎬 **ENGLISH**

EXT. CHHATA PAHAD SUMMIT – MASSIVE ROCK – DAWN

A dense forest lies silent.

Fading stars still shimmer in the pre-dawn sky.

Only the whisper of wind and distant birds.

On a vast rock, GHASI DAS sits in PADMASANA.

Before him stands SATPURUSH, radiating divine light.
A moment of sacred silence.
SATPURUSH (calm, profound)
My son, Ghasi Das...
The Tridal Lotus lies exactly aligned with the navel,
within the spinal column,
in the Sushumna channel.
Ghasi Das listens with absolute devotion.
SATPURUSH
To activate the Tridal Lotus—
inhale through the nostrils as before...
fill the body with prana, with full strength.
Ghasi Das inhales deeply.
SATPURUSH
Now slowly exhale,
uttering the sound
"Gaa..."
A soft vibration escapes his lips—
"Gaa..."
SATPURUSH
Anchor your mind to the breath.
As the breath begins to leave the body,
the sound "Gaa"
combined with the opposing force of exhalation
will create vibration
at the center of the Tridal Lotus.
A subtle visual of inner energy awakening.

SATPURUSH
Feel that point
physically
within your awareness.
Ghasi Das grows stiller.
SATPURUSH
With the power of your mind, visualize
a circular field of energy
rotating clockwise—
with complete concentration.
Ghasi Das is fully immersed.
A deep silence.
SATPURUSH
Practice this Tridal Lotus Yoga
until the sensation becomes
clearly tangible.
SATPURUSH
After completion,
repeat the practice of
Mul Lotus,
Dwidala Lotus,
and Tridal Lotus
with the sacred sounds—
"Sa–Re–Gaa."
His voice softens with compassion.
SATPURUSH
And remember, my son—

before entering meditation,
Panth practice is essential.
SATPURUSH
It is Panth practice
that grants the seeker
the strength to remain
in deep meditation for long durations.
Ghasi Das bows deeply.
GHASI DAS (silent reverence)
SATPURUSH
Now, immerse yourself in practice.
Satpurush raises his hand in blessing.
His form slowly transforms into a radiant sphere of light
and dissolves into the dawn.
Ghasi Das bows again.
GHASI DAS
(whispering within)
Pranam, Gurudev.
He closes his eyes.
Breath steady.
Body motionless.
The first ray of sunrise touches his face.

FADE OUT.

SCENE 10

🎬 दृश्य 10 — चतुर्थ कमल का द्वार
Time: संध्या 5 बजे

🎥 HINDI

EXT. छाता पहाड़ का शिखर — विशाल शिला — संध्या

घना साल वनों से घिरा छाता

पहाड़।
सूर्य पश्चिम की ओर झुक चुका है।
आकाश के रंग—केसरिया, नीला और स्वर्ण।
विशाल चट्टान पर घासीदास पद्मासन में स्थित।
नेत्र बंद।
श्वास लयबद्ध।
चारों ओर प्रकृति का सजीव संगीत—
चिड़ियों की सामूहिक चहचहाहट, दूर कहीं जलप्रपात की गूंज, पत्तों से टकराती वायु।
पूरा वातावरण
स्वतः ही
एक दिव्य आध्यात्मिक मंडल में परिवर्तित।
अचानक—
एक प्रकाश-पुंज प्रकट होता है।
प्रकाश धीरे-धीरे मानव-आकृति धारण करता है।
सतपुरुष
अपने गुरु आसन में घासीदास के समक्ष विराजमान हो जाते हैं।

कुछ क्षणों का गहन मौन।
सतपुरूष (कोमल किंतु आदेशात्मक)
पुत्र...
नेत्र खोलो।
घासीदास धीरे-धीरे आँखें खोलते हैं।
सतपुरुष को देखकर
श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं।
सतपुरूष
पुत्र...
अब मुझे आशा नहीं,
पूर्ण विश्वास है
कि त्रिदल कमल की अनुभूति
तुम्हें हो चुकी होगी।
घासीदास मौन में स्वीकृति प्रकट करते हैं।
सतपुरूष
त्रिदल कमल
आध्यात्मिक ऊर्जा का भंडार होता है।
इसके जागरण से
आगे के केंद्रों का जागरण
स्वतः सरल हो जाता है।
सतपुरुष के शब्दों के साथ
कैमरा घासीदास के शरीर के भीतर
ऊर्जा के सूक्ष्म प्रवाह को दर्शाता है।
सतपुरूष
इसके जाग्रत होते ही
साधक में
अदम्य इच्छाशक्ति जन्म लेती है।
शारीरिक आलस्य नष्ट होता है।

सतपुरूष
नाभि के पीछे ऊर्जा और उष्णता का अनुभव होता है।
नाभि में चुंबकीय आवेश उत्पन्न होने लगता है।
एक सूक्ष्म दृश्य—
वायु में तैरते सूक्ष्म कण
नाभि की ओर आकृष्ट होते हुए।
सतपुरूष
यह केवल दृश्य नहीं—
अनेक सकारात्मक अदृश्य शक्तियाँ
शरीर में प्रवेश कर
शारीरिक और मानसिक ऊर्जा का निर्माण करती हैं।
सतपुरुष क्षण भर रुकते हैं।
सतपुरूष
पुत्र घासीदास...
अब तुम
चतुर्थ कमल के जागरण के लिए
तैयार हो जाओ।
घासीदास अपने मेरुदंड को और सीधा करते हैं।
नेत्रों में जिज्ञासा।
घासी दास
(विनम्रता से)
जी, गुरुजी।
सतपुरूष
चतुर्थ कमल का स्थान
हमारी छाती में—
दोनों पसलियों के मध्य,
पीछे रीढ़ की हड्डी पर स्थित है।
सतपुरुष संकेत करते हैं।

सतपुरूष
इसके जागरण से
हृदय, फेफड़े,
और सम्पूर्ण वक्ष-स्थल में
अनंत सुख की अनुभूति होती है।
सतपुरूष
पीठ के पीछे
दोनों कंधों के मध्य
अद्‌भुत स्पंदन जागता है।
घासीदास की श्वास गहरी होती जाती है।
सतपुरूष
हृदय में
ऊष्मा और शीतलता का
मिश्रित अनुभव होता है।
गहन ध्यान में
अनेक कोमल नाद सुनाई देते हैं।
प्रकृति की ध्वनियाँ
मानो उस नाद से एक हो जाती हैं।
सतपुरूष
चतुर्थ कमल के जागरण से
साधक का ब्रह्मांड से सीधा संबंध स्थापित होता है।
सतपुरूष
वह समस्त संसार का साक्षी बन जाता है।
निष्काम,
निःस्वार्थ प्रेम का स्वामी।
घासीदास के नेत्रों से शांत आँसू बहते हैं।
सतपुरूष
अब अभ्यास प्रारंभ करो।

सतपुरूष

नाक से धीरे-धीरे पूर्ण शक्ति के साथ प्राण वायु को भीतर भरो।

सतपुरुष स्वयं अभ्यास कर दिखाते हैं।

सतपुरूष

अब नाक से ही "मा" का उच्चारण मन में करते हुए श्वास को छोड़ो।

घासीदास

गुरु के प्रत्येक निर्देश का अनुसरण करते हैं।

कैमरा

उनकी छाती के केंद्र पर ठहरता है—

एक कोमल प्रकाश-तरंग स्पंदित होती है।

संध्या का आकाश और गहरा हो जाता है।

FADE OUT.

🎬 ENGLISH

EXT. CHHATA PAHAD SUMMIT – MASSIVE ROCK – EVENING

Dense forest surrounds the summit.

The sun descends slowly.

Bird calls echo through the valley.

Distant waterfalls blend with the wind.

GHASI DAS sits in Padmasana.

Eyes closed.

Breath rhythmic.

The entire landscape forms a natural spiritual symphony.

Suddenly—
A sphere of radiant light appears.
The light transforms into SATPURUSH,
who takes his seat before Ghasi Das.
Silence.
SATPURUSH (gentle)
My son...
Open your eyes.
Ghasi Das opens his eyes slowly
and bows in reverence.
SATPURUSH
Now I do not merely hope—
I am certain
that you have experienced
the Tridal Lotus.
SATPURUSH
The Tridal Lotus
is a reservoir of spiritual energy.
Once awakened,
the higher centers awaken with ease.
Visuals of subtle energy flow.
SATPURUSH
It grants indomitable willpower,
destroys physical lethargy,
and ignites warmth and magnetism
behind the navel.
Invisible forces gather toward the core.
SATPURUSH

These unseen positive energies
nourish both body and mind.
A pause.
SATPURUSH
Now, Ghasi Das...
prepare yourself
for the awakening of
the Fourth Lotus.
Ghasi Das straightens his spine.
GHASI DAS
Yes, Gurudev.
SATPURUSH
The Fourth Lotus lies
between the ribs of the chest,
aligned with the spine.
SATPURUSH
Its awakening brings
bliss to the heart, lungs,
and the entire chest region.
SATPURUSH
A sacred vibration awakens
between the shoulders.
SATPURUSH
Heat and coolness merge in the heart.
Subtle inner sounds arise.
Nature's sounds merge into silence.
SATPURUSH
Through the Fourth Lotus,

the seeker connects directly
with the universe—
becoming a witness to all existence.
SATPURUSH
He becomes
selfless love itself.
SATPURUSH
Now begin.
SATPURUSH
Inhale deeply through the nose,
drawing pranic energy in.
He demonstrates.
SATPURUSH
Exhale gently,
chanting
“Ma”
silently within.
Ghasi Das follows perfectly.
A soft luminous pulse
appears at his chest.
Evening deepens.

FADE OUT.

SCENE 11

🎬 दृश्य 11 — पंचम दल कमल: एकत्व की वाणी

कहानी का शीर्षक: बाबा गुरु घासी दास जी
Year: 1174
स्थान: सोनाखान का घना जंगल — छाता पहाड़ का शिखर — विशाल चट्टान
समय: प्रातः 5 बजे

🎥 हिन्दी

EXT. छाता पहाड़ का शिखर — विशाल चट्टान — भोर

भोर का प्रथम प्रकाश।
जंगल ओस से भीगा हुआ।
पत्तों से टपकती बूँदें।
घासीदास
एकाग्र भाव से पंथ अभ्यास में लीन।
उनकी श्वास,
उनका शरीर,
उनका मन —
तीनों एक लय में।
पंथ अभ्यास पूर्ण होते ही
वे पद्मासन में स्थिर हो जाते हैं।
MONTAGE — ध्यान क्रम
— मूल कमल
— द्विदल कमल

— त्रिदल कमल
— चतुर्थ दल कमल
ऊर्जा ऊपर की ओर प्रवाहित।
फिर—
चारों कमलों का
एक साथ अभ्यास।
पूरा वातावरण
मानो श्वास ले रहा हो।
अचानक—
आकाश से
एक प्रकाश-पुंज उतरता है।
धीरे-धीरे
वह सतपुरुष के रूप में
घासीदास के समक्ष
अपने आसन पर विराजमान हो जाता है।
कुछ क्षण
अद्‌भुत मौन।
सतपुरूष (गंभीर, करुण)
पुत्र!
आज हम
पंचम दल कमल को समझेंगे
और उसका अभ्यास करेंगे।
घासीदास नेत्र बंद किए
श्रवण में पूर्ण समर्पित।
सतपुरूष
अब तक बताए गए
मूल से चतुर्थ दल कमल तक
उनकी ऊर्जा

अलग-अलग नाड़ियों से प्रवाहित होती है।
सतपुरूष
परंतु
पंचम दल कमल के स्थान पर
वे सभी धाराएँ
एक हो जाती हैं।
कैमरा—
ऊर्जा की सभी धाराओं को
कंठ केंद्र पर
एक होते दिखाता है।
सतपुरूष
इसके ध्यान से
साधक को
चर-अचर,
जड़-चेतन
सबमें
एक ही परम शक्ति का बोध होने लगता है।
सतपुरुष का स्वर
काव्य में परिवर्तित होता है।
सतपुरूष
बरसते बादल
बूँद-बूँद अनेक हैं।
बहती धरती में
नदियाँ अनेक हैं।
कुएँ में जल भरने वाली
पनिहारिन भांडा अनेक हैं।
सतपुरूष
लहराते सागर,

ताल-तलैया अनेक हैं—
पर उनमें भरे जल
एक है।
सतपुरूष
शेर, चीता, बाघ,
भालू, गजराज और हिरण अनेक हैं।
कुह-कुह करती कोयल,
तोते, मोर और
पक्षी अनेक हैं।
सतपुरूष
साल, तेंदू, जामुन,
आँवला और मीठे आम अनेक हैं।
फूल, पत्तियाँ,
रंग-रूप और
खुशबू अनेक हैं।
सतपुरूष
सोनाखान का जंगले,
पानी, मिट्टी
और उस पर पड़ती रवि-किरने
एक है।
सतपुरूष
रंग-रूप, जाति-पाती
और संस्कार अनेक हैं!
सतपुरूष (दृढ़ स्वर)
पर
सकल जगत के
प्राणी-प्राणी
एक हैं।

क्षण भर का मौन।
सतपुरूष
मनखें-मनखे (मानव मानव)
एक हैं।
घासीदास के नेत्रों से
अश्रु प्रवाहित।
सतपुरूष
अब अभ्यास करो, पुत्र।
सतपुरूष
अपने कंठ में
ध्यान केंद्रित करो।
नाक से
बलपूर्वक
श्वास भीतर खींचो—
सतपुरूष
और
मन-ही-मन
"पा"
का उच्चारण करते हुए
धीरे-धीरे श्वास छोड़ो।
सतपुरुष स्वयं अभ्यास कर दिखाते हैं।
सतपुरूष
"पा" की ध्वनि
और श्वास की विपरीत गति से
कंठ में कंपन उत्पन्न होगा।
सतपुरूष
उस कंपन को
अनुभव करो।

सतपुरूष
अब कल्पना से
बाएँ से दाएँ
वृत्त को
घुमाओ।
घासीदास अभ्यास में लीन।
कंठ स्थान पर
सूक्ष्म प्रकाश।
सतपुरूष
पंचम दल कमल के जागरण से
सत्य वचन कहने का साहस उत्पन्न होता है।
सतपुरूष
जो वाणी निकलती है
वह
कर्म बन जाती है।
सतपुरूष (गंभीर चेतावनी)
इसलिए, पुत्र—
कुछ भी कहने से पहले
करोड़ों बार विचार करना।
सतपुरूष
इसके जागरण से
गले के समस्त रोग नष्ट होते हैं।
वाणी
मधुर,
संयमित
और कल्याणकारी बनती है।
घासीदास
सुनते भी हैं,

अभ्यास भी।
कुछ क्षण बाद—
सतपुरुष
पुनः
प्रकाश-पुंज में परिवर्तित होकर
अदृश्य हो जाते हैं।
घासीदास
गहन ध्यान में
स्थिर।
सूर्य की पहली किरण
उनके कंठ को स्पर्श करती है।

FADE OUT.

🎬 **ENGLISH**

EXT. CHHATA PAHAD SUMMIT – MASSIVE ROCK – DAWN

Morning mist floats through the forest.

Dew glistens on leaves.

GHASI DAS completes Panth Practice, then settles into PADMASANA.

Breath aligned.

Mind silent.

MONTAGE – MEDITATION FLOW

– Root Lotus

— Second Lotus
— Tridal Lotus
— Fourth Lotus
Energy rises.
Suddenly—
A COLUMN OF LIGHT descends from the sky.
It transforms into SATPURUSH,
seated before Ghasi Das.
Silence.
SATPURUSH
My son,
today we shall understand
and practice
the Fifth Lotus.
SATPURUSH
Until now,
the energies from the first to the fourth lotus
flow through separate channels.
SATPURUSH
But at the Fifth Lotus,
all currents
merge into one.
Subtle visual of convergence at the throat.
SATPURUSH
Through this awakening,
the seeker realizes
the One Divine Power
within all beings.

His voice turns poetic.
SATPURUSH
Clouds fall as countless drops,
yet water is one.
Rivers are many,
yet water is one.
SATPURUSH
Oceans and lakes differ,
yet water is one.
SATPURUSH
Animals, birds, trees,
colors, fragrances—many.
Earth, water, sunlight—one.
SATPURUSH
Forms and identities may differ—
but all beings
are one.
SATPURUSH
Mankind
is one.
Ghasi Das trembles with realization.
SATPURUSH
Now practice.
SATPURUSH
Focus on the throat center.
Inhale forcefully through the nose.
SATPURUSH
Exhale slowly,

chanting

"Pa"

silently within.

He demonstrates.

SATPURUSH

Feel the vibration

in the throat.

SATPURUSH

Visualize the energy circle

rotating clockwise.

A soft glow emerges at Ghasi Das's throat.

SATPURUSH

With this awakening,

truthful speech gains power.

SATPURUSH

Words turn into action.

SATPURUSH (solemn)

Therefore, speak only

after deep reflection.

SATPURUSH

This lotus heals all throat ailments

and purifies speech.

Satpurush dissolves back into light.

Ghasi Das remains still,

absorbed.

The rising sun touches his throat.

FADE OUT.

SCENE 12

🎬 दृश्य 12 — षष्ठ दल कमल: त्रिकाल दृष्टि का उदय

कहानी का शीर्षक: Baba Guru Ghasi Das Ji
Year: 1774
समय: संध्या 6 बजे
स्थान: सोनाखान का घना जंगल — छाता पहाड़ का शिखर — विशाल चट्टान

🎥 हिन्दी

EXT. छाता पहाड़ का शिखर — विशाल चट्टान — संध्या

संध्या की हल्की सुनहरी धूप।
पूरा जंगल स्वर्णिम आभा में नहाया हुआ।
SOUND DESIGN:
— दूर-दूर तक गूँजती पक्षियों की पुकार
— कहीं पहाड़ी कबूतरों की गुंजन
— हल्की पवन की सरसराहट
घासीदास
अकेले पंथ अभ्यास में लीन।
कमर से ऊपर निर्वस्त्र—
उनका शरीर संध्या की धूप में मानो पिघला हुआ सोना।
हल्का पसीना,
श्वास की तीव्र लय।
पंथ अभ्यास पूर्ण होते ही
वे पद्मासन में बैठ जाते हैं।

ACTION — ध्यान क्रम
— मूल कमल
— द्विदल कमल
— त्रिदल कमल
— चतुर्थ दल कमल
— पंचम दल कमल
सबका पुनः अभ्यास।
घासीदास
अत्यंत गहन ध्यान में।
SOUND
— श्वास की सूक्ष्म ध्वनि
— प्रकृति पूर्ण मौन में प्रवेश करती हुई
अचानक—
आकाश में
एक घूमता हुआ प्रकाश-चक्र।
VISUAL
प्रकाश-पुंज
छाता पहाड़ के शिखर पर
चक्र की भाँति घूमता हुआ उतरता है।
धीरे-धीरे
वह मानव रूप धारण करता है।
सतपुरुष
प्रकट होकर
घासीदास के सम्मुख
ध्यान मुद्रा में विराजमान हो जाते हैं।
चारों ओर—
WIDE SHOT
पहाड़ के नीचे

सिंह, चीता, बाघ, भालू
शांत भाव से बैठे।
हिरण, सांभर, नीलगाय, खरगोश, वनभैंसा
एक-दूसरे के समीप
मित्रों की भाँति।
मानो
सभी
घासीदास के स्नेह में बंधे।
सतपुरूष (मंद स्वर)
पुत्र घासीदास...
नेत्र खोलो।
घासीदास
धीरे-धीरे आँखें खोलते हैं।
मंद मुस्कान।
श्रद्धापूर्वक प्रणाम।
सतपुरूष
देखो, पुत्र...
तुम्हारे ध्यान-योग का प्रभाव
अब सोनाखान के
जंगलों,
प्राणियों
और वनस्पतियों पर भी
दिखाई देने लगा है।
सतपुरूष
मेरुदंड(रीड की हड्डी) के सक्रिय (जागरण) से
पूरे वातावरण में
शांति और पवित्रता का संचार हुआ है।
VISUAL

— हिंसक पशु शांत
— पेड़ों पर बिना ऋतु के पुष्प
— फलों से झुकी डालियाँ
सतपुरूष
हिंसक पशु भी
अहिंसक हो गए हैं।
वृक्षों में
अकारण पुष्प-फल आ रहे हैं।
घासीदास
मौन।
दृष्टि चारों ओर।
सतपुरूष
पुत्र...
अब
षष्ठ दल कमल
का ध्यान-अभ्यास करेंगे।
घासीदास
सीधे बैठते हैं।
सतपुरूष
पूर्व अभ्यास की भाँति—
नाक से
पूरी क्षमता के साथ
प्राण वायु भीतर भरो।
घासीदास
श्वास खींचते हैं।
सतपुरूष
अब
"धा"

का उच्चारण करते हुए
धीरे-धीरे श्वास छोड़ो।
SOUND
“धा...” (गूंजता हुआ सूक्ष्म नाद)
सतपुरूष
दोनों भौहों के मध्य
ध्यान केंद्रित करो।
“धा” की ध्वनि
और श्वास की विपरीत गति के बल से
वहाँ कंपन उत्पन्न होगा।
ACTION
घासीदास
पूर्ण मनोबल से
बाएँ से दाएँ
वृत्त को
कल्पना में घुमाते हैं।
सतपुरूष
इसका अभ्यास
तब तक करो
जब तक
माथे में अनुभूति न हो।
घासीदास के ललाट पर
सूक्ष्म प्रकाश।
सतपुरूष
षष्ठ दल कमल के जागरण से
साधक
वर्तमान, भूत और भविष्य
तीनों को

दृश्य की भाँति
देखने में समर्थ होता है।
VISUAL (SUBTLE)
— समय की परतें
— घटनाओं की झलक
सतपुरूष
यह कमल
सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान
को समझने की क्षमता देता है।
घासीदास
पूर्ण ध्यान से सुनते हैं।
कुछ क्षण बाद—
सतपुरूष
अब, पुत्र...
पुनः
मूल कमल से
षष्ठ दल कमल तक
क्रमशः अभ्यास दोहराओ।
सतपुरूष
और
प्रत्येक केंद्र के
गुणों की अनुभूति करो।
सतपुरुष
धीरे-धीरे
प्रकाश-पुंज में विलीन हो जाते हैं।
घासीदास
नेत्र बंद कर
गहन ध्यान में लीन।

FINAL SHOT
संध्या का आकाश।
जंगल।
शांत प्राणी।
ललाट पर चमकता सूक्ष्म प्रकाश।

FADE OUT.

🎬 ENGLISH

EXT. CHHATA PAHAD SUMMIT — MASSIVE ROCK — EVENING

Golden twilight bathes the forest.
Bird calls echo far and wide.
GHASI DAS, bare-chested, practices Panth Yoga.
His body glows like molten gold in the fading sun.
Sweat glistens.
Breath powerful.
He completes the practice
and sits in Padmasana.
MEDITATION SEQUENCE
Root Lotus → Second → Third → Fourth → Fifth
Deep silence.
Suddenly—
A ROTATING SPHERE OF LIGHT descends like a cosmic wheel.

It transforms into SATPURUSH,
seated before Ghasi Das.
WIDE SHOT
Lions, tigers, bears sit peacefully.
Deer, rabbits, wild buffaloes rest together.
No fear.
Only calm.
SATPURUSH (softly)
My son, Ghasi Das...
Open your eyes.
Ghasi Das opens his eyes, smiles gently, bows.
SATPURUSH
Your meditation has begun
to transform nature itself.
Violence has dissolved.
Purity spreads through the land.
Unseasonal flowers bloom.
SATPURUSH
Now...
we begin the Sixth Lotus.
SATPURUSH
Inhale deeply through the nose.
SATPURUSH
Exhale slowly, chanting
"Dhaa".
SOUND
A subtle cosmic hum.

SATPURUSH

Focus between the eyebrows.

Visualize the energy rotating clockwise.

SATPURUSH

Practice until sensation arises.

A glow forms on Ghasi Das's forehead.

SATPURUSH

The Sixth Lotus grants

vision of past, present, and future—

the Trikal Drishti.

SATPURUSH

It reveals the subtlest truths of existence.

After a pause—

SATPURUSH

Now repeat the journey

from the Root to the Sixth Lotus.

Satpurush dissolves into light.

Ghasi Das remains—

still, radiant, timeless.

FADE OUT.

SCENE 13

🎬 दृश्य 13 — सप्त दल कमल: परम पुरुष से साक्षात्कार का द्वार

कहानी का शीर्षक: बाबा गुरु घासी दास जी
Year: 1774
स्थान: सोनाखान का घना जंगल — छाता पहाड़ का शिखर — विशाल चट्टान
समय: प्रातः 5 बजे (सूर्योदय से पूर्व)

🎥 हिन्दी

EXT. छाता पहाड़ का शिखर — विशाल चट्टान — प्रातः

आकाश में चाँदनी अभी शेष है।
सूर्योदय की हल्की प्रतीक्षा।
पूरा जंगल निस्तब्ध।
केवल—
SOUND DESIGN:
— झर-झर बहते झरनों की ध्वनि
— दूर बहती नदी का गंभीर स्वर
— मंद पवन की सरसराहट
विशाल चट्टान पर घासीदास
नियमित रूप से पंथ अभ्यास में लीन।
उनका शरीर स्थिर,
श्वास लयबद्ध,
मन एकाग्र।
पंथ अभ्यास पूर्ण कर
वे पद्मासन में बैठ जाते हैं।

MONTAGE — ध्यान योग क्रम
— मूल कमल
— द्विदल कमल
— त्रिदल कमल
— चतुर्थ दल कमल
— पंचम दल कमल
— षष्ठ दल कमल
घासीदास
हर केंद्र के गुणों को
शरीर और मन में
अनुभव करते हुए—
नेत्र बंद,
मन को नेत्रों से देखने का अभ्यास।
अचानक—
VISUAL + SOUND
आकाश से
शीतल वायु का झोंका
और
प्रकाश-पुंज का संयुक्त प्रवाह।
प्रकाश धीरे-धीरे मानव आकृति में परिवर्तित होता है।
सतपुरुष
घासीदास के सम्मुख
अपने आसन पर विराजमान।
कुछ क्षण
अत्यंत गहन मौन।
सतपुरूष (मृदु स्वर)
बेटा घासीदास...
आज

सप्त दल कमल
का अभ्यास प्रारंभ करेंगे।
घासीदास नेत्र खोलते हैं।
श्रद्धापूर्वक प्रणाम।
घासी दास
गुरुजी...
मूल से पंचम दल कमल तक
मेरी अनुभूति स्पष्ट रही,
पर षष्ठ दल कमल
अभी पूर्ण रूप से
स्पष्ट नहीं हुआ।
कृपया और मार्गदर्शन दीजिए।
सतपुरुष मंद मुस्कान के साथ।
सतपुरूष
बेटा...
धैर्य और सतत अभ्यास से
अनुभूति स्वतः गहन होती है।
सतपुरूष
फिर भी,
मैं तुम्हें
एक और
अत्यंत सहज अभ्यास बताता हूँ।
सतपुरूष
सहज भाव से बैठो।
श्वास को
स्वतः चलने दो।
कोई बल मत लगाओ।
सतपुरूष

अब दोनों नेत्रों को मन की कल्पना से
घेरते हुए अनंत संकेत (∞) बनाओ।
सतपुरूष
उस अनंत संकेत के पथ पर
मन को बार-बार घुमाओ।
सतपुरूष
कुछ ही क्षणों में
माथे पर—
दोनों आँखों के मध्य,
जहाँ तिलक लगता है—
वहीं
षष्ठ दल कमल का
उदय होगा।
घासीदास
अभ्यास करते हैं।
कुछ समय बाद—
घासी दास
गुरुजी...
मैं अनंत संकेत को पूरी तरह नहीं समझ पाया।
कृपया और सरल रूप में बताइए।
सतपुरुष
घासीदास के समीप आते हैं।
ACTION
वे अपनी उँगलियों से घासीदास की दोनों आँखों के चारों ओर धीरे-धीरे अनंत संकेत बनाते हैं।
सतपुरूष
अब इसे
महसूस करो, पुत्र।

घासीदास के मुख पर
अचानक
स्पष्टता की झलक।
VISUAL
माथे के मध्य
सूक्ष्म प्रकाश स्पंदन।
घासीदास
कुछ क्षणों तक
उस अनुभूति में
पूर्णत: लीन।
सतपुरूष
अब मुझे ज्ञात हो गया है,
कि तुम्हें
षष्ठ दल कमल की
अनुभूति हो चुकी है।
सतपुरूष
उसका अभ्यास
बाद में करते रहना।
सतपुरूष
अब
सप्त दल कमल
का अभ्यास करो।
घासीदास नेत्र खोलते हैं।
घासी दास
जी, गुरुजी।
सतपुरूष
पूर्व अभ्यास की भाँति—
श्वास को भीतर खींचो।

सतपुरूष
और
मन-ही-मन
"नि"
का उच्चारण करते हुए
धीरे-धीरे
श्वास बाहर छोड़ो।
सतपुरूष
श्वास की विपरीत गति के
बल के स्थान को पहचानो।
सतपुरूष
अब बाएँ से दाएँ वृत्त की कल्पना करते हुए
अपने कपाल—
सिर के सर्वोच्च शिखर पर होने वाली अनुभूति को महसूस करो।
घासीदास गहन ध्यान में।
VISUAL
कपाल के शीर्ष पर सूक्ष्म श्वेत प्रकाश कमल की भाँति फैलने लगता है।
सतपुरूष
बेटा...
इस अभ्यास में
निरंतर लगे रहो।
इतना कहकर
सतपुरुष
धीरे-धीरे
प्रकाश-पुंज में परिवर्तित होकर
अदृश्य हो जाते हैं।
घासीदास
नेत्र बंद किए

लगातार अभ्यास में लीन।
FINAL SHOT
आकाश में
चाँदनी विलीन हो रही है।
पूरब में
सूर्य की लालिमा।
घासीदास के
कपाल से
सूक्ष्म दिव्य प्रकाश।

FADE OUT.

🎬 ENGLISH

EXT. CHHATA PAHAD SUMMIT — MASSIVE ROCK — PRE-DAWN

Moonlight still lingers in the sky.
The forest is utterly silent.
SOUND:
— Flowing waterfalls
— Distant river currents
— Gentle mountain wind
GHASI DAS completes his daily Panth Practice
and sits in Padmasana.
MONTAGE — MEDITATION ASCENT
Root → Second → Third → Fourth → Fifth → Sixth Lotus
Eyes closed.

Mind observing itself.
Suddenly—
A cool gust of wind
blends with a COLUMN OF LIGHT descending from the sky.
The light transforms into SATPURUSH, seated before him.
Silence.
SATPURUSH
My son Ghasi Das,
today we begin
the practice of the Seventh Lotus.
Ghasi Das bows.
GHASI DAS
Gurudev,
my experiences were clear
up to the Fifth Lotus,
but the Sixth still feels incomplete.
Please guide me further.
Satpurush smiles gently.
SATPURUSH
With patience and steady practice,
clarity arrives naturally.
SATPURUSH
Yet I shall offer you
another simple and natural method.
SATPURUSH
Sit effortlessly.
Let the breath flow freely.
Do not force it.

SATPURUSH
Now visualize an infinity symbol
encircling both eyes.
SATPURUSH
Move your awareness
along that infinite path.
Ghasi Das tries.
GHASI DAS
Gurudev...
I do not fully understand the infinity sign.
Satpurush gently traces
the infinity symbol around his eyes with his fingers.
SATPURUSH
Now...
feel it.
Sudden realization dawns.
A subtle glow appears between the eyebrows.
SATPURUSH
Now I know—
your Sixth Lotus has awakened.
SATPURUSH
Continue that practice later.
SATPURUSH
Now, begin the Seventh Lotus.
Ghasi Das nods.
SATPURUSH
Inhale deeply.
Exhale slowly,

chanting “Ni” silently within.

SATPURUSH

Visualize a rotating energy

at the crown of your head.

Ghasi Das follows.

A white luminous bloom forms at the crown.

SATPURUSH

Remain in this practice, my son.

Satpurush dissolves into light.

Ghasi Das continues—

still, absorbed, infinite.

FADE OUT.

SCENE 14

🎬 दृश्य 14 — "सुषुम्ना का जागरण"

कहानी का शीर्षक: बाबा गुरु घासी दास जी
Year: 1774

📽 हिन्दी

EXT. छाता पहाड़ – शिखर पर विशाल चट्टान – संध्या
समय: शाम छह बजे

डूबते सूर्य की सुनहरी धूप आकाश में फैल रही है।
पक्षियों का कलरव, दूर–दूर तक गूंजता हुआ।
घना जंगल धीरे–धीरे संध्या की गोद में समा रहा है।
विशाल चट्टान पर घासी दास
पंथ अभ्यास पूर्ण कर
पद्मासन में स्थिर बैठे हैं।
आंखें बंद।
शरीर पूर्णतः शांत।
श्वास–प्रश्वास लयबद्ध।
SOUND DESIGN:

हवा की मद्धिम सरसराहट
पक्षियों की अंतिम पुकार
दूर बहते जल की सूक्ष्म ध्वनि
अचानक—
एक प्रकाशपुंज हवा में सघन होता है।

प्रकाश तरंगों के बीच
सतपुरुष दिव्य रूप में प्रकट होते हैं।
वे घासी दास के सम्मुख आसन ग्रहण करते हैं।
कुछ क्षण—पूर्ण मौन।

सतपुरूष
(गंभीर, कोमल स्वर में)
पुत्र...?

घासी दास आँखें खोलते हैं।
दृष्टि पड़ते ही
नम्र प्रणाम करते हैं।

घासी दास
(श्रद्धा से)
प्रणाम गुरुदेव।

सतपुरुष शांत मुस्कान के साथ बोलते हैं।

सतपुरूष
पुत्र...
मूल कमल,
द्वितीय दल कमल,
त्रितीय दल कमल,
चतुर्थ दल कमल,
पंचम दल कमल,
षष्ठ दल कमल
और सप्तम दल कमल—
इन सबका

ध्वनि–उच्चारण

“सा... रे... ग... म... प... ध... नि...” श्वास–योग और मनबल के संतुलन के साथ सहजता से अभ्यास किया जाता है।

VISUAL:
घासी दास की मेरुदंड रेखा में सूक्ष्म प्रकाश प्रवाह।

सतपुरूष (CONT’D)
तुमने इन अति–गुप्त अभ्यासों को सफलतापूर्वक पूर्ण किया है।
इनसे तुम्हारी

मेरुदंड के भीतर स्थित सुषुम्ना नाड़ी अब पूर्णतः जागृत हो चुकी है।

SOUND DESIGN
गूंजती हुई सूक्ष्म कंपन जैसे किसी यंत्र का सक्रिय होना

सतपुरूष (CONT’D)
आज से तुम्हारी मेरुदंड
एक दिव्य यंत्र की भांति कार्य करेगी।
समस्त जगत में जो ज्ञान अदृश्य रूप से दशों दिशाओं में प्रवाहित है—
वह ज्ञान तुम्हारी मेरुदंड द्वारा ग्रहण होकर संचित होगा।

सतपुरूष
पुत्र,
ज्ञान का भंडार
मस्तिष्क में नहीं—
मेरुदंड में संचित होता है।
मस्तिष्क

केवल उस ज्ञान को आवश्यक समय पर पढ़ता, समझता और उपयोग करता है।

घासी दास स्थिर, एकाग्र।
हर शब्द उनके भीतर उतरता हुआ।

सतपुरूष
संसार में ज्ञान सदा विद्यमान है,
किन्तु

अजागृत मेरुदंड

उसे आकर्षित नहीं कर पाती।

थोड़ा विराम।

सतपुरूष
मन—
सबसे सूक्ष्म, सबसे शक्तिशाली और अनंत है।
यह समय के बंधन से मुक्त होकर कल्पना–जगत रच देता है।

सतपुरूष (CONT'D)
परंतु इसकी सबसे बड़ी सीमा यही है—
यह एक समय में केवल एक ही स्थान पर केंद्रित हो सकता है।
मन और विचार अलग नहीं।
जहाँ मन जाता है—
वहीं विचार जन्म लेता है।

सतपुरूष और जब शरीर, श्वास और मन—

एक हो जाते हैं...
तभी
आत्मा का बोध होता है।
इसी समन्वय को ध्यान योग कहते हैं।

गहन मौन।
सतपुरुष उठते हैं।
धीरे–धीरे प्रकाशपुंज में विलीन होते जाते हैं।

सतपुरूष (V.O.)
पुत्र...
आज के लिए इतना ही।

प्रकाश विलीन।
घासी दास पुनः आंखें बंद कर गहरे ध्यान में लीन।

FADE OUT.

🎥 ENGLISH

EXT. CHHATA HILL – ROCK SUMMIT
EVENING
TIME: 6:00 PM

The golden rays of the setting sun spread across the sky.
Birds call out in the fading light.
The dense forest slowly sinks into dusk.
On a massive rock, GHASI DAS

sits in PADMASANA,
eyes closed,
after completing his spiritual discipline.
His breath is calm.
His body still.
SOUND DESIGN:
Soft wind
Distant water flow
Echoing birds
Suddenly—
A SPHERE OF LIGHT forms in the air.
From the radiant waves,
SATPURUSH manifests in human form.
He takes his seat opposite Ghasi Das.
A long silence.

SATPURUSH
(soft, profound)
My son...?

Ghasi Das opens his eyes.
He bows deeply.

GHASI DAS
(reverent)
Pranam, Gurudev.

Satpurush smiles gently.

SATPURUSH

My son…

The Root Lotus,

Second, Third, Fourth,

Fifth, Sixth,

and Seventh Lotuses–

with the sacred sounds

"Sa… Re… Ga… Ma… Pa… Dha… Ni…"

combined with breath and inner strength, must be practiced with ease.

VISUAL:

A subtle luminous current

flows along Ghasi Das's spine.

SATPURUSH (CONT'D)

You have completed

these secret practices successfully.

Your Sushumna Nadi, within the spine, is now fully awakened.

SOUND DESIGN

A deep resonant hum

as if a divine mechanism activates

SATPURUSH (CONT'D)

From today, your spine shall function like a divine instrument, absorbing the knowledge that flows invisibly through all directions of existence.

SATPURUSH

Knowledge is not stored in the brain, my son— it is stored in the spine.

The brain only interprets and utilizes that stored wisdom when required.

Ghasi Das listens, unmoving.

SATPURUSH

The universe is filled with knowledge, yet an inactive spine cannot attract or retain it.

A pause.

SATPURUSH

The mind is the most subtle and powerful force.

It transcends time and creates entire worlds of imagination.

SATPURUSH (CONT'D)

Yet its greatest limitation— it can focus on only one place at a time.

Mind and thought are one.

Where thought arises, the mind exists.

SATPURUSH

And when body, breath, and mind unite— the awareness of the soul arises.

This union is called Meditative Yoga.

Silence.

Satpurush rises.

His form dissolves into light.

SATPURUSH (V.O.)

That is all for today, my son.

The light fades.

Ghasi Das closes his eyes again, deeply immersed in meditation.

FADE OUT

SCENE 15

🎬 दृश्य 15 — "सप्तस्वर महायोग"

कहानी का शीर्षक: बाबा गुरु घासी दास जी
Year: 1774

🎥 हिन्दी

EXT. छाता पहाड़ – शिखर की विशाल चट्टान – प्रातः
समय: सुबह पाँच बजे

पूर्व दिशा में सूर्योदय की प्रथम किरणें।
स्वर्णिम प्रकाश घासी दास के शरीर पर पड़ते ही
मानो उन्हें दिव्य आभा से ढक लेता है।
घासी दास
पंथ अभ्यास और ध्यान योग पूर्ण कर
पद्मासन में शांत बैठे हैं।
आंखें बंद।
मुख पर स्थिर तेज।
SOUND DESIGN:

पक्षियों का मधुर कलरव
फूलों की सुगंध से भरी हवा
नदियों और झरनों की झंकार
प्रकृति स्वयं संगीत बन चुकी है
घासी दास के चारों ओर—
सिंह, बाघ, चीता, भालू, सियार, हाथी, हिरण, नीलगाय, मयूर

सभी शांत, सौम्य।
हिंसा का कोई चिन्ह नहीं।
प्रकृति पूर्ण सामंजस्य में।

आकाश में एक प्रकाशपुंज प्रकट होता है।
धीरे–धीरे वह मानव रूप धारण करता है।
सतपुरुष
घासी दास के सम्मुख अपने आसन पर बैठ जाते हैं।
कुछ क्षण—पूर्ण मौन।

सतपुरूष
(कोमल किंतु आदेशात्मक)
पुत्र...
आँखें खोलो।

घासी दास आँखें खोलते हैं।
सतपुरुष को देख साष्टांग प्रणाम करते हैं।

सतपुरूष
पुत्र!

आज सभी कमल दलों के अभ्यास को
एक–दूसरे में घुमाने की कड़ी और उसकी विधि को अनुभव में लाना है।

घासी दास
पूर्ण ध्यान से सुनते हैं।

सतपुरूष

“सा–रे–गा–मा–पा–धा–नि” के पश्चात “सां” शब्द की ध्वनि–तरंगों से सभी सप्त स्वरों की संयुक्त ऊर्जा का अनुभव करना है।

VISUAL:
सप्त रंगों का सूक्ष्म प्रकाश घासी दास के भीतर घूमता हुआ

सतपुरूष
अब—
पूर्व अभ्यासों की भाँति श्वास को पूरा भीतर भरो।

सतपुरूष (CONT'D) और “सां” का उच्चारण करते हुए सप्त दल कमल से शरीर के अग्र भाग से नीचे की ओर चलो— शिर, नेत्र, नासिका, कंठ, हृदय, उदर, नाभि और अंत में मूल कमल।

सतपुरूष
फिर—
मूल कमल से
द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ
और पुनः
सप्त दल कमल तक
वृत्त (चक्र) पूर्ण करो।

सतपुरूष
इस सम्पूर्ण वृत्त में मन को मेरुदंड और सुषुम्ना में स्थिर रखो।
जहाँ–जहाँ मन जाए—
वहीं उस कमल का स्वर मन ही मन दोहराओ।

सतपुरूष
पहले मुझे देखो।

सतपुरुष
स्वयं अभ्यास कर के दिखाते हैं।

सतपुरूष
मूल कमल — "सा"
द्वितीय — "रे"
तृतीय — "गा"
चतुर्थ — "मा"
पंचम — "पा"
षष्ठ — "धा"
सप्त — "नि"

VISUAL:

रीढ़ की हड्डी के पीछे प्रकाश–रेखा ऊपर उठती हुई

सतपुरूष
अब "सन" ध्वनि के साथ सप्त दल कमल से एक फीट ऊपर उठो— फिर सिर के शिखर से आगे की ओर उतरते हुए "नि–धा–पा–मा–गा–रे–सा" और पीछे की ओर सुषुम्ना में ऊपर चढ़ते हुए वृत्त को पूर्ण करो।

घासी दास
सतपुरुष के साथ–साथ अभ्यास दोहराते हैं।

सतपुरूष
(आशीर्वाद स्वर में)
पुत्र...
इसका अनवरत अभ्यास करो।

सतपुरुष
धीरे–धीरे प्रकाशपुंज में परिवर्तित होकर अदृश्य हो जाते हैं।

घासी दास
आँखें बंद किए अभ्यास में पूर्णतः लीन।

FADE OUT.

🎥 **ENGLISH**

EXT. CHHATA HILL – ROCK SUMMIT – DAWN
TIME: 5:00 AM

The first rays of sunrise touch GHASI DAS,
bathing him in golden light.
He sits in PADMASANA,
having completed the sacred disciplines
taught by Satpurush.
Eyes closed.
Face serene.
SOUND DESIGN:
Melodic birdsong
Fragrant breeze of flowers
Rhythmic flow of rivers and streams
Nature itself becomes music
Around him– Lions, tigers, leopards, bears,fox, elephants, deer, nilgai, peacocks all calm, harmonious, divine.

A SPHERE OF LIGHT descends from the sky.
It slowly assumes the human form of SATPURUSH.
He sits opposite Ghasi Das.
Silence.

SATPURUSH
(gently)
My son...
Open your eyes.

Ghasi Das opens his eyes and bows deeply.

SATPURUSH
Today, you shall learn how to circulate all the lotus centers as one continuous flow.

Ghasi Das listens intently.

SATPURUSH
After the sounds "Sa–Re–Ga–Ma–Pa–Dha–Ni," experience the combined energy through the vibration of "San."

VISUAL:
Seven subtle colors rotating within Ghasi Das

SATPURUSH
Inhale fully— and while chanting "San," move from the Seventh Lotus down the front of the body— head, eyes, nose, throat, chest, abdomen, navel— to the Root Lotus.

SATPURUSH

Then move upward again—

Root to Second, Third, Fourth, Fifth, Sixth— back to the Seventh Lotus, completing the circular flow.

SATPURUSH

Keep your awareness in the spine and Sushumna.

Wherever the mind travels, mentally chant the sound of that lotus.

SATPURUSH

First—watch me.

Satpurush demonstrates.

SATPURUSH

Root — "Sa"

Second — "Re"

Third — "Ga"

Fourth — "Ma"

Fifth — "Pa"

Sixth — "Dha"

Seventh — "Ni"

VISUAL:

A luminous line rises along the spine

SATPURUSH

Now rise above the Seventh Lotus with "San," descend forward with Ni–Dha–Pa–Ma–Ga–Re–Sa, and ascend again through the spine, completing the sacred circuit.

Ghasi Das practices along with him.

SATPURUSH (blessing)

Practice this unceasingly, my son.

Satpurush dissolves into radiant light and disappears.

Ghasi Das remains seated, eyes closed, immersed in continuous meditation.

FADE OUT.

SCENE 16

🎬 दृश्य 16 — “पंचमहाभूत सिद्धि”

कहानी का शीर्षक: बाबा गुरु घासी दास जी
Year: 1774

📽 हिन्दी

EXT. छाता पहाड़ – शिखर की विशाल चट्टान – संध्या
समय: शाम छह बजे

सूर्य अस्त होने को है।
आकाश में लाल–नारंगी आभा।

SOUND DESIGN:
दूर–दूर तक बहते झरनों और नदियों की गूँज
पक्षी अपने घोंसलों की ओर लौटते हुए
वन धीरे–धीरे मौन की ओर बढ़ता हुआ
घासी दास
पद्मासन में
पूर्ण मौन।
देह स्थिर, श्वास सूक्ष्म।

आकाश में
एक प्रकाशपुंज प्रकट होता है।
वह धीरे–धीरे
मानव रूप धारण करता है।

सतपुरुष
घासी दास के सम्मुख
आसन ग्रहण करते हैं।
कुछ क्षण—पूर्ण निस्तब्धता।

सतपुरूष
पुत्र घासी दास...
आज मैं तुम्हें पंच महाद्रव्यों के नियंत्रण की विधि सिखाऊँगा।

घासी दास
तैयार मुद्रा में
श्रद्धा से सुनते हैं।

सतपुरूष
पर उससे पहले—
मूल कमल से
सप्त दल कमल तक
मेरुदंड में
घुमाने के अभ्यास में
पूर्ण पारंगत होना आवश्यक है।

सतपुरूष
कल जो अभ्यास बताया था—
उसे ध्यान से करो।

VISUAL:
सतपुरुष स्वयं अभ्यास कर के दिखाते हैं—

मूल कमल से सप्त दल

कमल
और फिर
शरीर के अग्र भाग से
पीछे मेरुदंड में
तीव्र गति से
सभी कमल घूमते हुए
प्रकाश–चक्र बनाते हैं।
अचानक—
सतपुरुष अदृश्य।

घासी दास
आश्चर्य से देखते रह जाते हैं।
कुछ क्षण बाद—
सतपुरुष पुनः प्रकट।

सतपुरूष
(मुस्कराकर)
पुत्र...
मुझे देखा?

घासी दास (आश्चर्य से)
हाँ गुरुजी...
आप कहाँ चले गए थे?

सतपुरूष
यही तुम्हें सीखना है।

घासी दास (विस्मय से)
क्या मैं भी ऐसा कर सकता हूँ?

सतपुरूष
हाँ पुत्र।

सतपुरूष
अपने सभी कमलों को
मेरुदंड से उठाते हुए
तेज गति से
मन के पूर्ण योग से घुमाओ—
और
जिस स्थान पर जाना हो
उसका संकल्प करो।
स्थान कितना भी दूर क्यों न हो—
तुम
समय के बंधन से ऊपर उठकर
तुरंत पहुँच जाओगे।

सतपुरुष और घासी दास
एक साथ अभ्यास करते हैं।
अचानक—
घासी दास अदृश्य।
सतपुरुष वहीं खड़े रहते हैं।

कुछ समय बीतता है...
घासी दास वापस नहीं आते।
सतपुरुष
ध्यान में देखते हैं—

VISION SEQUENCE
घासी दास अपने घर में हैं परिवारजनों से मिलते हुए।

सतपुरुष
तुरंत अदृश्य होते हैं—
CUT TO:
एक क्षण में
घासी दास
ध्यान स्थल पर
पुनः प्रकट।
——
सतपुरूष
(हल्की नाराज़गी में)
पुत्र!
तुम्हें
तुरंत लौटना था।

घासी दास
(लज्जित)
क्षमाप्रार्थी हूँ गुरुजी।

सतपुरूष
अभी तुम अभ्यास में हो।
पूर्ण सिद्धि के बाद
स्वेच्छा से रुक सकोगे।

सतपुरूष
अब—
इच्छित स्थान पर जाकर
तुरंत लौटना है।
यह केवल अभ्यास है।
दोनों पुनः अभ्यास करते हैं।

घासी दास
फिर अदृश्य—
कुछ क्षण बाद
वापस लौट आते हैं।

सतपुरुष
मुस्कराते हैं।
घासी दास
प्रणाम करते हैं।

सतपुरूष
पुत्र...
तुमने
इस अभ्यास को
सफलतापूर्वक
कर लिया है।

सतपुरूष
अब अपने आसन पर बैठो—
और
पंचतत्त्व अभ्यास करो।

घासी दास
आसन ग्रहण करते हैं।

सतपुरूष
अपने
मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
और

सभी इंद्रिय–ज्ञान
का त्याग कर—
अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को
मिट्टी मान लो।
तुम
पृथ्वी हो जाओ।

घासी दास
अभ्यास करते हैं।
कुछ समय बाद—

सतपुरूष
अब
जल, वायु, अग्नि
और
आकाश
होने का भाव करो।

घासी दास
पाँचों तत्त्वों में
लय हो जाते हैं।

सतपुरूष
अब ध्यान से सुनो—

सतपुरूष
पाँचों तत्त्वों में
विभक्त होते हुए भी—
तुम

आत्मा हो।
प्रेम, भाव, चेतना—
छठा तत्त्व।

सतपुरूष
इस भाव से
पाँचों तत्त्वों को देखो, नियंत्रित करो—
और इस विशाल आकाश में विलीन कर दो।

घासी दास वैसा ही करते हैं।
अचानक— घासी दास प्रकाशपुंज में बदलकर अदृश्य।

सतपुरुष आकाश की ओर देखते हैं।
कुछ क्षण बाद—

सतपुरूष
पुत्र घासी दास...
अब पाँचों तत्त्वों को अपने भाव से एक करो।

धीरे–धीरे—
प्रकाशपुंज मानव रूप लेता है।
घासी दास
पुनः प्रकट।

सतपुरूष (संतोषपूर्वक)
पुत्र...
तुम सफल हुए।

सतपुरूष
सभी ध्यान योगों का
अनवरत अभ्यास
आवश्यक है।

सतपुरुष
प्रकाशपुंज में बदलते हुए
अदृश्य।

घासी दास
शांत पद्मासन में स्थिर।

FADE OUT.

📽️ **ENGLISH**

EXT. CHHATA HILL – ROCK SUMMIT – EVENING
TIME: 6:00 PM

The sun is about to set.
The sky glows red and gold.
SOUND DESIGN:
Echoing streams and rivers
Birds returning to their nests
The forest slowly entering silence
GHASI DAS
sits in PADMASANA, completely silent, motionless.

A SPHERE OF LIGHT appears in the sky.

It slowly transforms into SATPURUSH, who sits before Ghasi Das.

Silence.

SATPURUSH

My son, Ghasi Das…

Today I shall teach you the method to control the Five Great Elements.

Ghasi Das listens attentively.

SATPURUSH

But first, master the circulation from the Root Lotus to the Seventh Lotus within the spine.

SATPURUSH

Perform yesterday's practice carefully.

VISUAL:

Satpurush demonstrates—

All lotus centers spinning rapidly through the spine, forming luminous energy circuits.

Suddenly—

SATPURUSH VANISHES.

Ghasi Das watches in amazement.

Moments later—

Satpurush reappears.

SATPURUSH
Did you see me, my son?

GHASI DAS
Where did you go, Guruji?

SATPURUSH
This is what you must learn.

GHASI DAS
Can I do this too?

SATPURUSH
Yes.

SATPURUSH
Rotate all your lotus centers
with full mental force,
and visualize the destination—
no matter how far—
you will reach it instantly,
beyond the limits of time.

They practice together.
Suddenly—
GHASI DAS DISAPPEARS.
Satpurush waits.
After a while—

Satpurush perceives him in meditation—

VISION
Ghasi Das is at home, meeting his family.

Satpurush instantly vanishes—
CUT TO:
Ghasi Das reappears at the meditation site.

SATPURUSH
(slightly stern)
You should have returned immediately.

GHASI DAS
Forgive me, Guruji.

SATPURUSH
You are still in practice.
Mastery comes later.

SATPURUSH
Now go—
and return instantly.

They repeat the practice.
Ghasi Das disappears
and returns quickly.
Satpurush smiles.

SATPURUSH
You have succeeded.

SATPURUSH
Now sit—
and practice the Five Elements.

Ghasi Das sits.

SATPURUSH
Abandon mind, intellect, ego, and all sensory perceptions.
Become Earth.

Ghasi Das practices.

SATPURUSH
Now become
Water, Air, Fire, and Space.

Ghasi Das merges into all five.

SATPURUSH
Now listen—
Even while divided into five,
you are the Soul—
Love, awareness—
the Sixth Element.

SATPURUSH

From this state, observe and release the five elements into the vast sky.

Ghasi Das dissolves into light and disappears.

Moments later—

SATPURUSH

Unite all five elements again.

Ghasi Das reappears in human form.

SATPURUSH

(smiling)

You have succeeded, my son.

SATPURUSH

Practice all meditative disciplines unceasingly.

Satpurush dissolves into light.

FADE OUT.

SCENE 17

🎬 दृश्य 17 — “सत लोक की यात्रा”

EXT. छाता पहाड़ का शिखर, सोनाखान का घना जंगल — भोर (सुबह 5 बजे)

घने जंगल के बीच, विशाल चट्टान के ऊपर।
कोहरा हल्का-हल्का तैर रहा है। दूर झरनों की मद्धिम ध्वनि। पक्षियों की पहली पुकार।
घासी दास और सतपुरुष आमने-सामने पद्मासन में बैठे हैं।
सूरज की पहली किरणें चट्टान को छूती हैं।
कुछ पल का मौन।
सतपुरुष (शांत, गूंजती हुई आवाज़ में)
पुत्र... अब अंतिम शिक्षा को ध्यान से सुनो।
घासी दास और अधिक सचेत हो जाते हैं। आँखें बंद, देह स्थिर।
सतपुरुष
पुत्र, अब अपने शरीर से अपनी आत्मा को सत लोक की यात्रा के लिए तैयार करो।
तुमने जो शिक्षा ली है, उसे स्मरण करो।
शिक्षा से पहले भी तुम वही थे... और शिक्षा के बाद भी तुम वही हो।
केवल समझ और उपयोग का ज्ञान मिला है।
दृष्टि बदली है... पर जो जानने वाला है, वह सदा एक ही रहा है।
हल्की हवा चलती है। पत्ते सरसराते हैं।
सतपुरुष (जारी)
मैं जिस “मैं” की ओर संकेत कर रहा हूँ, वही जीव-भाव है।

जब जीव-भाव यह जान लेता है कि उसकी उपस्थिति में ही सब गतिविधियाँ होती हैं,
तभी सच्ची आत्मा का उदय होता है।
और जब वह जान लेता है कि वही "मैं" हर स्थिति में विद्यमान है,
तो वह आत्म-बोध के निकट पहुँच जाता है।
और जो यह जान ले कि वह समस्त जगत में एक-सा है...
वही परमात्मा को पा लेता है... और सदा के लिए मुक्त हो जाता है।
घासी दास का चेहरा शांत, गहन एकाग्र।
सतपुरुष
पुत्र, तुम सदा से शुद्ध हो।
अपने सच्चे स्वरूप को भूल जाने से ही भय और संदेह उत्पन्न होते हैं।
तुम निर्भय हो। तुम समस्त संसार में एक-से व्याप्त हो।
इस संसार का प्रत्येक तत्व तुम्हारे ज्ञान के लिए है।
सबको जानने का अधिकार तुम्हारा है...
पर तुम्हें समझाने का अधिकार किसी और को नहीं।
अब... सत लोक की यात्रा करो।
घासी दास धीरे से सिर झुकाते हैं।
घासी दास
(विनम्रता से)
मैं सुन रहा हूँ, गुरुजी।
सतपुरुष
अब अपने "मैं-भाव" को सत लोक के लिए तैयार करो।
मेरे साथ अभ्यास करो।
घासी दास ध्यान योग मुद्रा में बैठ जाते हैं। साँस स्थिर।
सतपुरुष (मंत्र-सी लय में)
तुम न शरीर हो...
न मन...
न इंद्रियाँ...

न बुद्धि...
न चित्त...
न अहंकार...
ये सब तुम में रहते हैं, पर तुम ये नहीं हो।
कैमरा घासी दास के चेहरे पर क्लोज़-अप।
धीरे-धीरे प्रकाश फैलता है।
विज़ुअल ट्रांज़िशन —
घासी दास की सूक्ष्म आत्मा प्रकाश-पुंज के रूप में उठती है।
सतपुरुष के साथ सत लोक की ओर प्रवाहित होती है।

EXT. सत लोक — अलौकिक आयाम

अनंत प्रकाश।
न सूर्य, न छाया — फिर भी सब कुछ तेजस्वी।
कोई घर, कोई शहर, कोई पृथ्वी-सा आकार नहीं।
पूरा अस्तित्व ही जैसे एक अनंत निवास।
सतपुरुष (आवाज़ चारों ओर गूंजती हुई)
देखो, पुत्र...
यहाँ सब कुछ अनंत सूर्य की भाँति प्रकाशमान है।
यहाँ न धूप है, न छाँव।
यहाँ न कोई सीमाएँ हैं, न दिशा की कैद।
तुम किसी भी ओर, किसी भी रूप में जा सकते हो।
यहाँ केवल अनंत दृश्य हैं... और अनंत अनुभूति।
यहाँ सब अमर है।
घासी दास विस्मय और शांति से उस अनंतता को देखते हैं।

विज़ुअल ट्रांज़िशन —
दोनों की चेतना फिर से शरीर में समाती है।

EXT. छाता पहाड़ का शिखर — भोर

घासी दास आँखें खोलते हैं। हवा शांत। जंगल स्थिर।

सतपुरुष

कुछ समझ में आया, पुत्र?

घासी दास (नम आँखों, शांत मुस्कान के साथ)

हाँ, गुरुजी... परम अनुभूति हुई।

सतपुरुष

अब तुम्हारी शिक्षा पूर्ण हुई।

इस जंगल से लौट जाओ... और समस्त प्राणियों को सत का ज्ञान दो।

सतपुरुष का शरीर तेज प्रकाश-पुंज में बदलने लगता है।

घासी दास

गुरुदेव...!

प्रकाश घासी दास के भीतर समा जाता है।

सतपुरुष अदृश्य हो जाते हैं।

घासी दास अकेले बैठे हैं... पर चेहरे पर अटूट शांति।

FADE OUT.

🎬 SCENE 17 – "THE JOURNEY TO SAT LOK" (ENGLISH)

EXT. CHHATA HILL PEAK, DENSE FOREST OF SONAKHAN – DAWN (5:00 AM)

A massive rock at the peak.

Mist drifts slowly. The sound of distant waterfalls. First calls of birds.

GHASI DAS and SATPURUSH sit in lotus posture, facing each other.

The first rays of sunlight touch the stone.

A moment of SILENCE.

SATPURUSH (calm, resonant)

My son… listen carefully to the final teaching.

Ghasi Das becomes more alert, deeply focused.

SATPURUSH

Prepare your soul to travel to Sat Lok, beyond the body.

Remember what you have learned.

Before learning, you were the same… and after learning, you are still the same.

Only understanding and the knowledge of application have changed.

Your vision has changed… but the one who knows has always been the same.

A gentle wind moves through the trees.

SATPURUSH

The "I" I point to is the living essence.

When it realizes that all activity happens in its presence,

the true Self is born.

When it knows that this "I" exists in every condition,

it comes close to Self-realization.

And when it knows it is the same in the entire universe,

it attains the Supreme Self… and becomes forever free.

Ghasi Das remains still, deeply absorbed.

SATPURUSH

You have always been pure.

Forgetting your true nature creates fear and doubt.

You are fearless. You are present equally in all existence.

Every element of this world exists for your knowing.

You have the right to know everything…

but no one else has the right to define you.

Now… travel to Sat Lok.

Ghasi Das bows his head slightly.

GHASI DAS

(with humility)

I am listening, Master.

SATPURUSH

Prepare your sense of "I" for Sat Lok.

Practice with me.

Ghasi Das sits in deep meditation posture.

SATPURUSH (like a chant)

You are not the body…

Not the mind…

Not the senses…

Not the intellect…

Not the memory…

Not the ego…

All these exist in you… but you are not them.

Close-up on Ghasi Das's face.

A soft light begins to glow.

VISUAL TRANSITION –

Ghasi Das's subtle soul rises as a sphere of light,

moving with Satpurush toward SAT LOK.

EXT. SAT LOK — A TRANSCENDENT REALM

Infinite light.

No sun, no shadow—yet everything shines.

No houses, no cities, no earthly forms.

The entire existence feels like one boundless home.

SATPURUSH (voice echoing everywhere)

Look, my son...

Here, everything shines like an infinite sun.

There is no day, no night.

No limits. No directions.

You can move anywhere, in any way.

Here, there are endless visions... and endless experiences.

Here, everything is immortal.

Ghasi Das looks around, filled with awe and deep peace.

VISUAL TRANSITION —

Their consciousness returns to their bodies.

EXT. CHHATA HILL PEAK — DAWN

Ghasi Das opens his eyes. The forest is silent.

SATPURUSH

Did you understand, my son?

GHASI DAS

(soft smile, eyes moist)

Yes, Master... it was a supreme experience.

SATPURUSH

Your training is now complete.

Return from this forest…

and give the knowledge of Truth to all beings.

Satpurush's body turns into a pillar of light.

GHASI DAS

Gurudev…!

The light enters Ghasi Das.

Satpurush disappears.

Ghasi Das sits alone—yet filled with unshakable peace.

FADE OUT.

SCENE 18

🎬 दृश्य 18 — "विश्वास की परीक्षा" हिन्दी

EXT. सोनाखान जंगल से बाहर जाती पगडंडी — दिन (1775)

घने जंगल से निकलती कच्ची राह।
घासी दास पैदल चलते आ रहे हैं—कंधे तक बढ़े बाल, लंबी दाढ़ी-मूँछ, कमर में धोती, ऊपर खुला शरीर।
एक हाथ में तुम्बा (पानी का पात्र), दूसरे में लाठी।
रास्ते में गाँव वाले रुक-रुक कर देखते हैं।
ग्रामीण 1 (फुसफुसाकर)
कौन साधु आ रहा है?
ग्रामीण 2
जवान है... चेहरा तेजस्वी है... कोई दिव्य संत लगता है।
कुछ लोग प्रणाम करते हैं, कुछ आश्चर्य से घूरते हैं।
फुसफुसाहटें बढ़ती जाती हैं।

EXT. गिरौदपुरी गाँव के पास — दोपहर (लगभग 1:30 PM)

घासी दास गाँव के करीब पहुँचते हैं।
दूसरी ओर से 40–50 लोग एक कतार में, बिल्कुल मौन, चले आ रहे हैं।
घासी दास रुक जाते हैं।
कतार में कुछ अपने परिवार के लोग दिख जाते हैं—पर कोई उन्हें पहचान नहीं पाता।
घासी दास एक बुज़ुर्ग (काका के रिश्तेदार) से पूछते हैं—
घासी दास
काका... क्या हुआ है?
बुज़ुर्ग चौंकते हैं।

बुज़ुर्ग (कंपती आवाज़ में)
संत महाराज... हमारी बहू... गुजर गई...
यह सुनते ही घासी दास के भीतर जैसे बिजली कौंध जाती है।
घासी दास (ज़ोर से)
सफुरा!
भीड़ इकट्ठी हो जाती है।
ग्रामीण
आप कौन हैं, संत जी?
घासी दास
मैं तुम्हारे घासी हूँ... नहीं पहचाने क्या?
मेरी सफुरा को क्या हुआ?
भीड़ में फुसफुसाहट—
ग्रामीण
ये तो सफुरा के पति... अपना घासी है!
परिवार वाले आगे आते हैं।
काका (रोते हुए)

कुछ दिनों से किसी से बात नहीं करती थी...
खाना भी छोड़ दिया था...
बस एक टक देखती रहती थी...
शायद तुम्हारी राह देख रही थी, बेटा...
आज सुबह देखा तो साँस और प्राण... दोनों नहीं थे...
घासी दास की आँखों में करुणा और दृढ़ता।
घासी दास
जल्दी चलो! सफुरा को निकालो!
उसे कुछ नहीं हुआ है... तुम लोगों को इंतज़ार करना चाहिए था!
लोग एक-दूसरे को देखते हैं।
ग्रामीण (धीरे से)

दुख से घासी का होश चला गया है...
लोग समझाने लगते हैं—
ग्रामीण
जो आया है, उसे जाना ही है... जीवन का कोई ठिकाना नहीं...
घासी दास (दृढ़)
तुम मेरी बात समझो!
सफुरा को कुछ नहीं हुआ है!
उसे अभी निकालना होगा!
एक बहुत बूढ़ा, समझदार आदमी आगे आता है।
बुज़ुर्ग
बेटा घासी... शान्त हो जा...
जो चला गया, वो लौटकर नहीं आता...
घासी दास (गिड़गिड़ाकर)
बाबा... मेरी सफुरा ज़िंदा है... मेरा विश्वास करो...
गाँव का पटेल आगे बढ़ता है।
पटेल
पूरे गाँव और तुम्हारे परिवार ने देखा है...
क्या हम इतने अज्ञानी हैं कि किसी ज़िंदा आदमी को दफ़ना दें?
घासी दास (आँखों में आग)
सफुरा को जीना होगा!
और अगर मर भी गई है... तो मैं उसे ज़िंदा करूँगा!
भीड़ में सनसनी फैल जाती है।
खबर आग की तरह फैलती है।
दूर-दूर से लोग गिरौदपुरी पहुँचने लगते हैं—लाखों की भीड़।
अंग्रेज़ पुलिस इंस्पेक्टर सिपाहियों के साथ पहुंचते है।
इंस्पेक्टर (घोषणा करता हुआ)
यहाँ पर भीड़ इकट्ठी नहीं होगी!
कब्र की खुदाई की इजाज़त नहीं दी जाएगी!

लेकिन भीड़ रुकती नहीं।
इंस्पेक्टर (सख़्त)
अगर यह आदमी पहले किसी मरे हुए जानवर को ज़िंदा करके दिखा दे—
तभी इसकी पत्नी की कब्र खोदने देंगे।
वरना अंग्रेज़ी क़ानून के तहत गिरफ़्तार किया जाएगा!
एक मरा हुआ गाय का बछड़ा लाया जाता है।
सिपाही उसे घासी दास के सामने रखते हैं।
इंस्पेक्टर
लो, घासी दास... इसे ज़िंदा करके दिखाओ!
भीड़ सन्नाटा साध लेती है।
घासी दास शान्त हैं।
वह तुम्बा से पानी अपनी हथेली में लेते हैं, आँखें बंद करते हैं, मन ही मन कुछ कहते हैं...
और पानी बछड़े पर छिड़क देते हैं।
एक पल का सन्नाटा...
फिर—बछड़ा उछलकर खड़ा हो जाता है!
भीड़ फट पड़ती है—
भीड़
जय गुरु बाबा घासी दास की जय!
थोड़ी देर बाद एक कोतवार साँप के काटने वजह से मरे हुए बच्चा को लाता है।
बच्चा को ज़मीन पर लिटाया जाता है।
फिर वही क्रिया—
पानी, प्रार्थना, बूँदें बच्चे के मुँह में...
बच्चा हिलता है... उठकर बैठ जाता है!
भीड़ फिर गूँज उठती है—
भीड़

जय बाबा गुरु घासी दास जी!
अंग्रेज़ अफ़सर स्तब्ध।
इंस्पेक्टर (मजबूर होकर)
ठीक है...
कब्र खोदने की अनुमति है।
अगर तुमने अपनी पत्नी को ज़िंदा कर दिया... तो हमारा आदेश रहेगा।
अगर नहीं कर पाए... तो कोई आदेश नहीं होगा।
घासी दास मुस्कुराते हुए मौन रहते हैं और श्मशान की ओर बढ़ते हैं।

EXT. श्मशान — शाम (लगभग 5 बजे)

सूरज ढल रहा है।

लोग खुदाई करते हैं।
सफुरा का शरीर निकाला जाता है।
घासी दास आगे आते हैं।

तुम्बा से पानी लेते हैं।
आँखें बंद। मन ही मन प्रार्थना।
वे पानी की बूँदें सफुरा के मुँह में टपकाते हैं।
एक पल...
फिर दूसरा...
सफुरा का शरीर हिलता है।
वह आँखें खोलती है... उठकर बैठ जाती है।
घासी दास को देखकर मुस्कुराती है... और उनके चरणों में गिर जाती है।
लाखों की भीड़ गूँज उठती है—
भीड़
जय गुरु घासी दास जी!
जय माता सफुरा!

घासी दास शान्त खड़े हैं—आँखों में करुणा, चेहरे पर अडिग शांति।

FADE OUT.

🎬 SCENE 18 – "THE TRIAL OF FAITH" (ENGLISH)

EXT. PATH OUTSIDE SONAKHAN FOREST – DAY (1775)

Ghasi Das walks alone.

Long hair to his shoulders, long beard, a dhoti around his waist, bare upper body.

A tumbā (water gourd) in one hand, a staff in the other.

Villagers stop and stare.

VILLAGER 1 (whispering)

Who is this sadhu?

VILLAGER 2

He looks young… radiant… almost divine.

Some bow. Some just watch in awe.

EXT. NEAR GIROUDPURI VILLAGE – AFTERNOON (1:30 PM)

Ghasi Das approaches the village.

From the other side, 40–50 people walk in a silent line.

He stops.

He recognizes a few family members—but no one recognizes him.

He asks an elderly man.

GHASI DAS

Uncle… what happened?

ELDER (shaken)

Holy man… our daughter-in-law… she has passed away…

Ghasi Das freezes.

GHASI DAS (shouts)

Safura!

People gather.

VILLAGER

Who are you, sadhu?

GHASI DAS

I am your Ghasi… don't you recognize me?

What happened to my Safura?

Whispers spread—

VILLAGER

He is Safura's husband… Ghasi!

Family members step forward.

UNCLE (crying)

She stopped talking… stopped eating…

Just kept staring into space…

Maybe she was waiting for you…

This morning… she had no breath left…

Ghasi Das, filled with grief and resolve—

GHASI DAS

Take me to her. Dig her out!

Nothing has happened to her! You should have waited!

People murmur.

VILLAGER

The shock has broken him…

They try to console him.

VILLAGER

Life and death are beyond us…

GHASI DAS (firm)

Listen to me! She is not dead!

An old wise man steps forward.

OLD MAN

My son… calm down…

Those who leave do not return…

GHASI DAS (pleading)

Baba… she is alive… believe me…

The village headman steps in.

HEADMAN

The whole village saw it.

Do you think we would bury someone alive?

GHASI DAS (burning with certainty)

She will live!

And if she is dead… I will bring her back!

Shock spreads.

News travels fast.

People flood into Giroudpuri—a massive crowd.

British police arrive.

INSPECTOR

No crowd! No digging!

The crowd refuses to disperse.

INSPECTOR

First, prove it.

Bring any dead animal back to life.

Only then we allow the grave to be opened.

Fail—and you will be arrested.

A dead calf is brought.

INSPECTOR

Go on, Ghasi Das. Show us.

Silence.

Ghasi Das takes water in his palm, closes his eyes, whispers a prayer—

and sprinkles the water on the calf.

A beat.

Then—the calf jumps up alive!

The crowd erupts—

CROWD

Victory to Guru Baba Ghasi Das!

Then a kotwar brings a dead boy bitten by a snake.

The boy is laid on the ground.

Again—

Water. Prayer. Drops into the boy's mouth.

The boy moves… sits up!

The crowd roars again.

British officers are stunned.

INSPECTOR (reluctantly)

Fine. You may open the grave.

If you bring her back… our order stands.

If not… there will be consequences.

Ghasi Das walks silently toward the cremation ground.

EXT. CREMATION GROUND — EVENING (5:00 PM)

The sun is setting.

The grave is dug.

Safura's body is brought out.

Ghasi Das steps forward.

Takes water. Closes his eyes. Prays.

He lets the drops fall into Safura's mouth.

A moment...

Then—she moves.

Opens her eyes. Sits up.

Smiles at Ghasi Das and falls at his feet.

The massive crowd explodes—

CROWD

Victory to Guru Ghasi Das!

Victory to Mother Safura!

Ghasi Das stands still—calm, compassionate, unshaken.

FADE OUT.

SCENE 19

🎬 दृश्य 19 — "शक्ति और संयम की परीक्षा"
(SCENE 19 — "THE TEST OF POWER AND RESTRAINT")

📜 हिन्दी

INT. घासी दास का निजी कक्ष — गिरौदपुरी — रात्रि
समय: रात लगभग 8 बजे

कमरे में एक दीया टिमटिमा रहा है।
बाहर सन्नाटा है — केवल दूर कहीं झींगुरों की आवाज़।
घासी दास ज़मीन पर पद्मासन में बैठे हैं।
आँखें बंद। श्वास-प्रश्वास गहरी और स्थिर।
धीरे-धीरे उनके शरीर के चारों ओर हल्का प्रकाश फैलने लगता है।
प्रकाश गाढ़ा होता जाता है।
दीये की लौ भी काँपने लगती है।
अचानक —
घासी दास के शरीर से एक प्रकाश-पुंज बाहर निकलता है।
वह प्रकाश आकार लेता है...
और सतपुरुष का दिव्य रूप प्रकट होता है।
घासी दास चौंकते हैं, तुरंत नतमस्तक हो जाते हैं।
घासी दास
(विनम्रता से)
गुरुजी... आप?
सतपुरुष का स्वर गंभीर, पर करुणामय।
सतपुरुष
पुत्र घासी दास...
आज तुमने जो किया —

वह अप्राकृतिक घटना है।
घासी दास का मुख शांत, पर आँखों में चिंता।
सतपुरुष (जारी)
तुमने आज
एक बछड़े को,
एक बालक को
और अपनी पत्नी सफुरा को
जीवन दिया है।
(क्षण भर रुकते हैं)
पर सोचो...
यदि कल से
संसार भर के लोग
अपने मृत परिजनों को जीवित करने
तुम्हारे पास आने लगें —
तो क्या करोगे?
सतपुरुष का स्वर गूँजने लगता है।
सतपुरुष
क्या तुम
पूरे जगत की लाशों को
जीवन दे पाओगे?
या तुम्हारे द्वार पर
मृत शरीरों का ढेर लग जाएगा?
घासी दास का सिर झुक जाता है।
सतपुरुष
जो आया है —
वह जाएगा।
यही प्रकृति का नियम है।
तुम्हें अपनी शक्तियों पर

नियंत्रण रखना होगा।
अभी —
अनवरत अभ्यास करो।
सतपुरुष (सख़्ती और स्नेह के साथ)
मैंने तुम्हें जो कार्य दिया है —
उसे अटल विश्वास से करो।
सभी प्राणियों को
एक समान दृष्टि से देखो।
तुममें सब है...
और सबमें तुम हो।
(गंभीर दृष्टि)
वचन दो, पुत्र —
आज के बाद
ऐसा कोई कार्य नहीं करोगे
जो प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करे।
घासी दास की आँखों से करुणा छलक पड़ती है।
घासी दास
(काँपते स्वर में)
गुरुदेव...
मैं क्षमा चाहता हूँ।
मैं वचन देता हूँ।
सतपुरुष के चेहरे पर हल्की मुस्कान।
सतपुरुष
मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ।
अब जाओ —
संसार को सत्य का मार्ग दिखाओ।
जन-जन तक जाओ,
और वही ज्ञान सिखाओ

जो मैंने तुम्हें दिया है।
याद रखो —
जीवन देना महान है...
पर सत्य का ज्ञान देना
उससे करोड़ों गुना पुण्य है।
सत्य का अलख जगाओ।
सतपुरुष पुनः प्रकाश-पुंज में बदलते हैं
और धीरे-धीरे
घासी दास के शरीर में समा जाते हैं।
कमरा फिर शांत।
घासी दास की आँखों से
एक आँसू टपकता है।

EXT. गिरौदपुरी गाँव — अगली सुबह

भोर की रोशनी।
घासी दास पंथ-अभ्यास और ध्यान पूर्ण कर
घर से बाहर निकलते हैं।
जैसे ही वे बस्ती में प्रवेश करते हैं —
गाँववाले (समवेत स्वर)
बाबा गुरु घासी दास जी की जय!
लोग चरणों में गिरते हैं।
कोई रोता है, कोई हाथ जोड़ता है।
लोग
बाबा...
किसी को धन चाहिए...
किसी को पुत्र...
किसी को बीमारी से मुक्ति...
धीरे-धीरे

भीड़ हज़ारों में बदल जाती है।
अब वे केवल घासी दास नहीं —
बाबा गुरु घासी दास जी हैं।
घासी दास धैर्यपूर्वक
सबकी बातें सुनते हैं।
अचानक वे हाथ उठाकर
भीड़ को शांत करते हैं।
बाबा गुरु घासी दास जी
भाइयों...
इतने लोग...
इतनी समस्याएँ...
क्या आप सब
अपनी समस्याओं का समाधान
स्वयं नहीं कर सकते?
मैं एक मनुष्य हूँ —
कितनों का भार उठाऊँ?
(स्वयं की ओर संकेत)
जैसा यह शरीर मेरा है —
वैसा ही आपका भी है।
आप मुझमें
जिस शक्ति को देख रहे हैं —
वही शक्ति
आप सबमें विद्यमान है।
आप केवल उससे
अनजान हैं।
मैं आपको
वह सत्य का ज्ञान देना चाहता हूँ
जिससे आप

स्वयं मेरे समान समर्थ बन सकें।
क्या आप
सीखना चाहते हैं?
भीड़ कुछ पल स्तब्ध।
फिर —
भीड़
(उत्साह से)
हाँ!
हम सीखना चाहते हैं!
बाबा गुरु घासी दास जी
पंथ-अभ्यास का प्रदर्शन करते हैं।
बाबा गुरु घासी दास जी
जैसा मैं कर रहा हूँ —
वैसा ही आप भी करें।
कुछ लोग अभ्यास करते हैं।
कुछ केवल देखते हैं।
कुछ कानाफूसी करते हैं।
लोग (धीमे स्वर में)
इससे क्या होगा?
धीरे-धीरे
भीड़ कम होने लगती है।
बाबा फिर अभ्यास करते हैं —
लाभ समझाते हैं।
कुछ लोग टिके रहते हैं।
बहुत से लोग लौट जाते हैं।
कुछ देर बाद
केवल चंद लोग शेष।
बाबा गुरु घासी दास जी

क्षण भर उदास होते हैं।
फिर दृढ़ कदमों से
अगले गाँव की ओर बढ़ जाते हैं।
कुछ लोग
उनके साथ चल पड़ते हैं।
कैमरा पीछे रह जाती भीड़ पर ठहरता है...
और आगे बढ़ते बाबा पर फ़ेड आउट।

🎥 ENGLISH

INT. GHASI DAS' PRIVATE ROOM – GIROUDPURI – NIGHT
TIME: AROUND 8 PM

A single oil lamp flickers.

The room is silent. Distant crickets.

GHASI DAS sits in Padmasana, eyes closed.

Breathing calm. Focused.

A faint glow begins to radiate from his body.

The glow intensifies.

The lamp flame trembles.

Suddenly –

A BALL OF LIGHT emerges from his body.

It slowly takes form...

SATPURUSH appears.

GHASI DAS bows instantly.

GHASI DAS

(reverently)

Guruji… you?
SATPURUSH
My son, Ghasi Das…
What you did today
was against the laws of nature.
Ghasi Das listens, silent.
SATPURUSH
You restored life
to a calf,
a child,
and your wife Safura.
But think…
If tomorrow the whole world comes to you to revive their dead –
What will you do?
SATPURUSH
Will you revive
every corpse on earth?
Or will piles of the dead
gather at your door?
Ghasi Das lowers his head.
SATPURUSH
What comes – must go.
That is nature's law.
You must master
your own powers.
Practice continuously.
The task I have given you –

do it with unwavering faith.
See all beings
with the same vision.
You are in all…
and all are in you.
Promise me —
never again violate
nature's law.
GHASI DAS
(with humility)
I seek forgiveness, Guru.
I give my word.
SATPURUSH smiles gently.
SATPURUSH
I am always with you.
Go now.
Show the world the path of truth.
Teach only the knowledge
I have given you.
Remember —
giving life is great…
but awakening truth
is a million times greater.
Awaken the call of truth.
Satpurush dissolves into light
and merges back into Ghasi Das.
Silence.

A tear rolls down Ghasi Das' cheek.

EXT. GIROUDPURI VILLAGE — MORNING

Dawn.

After meditation, Ghasi Das walks into the village.

Villagers rush forward.

VILLAGERS

Victory to Baba Guru Ghasi Das Ji!

People bow. Plead.

PEOPLE

We need wealth...

A son...

Freedom from disease...

The crowd swells to thousands.

Now he is no longer just Ghasi Das —

he is BABA GURU GHASI DAS JI.

He raises his hand for silence.

BABA GURU GHASI DAS JI

So many people...

So many problems...

Why don't you

solve them yourselves?

I am one man —

how many burdens can I carry?

The power you see in me

exists within all of you.

You are simply unaware of it.

I want to give you

the knowledge of truth
that can make each of you
as capable as me.
Do you wish to learn?
A pause.
CROWD
Yes!
We want to learn!
He demonstrates Panth Abhyas.
Some follow.
Some watch.
Some whisper doubt.
PEOPLE
What will this achieve?
Gradually, the crowd thins.
Only a few remain.
Baba Guru Ghasi Das Ji
looks briefly saddened.
Then he walks
towards the next village.
A handful follow him.

FADE OUT.

SCENE 20

🎬 दृश्य 20 — “सतनाम का प्रकाश”
(SCENE 20 — “THE LIGHT OF SATNAM”)

📜 हिन्दी

EXT. गाँव का रास्ता — सुबह — 11 बजे के करीब — 1775

सूरज अब तेज़ हो चुका है।
धूल भरी पगडंडी। दूर खेतों में काम करते किसान।
सफेद वस्त्र धारण किए
बाबा गुरु घासी दास जी
एक हाथ में तुम्बा
(तूमा)
दूसरे हाथ में लाठी शांत, संतुलित कदमों से आगे बढ़ रहे हैं।
उनके पीछे लगभग सात अनुयायी नंगे पाँव, श्रद्धा से चलते हुए।
हल्की हवा सफेद वस्त्रों को छूती है।
कैमरा स्लो ट्रैकिंग शॉट —
उनके पैरों की धूल, लाठी की धरती पर पड़ती ध्वनि —
टक... टक... टक...

EXT. दूसरा गाँव — प्रवेश द्वार — दिन

गाँव के कुछ बच्चे सबसे पहले देखते हैं।
बच्चा (उत्साह से)
बाबा गुरु घासी दास जी आ गए!
क्षण भर में खबर फैल जाती है।
ग्रामीण (समवेत स्वर)

बाबा गुरु घासी दास जी की जय!
जयकारों की गूँज।
औरतें थालियाँ लिए।
बूढ़े लाठी टेकते हुए।
युवा उत्सुक निगाहों से।

EXT. पीपल का पेड़ — गाँव का चौक

एक विशाल पीपल वृक्ष।
उसकी छाया में बाबा बैठ जाते हैं।
उनके सात साथी भी पास में बैठते हैं।
देखते ही देखते चारों ओर भीड़ उमड़ पड़ती है।
बच्चे कंधों पर चढ़े।
महिलाएँ फुसफुसाती हुई।
युवा आपस में चर्चा करते हुए।
सबकी आँखों में एक ही प्रश्न —
"आज कौन सा चमत्कार होगा?"

बाबा गुरु घासी दास जी
(धीरे खड़े होते हुए, शांत पर प्रभावशाली स्वर में)
मैं यहाँ कोई चमत्कार दिखाने नहीं आया हूँ।
मैं आया हूँ
आपके जीवन को "सतनाम" के प्रकाश से प्रकाशित करने।
भीड़ अचानक शांत।
बाबा (जारी)
ताकि इसी जीवन में सत्य को पहचानकर आप "परम पुरुष के सतलोक" तक पहुँच सकें।
जो मार्ग
सतपुरुष ने मुझे बताया —

उसे मैं आप सबको बताना चाहता हूँ।
(हाथ हृदय पर रखते हैं)
हम सब में
एक ही सत निवास करता है।
चाहे स्त्री हो या पुरुष।
एक ही शक्ति
सबमें विद्यमान है।
चाहे अमीर हो या गरीब।
सतनाम का रस
सबमें प्रवाहित है।
चाहे बच्चा हो या वृद्ध।
पूरा जगत —
प्रत्येक जीव,
पशु, पक्षी,
पेड़-पौधे —
सबमें वही सतनाम विराजमान है।
और इस जगत के
सभी मनखे —
एक समान हैं।
भीड़ में हलचल।
कुछ चेहरों पर आश्चर्य।
बाबा (गंभीर स्वर में)
पर उसे समझने के लिए
पहले अपने
शरीर रूपी मंदिर को समझना होगा।
और शरीर को समझने के लिए
एक ही मार्ग है —
पंथ अभ्यास।

इसे जीवन भर करना होगा।
यदि ऐसा किया —
तो आप भी
मेरे समान समर्थ हो जाओगे।

दृश्यात्मक अनुक्रम (MONTAGE STYLE)
बाबा पंथ-अभ्यास प्रारंभ करते हैं।
सूर्य की किरणें पीपल के पत्तों से छनकर उन पर पड़ती हैं।
उनके साथ आए सात अनुयायी
एक स्वर में अभ्यास दोहराते हैं।
साँसों की सामूहिक ध्वनि।
धीमी मंत्रध्वनि।
बाबा
जैसा मैं कर रहा हूँ —
वैसा आप भी करें।
कुछ ग्रामीण आगे बढ़ते हैं।
अभ्यास करने लगते हैं।
कुछ लोग संकोच में।
कुछ फुसफुसाते —
ग्रामीण
इससे क्या मिलेगा?
कोई चमत्कार नहीं?
धीरे-धीरे
भीड़ छँटने लगती है।
बच्चे भाग जाते हैं।
कुछ युवक मुस्कुराकर लौट जाते हैं।
कुछ बुजुर्ग टिके रहते हैं।
बाबा बिना रुके पूरा पंथ-अभ्यास संपन्न करते हैं।

उनका चेहरा स्थिर —
न निराशा, न अपेक्षा।

EXT. गाँव से बाहर का मार्ग — दोपहर

बाबा लाठी उठाते हैं।
तूमा कंधे से टिकाते हैं।
धीरे-धीरे दूसरे गाँव की ओर बढ़ जाते हैं।
पीछे से कुछ लोग दौड़ते हुए आते हैं।
ग्रामीण बाबा... हम भी सीखना चाहते हैं।
बाबा हल्की मुस्कान के साथ आगे बढ़ते हैं।
कैमरा ऊपर उठता है —
धूल भरी पगडंडी, सफेद वस्त्रों की रेखा दूर जाती हुई।

FADE OUT.

🎬 ENGLISH

EXT. VILLAGE ROAD — MORNING — 11 AM — 1775

The sun is high.
A dusty rural path stretches ahead.
BABA GURU GHASI DAS JI
walks barefoot in white robes.
A tumba (water gourd) in one hand,
a wooden staff in the other.
Seven followers walk behind him in devotion.
The rhythmic sound of the staff hitting the earth.

EXT. SECOND VILLAGE — ENTRANCE — DAY

Children spot him first.

CHILD

(excited)

Baba Guru Ghasi Das Ji has arrived!

Within moments—

VILLAGERS

Victory to Baba Guru Ghasi Das Ji!

The entire village gathers.

EXT. PEEPAL TREE — VILLAGE SQUARE

Under a massive Peepal tree,

Baba sits in the shade.

Crowds gather rapidly.

Curious faces.

Whispers.

Expectation of a miracle.

Baba slowly rises.

Silence falls.

BABA GURU GHASI DAS JI

I have not come

to perform miracles.

I have come

to illuminate your lives

with the light of Satnam.

The crowd quiets.

BABA (CONT'D)

So that in this very life
you may realize truth
and reach the eternal realm of Satlok.
The path shown to me
by Satpurush —
I now share with you.
The same truth
lives within all —
man or woman,
rich or poor,
young or old.
The essence of Satnam
flows in every being.
In animals,
in trees,
in all existence.
All humans
are equal.
To realize this,
you must first understand
your body as a temple.
And for that —
there is only one way.
Panth practice.
Practice it lifelong,
and you too
shall become empowered.

MONTAGE

Baba begins Panth Abhyas.

Sunlight filters through Peepal leaves.

Seven followers mirror his movements.

Some villagers join.

Some hesitate.

Some whisper skeptically.

VILLAGER

What miracle is this?

Gradually,

the crowd thins.

Baba completes the full practice calmly.

No disappointment.

Only resolve.

EXT. ROAD OUTSIDE VILLAGE — AFTERNOON

Baba lifts his staff.

Begins walking toward the next village.

A few villagers run behind him.

VILLAGERS

Baba, we wish to learn!

He smiles gently and continues forward.

The camera rises high —

white robes moving along the dusty path.

FADE OUT.

SCENE 21

🎬 दृश्य 21 — "पंथी गीत का उदय"
(SCENE 21 — "THE RISE OF THE PANTHI SONG")

📜 हिन्दी

EXT. तीसरा गाँव — प्रवेश द्वार — शाम 4 बजे — 1775

ढलता हुआ सूरज।
आकाश हल्का सुनहरा।
गाँव के प्रवेश द्वार के पास
विवाह का उत्सव।
ढोलक।
मांदर।
झांझ।
मंजीरे।
पुरुष और महिलाएँ गोल घेरा बनाकर
नाच-गम्मत में मग्न।
पूरा गाँव आनंद में डूबा हुआ।
दूर धूल भरी पगडंडी से
बाबा गुरु घासी दास जी
लगभग 18–20 साथियों के साथ पहुँचते हैं।
सफेद वस्त्र,
एक हाथ में तूमा,
दूसरे में लाठी।
वे रुकने का संकेत करते हैं।

बाबा गुरु घासी दास जी (धीमे स्वर में)

रुको...
सब रुक जाते हैं।
बाबा थोड़ी दूरी पर खड़े होकर
गाँववालों के चेहरे,
संगीत की लय,
नृत्य की ऊर्जा को ध्यान से देखते हैं।

साथी 1
बाबा...
ये लोग तो नाच-गाने में मस्त हैं।
हम दूसरे गाँव चलते हैं?
बाबा शांत।

साथी 2
हाँ गुरु बाबा जी...
संगीत छोड़कर हमारी बात कौन सुनेगा?
बाबा उनकी ओर देखते हैं।
क्षण भर विचार।
फिर उनके चेहरे पर हल्की मुस्कान।

बाबा गुरु घासी दास जी
(संकेत करते हुए)
धैर्य रखो।
पहले आनंद को समझो...
फिर उसमें सत्य जोड़ो।
बाबा स्वयं ज़मीन पर बैठ जाते हैं।
साथी भी बैठ जाते हैं।
वे नृत्य को ध्यान से देखते हैं।
कुछ देर बाद

नृत्य में विराम।
लोग साँस लेते हुए बैठते हैं।
बाबा उठते हैं।
साथियों सहित मंच की ओर बढ़ते हैं।
गाँव के कुछ लोग उन्हें पहचान लेते हैं।

ग्रामीण
(उत्साह से)
अरे! ये तो बाबा गुरु घासी दास जी हैं!
क्षण भर में जयकार गूँज उठती है।
सब
बाबा गुरु घासी दास जी की जय!
लोग चरणों में झुकते हैं।
बाबा हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हैं।

बाबा गुरु घासी दास जी
(वाद्य बजाने वालों से)
मैं एक भजन गाऊँगा...
आप संगत देना।
फिर साथियों की ओर—
बाबा
आप सब...
मेरे साथ पंथ-अभ्यास करेंगे।
साथी सिर झुकाकर तैयार।
वाद्य फिर बजने लगते हैं।
धीमी लय।
बाबा आँखें बंद कर गाना शुरू करते हैं।

🎵 पंथी गीत

बाबा गुरु घासी दास जी (गाते हुए):
रहना नहिं देस बिराना है,
रहना नहिं देस बिराना है।
यह संसार कागद की पुड़िया,
बूँद पड़े घुल जाना है।
रहना नहिं देस बिराना है...
यह संसार काँट की बाड़ी,
उलझ-पुलझ मरि जाना है।
रहना नहिं देस बिराना है...
यह संसार झाड़ औ झाँखर,
आग लगे बरि जाना है।
रहना नहिं देस बिराना है...
गावत घासी सुनो भाई पंथों,
"सतनाम" का ठिकाना है।
रहना नहिं देस बिराना है...

गीत के साथ—
उनके 18–20 साथी
गोल घेरा बनाकर
पंथ-अभ्यास प्रारंभ करते हैं।
बाबा भी गीत गाते हुए
पंथ-अभ्यास करते हैं।
ढोल की लय
सांसों की लय से मिलती है।

बाबा (गीत के मध्य समझाते हुए)
यह शरीर नश्वर है...

पर इसमें जो सतनाम है —
वह अनश्वर है।
सबमें एक ही सत है।
सबमें एक ही चेतना।
हमारा शरीर ही मंदिर है।
और इसमें रहने वाला ही ईश्वर है।
उसी की सेवा —
सच्ची पूजा है।

बाबा (दूसरा गीत उठाते हैं)
मंदिरवा मा का करि ला जइबो,
अपना घट ही के देव ला मनाइबो...
लोग मंत्रमुग्ध।
धीरे-धीरे
पूरा जनसमुदाय
गोल घेरा बनाकर
पंथ-अभ्यास करने लगता है।
विवाह का मंच
अब आध्यात्मिक मंच बन चुका है।
संगीत और साधना एक हो जाते हैं।

ग्रामीण (भाव-विभोर)
जो इस पंथ-अभ्यास को करे —
वह पंथी!
और जो इसकी महिमा गाए —
वह पंथी गीत!
जयकार।
नृत्य।

साधना।
कैमरा ऊपर उठता है —
सूर्यास्त की लालिमा।
गोल घेरा।
बीच में बाबा।

FADE OUT.

🎬 **ENGLISH**

EXT. THIRD VILLAGE – ENTRANCE – 4 PM – 1775

Golden evening light.

Wedding celebration at the village gate.

Drums.

Cymbals.

Traditional dance.

The entire village absorbed in festivity.

From the dusty road,

BABA GURU GHASI DAS JI

arrives with 18–20 followers.

He gestures to stop.

They watch silently.

FOLLOWER 1

Baba, they are lost in dance.

Shall we move to another village?

FOLLOWER 2

Yes, Guru Baba...

Who will listen to us over music?

Baba reflects.

Smiles gently.

BABA

Be patient.

First understand their joy...

then add truth to it.

He sits and watches.

After a while, the dance pauses.

Villagers notice him.

Recognition spreads.

VILLAGERS

Victory to Baba Guru Ghasi Das Ji!

They bow.

Baba approaches the musicians.

BABA

I will sing a hymn.

Play along.

To his followers—

BABA

Perform Panth practice with me.

Music resumes.

♫ PANTHI SONG

He sings:

Rahna nahin des birana hai...
This world is like paper — a drop dissolves it...
This world is thorny bushes — you'll get entangled...
Only "satnam"is refuge...
As he sings—
His followers form a circle and perform Panth Abhyas.
Baba sings and moves with grace.

BABA (mid-song message)
This body is mortal...
but the Satnam within is eternal.
Your body is the temple.
The divine resides within.
Serving living beings is true worship.
He sings another line—
Mandirwa ma ka kari la jaibo,
Apna ghat hi ke dev la manaibo...
The crowd joins.
The wedding ground transforms into a spiritual circle.
Music and meditation merge.
The villagers chant—
Who practices this path is called Panthi, and the song praising it is Panthi Geet.
Camera rises above — Sunset glow.
Circle of devotion.

FADE OUT.

SCENE 22

🎬 दृश्य 22

शीर्षक: बाबा गुरु घासी दास जी
Year: 1775
स्थान: एक कस्बा गाँव
समय: प्रातः 5 बजे

🎥 हिन्दी

EXT. कस्बा गाँव – मुख्य गली – भोर

हल्की सुनहरी रोशनी।
आसमान में उगते सूरज की पहली किरणें।
कोहरे की पतली परत गलियों में तैर रही है।
दूर से मंदर, मँदरी, झांझ, मंजीरों की मधुर ध्वनि सुनाई देती है।
धीरे-धीरे फ्रेम में प्रवेश करते हैं —
बाबा गुरु घासी दास जी
सफेद वस्त्र, शांत मुखमंडल, तेजस्वी आभा।
उनके पीछे 25-30 अनुयायी।
वे पंथी नृत्य करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।
सब मिलकर गा रहे हैं —
🎵 "सतनाम सतनाम, एक ज्योति सबके भीतर..."
कैमरा ड्रोन शॉट में ऊपर उठता है — पूरी गली संगीत से जीवंत हो उठती है।

EXT. कस्बा – चौराहा – निरंतर

लोग घरों से बाहर निकलते हैं।

बच्चे, महिलाएँ, बुजुर्ग — सब आकर्षित।
चौराहे के बीच मंडली रुकती है।
ताल तेज होती है।
पंथी नृत्य गोल घेरे में शुरू होता है।
पैरों की थाप, हाथों की लय
— एक आध्यात्मिक ऊर्जा।
🎼 1. पूर्ण पंथी गीत

🎵 मुखड़ा (कोरस)
सतनाम सतनाम, ज्योति जले हर प्राण में
सतनाम सतनाम, एक समान संसार में ॥
मनखे मनखे एक समान,
नाही कोऊ ऊँच न नीच रे
काया मंदिर, भीतर जोती,
सत्य बसे हर बीच रे ॥
(कोरस दोहराएँ)
सतनाम सतनाम...

🎵 अंतरा 1
धरती गगन पवन जल अग्नि,
सबमें एक ही धाम रे
रंग अनेक रूप भले हों,
मूल एक पहचान रे
द्वेष त्यागो, मोह मिटाओ,
प्रेम भरो व्यवहार में
सतनाम की डोरी बाँधो
अपने हर परिवार में ॥
(कोरस)

अंतरा 2
श्वास-श्वास में नाम समाया,
ध्यान करो मन थाम रे
काया को निर्मल रख लेना,
यही सच्चा है काम रे
सेवा कर हर जीव की तुम,
ईश्वर उसके रूप में
मुक्ति पथ यहीं से निकले
सत्य रहे हर स्वरूप में ॥
(कोरस)

भीड़ बढ़ती जाती है।

बाबा गुरु घासी दास जी (हाथ उठाकर)
"सुनो मनखे मनखे एक समान।
इस संसार में कोई ऊँच-नीच नहीं।
हमारा शरीर ही मंदिर है।
इस काया में ही ईश्वर निवास करते हैं।"
कट टू — भीड़ के चेहरों पर आश्चर्य और श्रद्धा।

बाबा (आगे कहते हैं)
"हर प्राणी में उसी परम सत्य का वास है।
उसी की सेवा, उसी की पूजा —
सच्चे ईश्वर की पूजा है।"
संगीत धीमा।
ध्यानमग्न वातावरण।

EXT. अलग-अलग गलियाँ – मोंटाज

— मंडली गली-गली घूम रही है।
—नुक्कड़ नाटक शैली में पंथी नृत्य।
— शरीर को स्वस्थ रखने के अभ्यास सिखाए जा रहे हैं।
— लोग ध्यान मुद्रा में बैठना सीख रहे हैं।
बाबा समझा रहे हैं —
"ध्यान योग से मन निर्मल होता है।
सतनाम का साधन आत्मा को मुक्त करता है।"

EXT. चौराहा – कुछ देर बाद

भीड़ में से एक 50 वर्षीय व्यक्ति, कमजोर, सांस लेने में कठिनाई।
उसकी पत्नी रोते हुए आगे आती है।
पत्नी
"बाबा... मेरे पति को पाँच वर्षों से दमा है।
सांस नहीं ले पाते... कृपा कीजिए।"
कैमरा क्लोज-अप — बाबा का शांत चेहरा।
🎵 अंतरा 3 (उपचार प्रसंग हेतु)
भय न कर रे मन के भीतर,
विश्वास जगा पहचान
प्रकृति देती औषधि सारी,
साधो तन और प्राण
प्रातः संध्या साधन करना,
शुद्ध रहे व्यवहार
सतनाम से रोग मिटेगा,
खुल जाएगा द्वार ॥
अंतिम कोरस (तेज़ लय में)
सतनाम सतनाम, गूँजे चारो धाम में
सतनाम सतनाम, ज्योति जले हर प्राण में ॥

बाबा गुरु घासी दास जी
“भय मत करो।
जो पंथ अभ्यास मैंने बताया है, उसे रोज सुबह-शाम करो।
और ‘मोखला’ पौधे के बीज की एक चुटकी
मुख में रखकर चूसते रहो।
शीघ्र ही लाभ होगा।”
पति-पत्नी श्रद्धा से झुकते हैं।

EXT. कस्बा – सूर्य उदय

सूरज पूरी तरह उग चुका है।
भीड़ अब “सतनाम” का जयघोष कर रही है।
🎵 “सतनाम… सतनाम…”
कैमरा स्लो मोशन —
बाबा आगे बढ़ते हैं,
संगीत के साथ अगली गली की ओर।

FADE OUT.

🎬 SCENE 22 – (ENGLISH VERSION)

Title: Baba Guru Ghasi Das Ji
Year: 1775
Location: A Small Township
Time: 5:00 AM

EXT. TOWNSHIP MAIN STREET – DAWN

Golden morning light.
Soft mist floating across narrow streets.

In the distance — rhythmic sounds of Mandar drums, cymbals, and manjiras.

Entering the frame —

BABA GURU GHASI DAS JI,

clad in white, radiant and serene.

Behind him, 25–30 followers performing Panthi dance, singing in devotion.

🎵 "Satnam... the divine light within all..."

Aerial shot — the entire street awakens with spiritual energy.

EXT. TOWN SQUARE – CONTINUOUS

Villagers gather — men, women, children.

The group halts at the center.

The dance intensifies in a circular formation.

Feet stomp rhythmically.

Hands move in divine synchronization.

Crowd mesmerized.

BABA (raising his hand)

"All human beings are equal.

There is no high or low.

Our body itself is a temple.

God resides within this very being."

Close-ups — emotional faces in the crowd.

BABA (continuing)

"The Divine dwells in every living creature.

Serving them is worshipping the True God."

Music softens. Silence spreads.

MONTAGE – STREETS & CORNERS

— The troupe moves through lanes.

— Street-theatre style performances.

— Teaching breathing practices.

— Demonstrating body-cleansing disciplines.

— Villagers learning meditation.

Baba explains:

"Through meditation, the mind becomes pure.

Through Satnam, the soul attains liberation."

EXT. SQUARE – LATER

A frail 50-year-old man struggles to breathe.

His wife pleads emotionally.

WIFE

"Baba… my husband suffers from asthma for five years.

Please heal him."

Close-up — Baba's compassionate gaze.

BABA

"Do not fear.

Practice the discipline I have shown — every morning and evening.

Take a pinch of seeds of the 'Mokhala' plant,

keep them in your mouth and suck gently.

You shall recover soon."

The couple bows in gratitude.

EXT. TOWNSHIP – SUNRISE

The sun rises fully.

The crowd chants –

"SATNAM! SATNAM!"

Slow-motion shot –

Baba walks forward toward the next street.

Music swells.

FADE OUT.

SCENE 23

🎬 दृश्य 23

शीर्षक: बाबा गुरु घासी दास जी
Year: 1775
स्थान: एक कस्बा जैसा शहर
समय: शाम लगभग 6 बजे

हिन्दी

सूरज ढल रहा है।
आसमान नारंगी–लाल रंग से भर गया है।
दूर से मंदर, मँदरी, झांझ, मंजीरे की तेज़ होती धुन।
गली के मोड़ से प्रवेश —
बाबा गुरु घासी दास
सफेद वस्त्र, गंभीर तेज, शांत मुख।
उनके पीछे सैकड़ों अनुयायी।
पंथी नृत्य पूरे वेग में।
भीड़ उमड़ रही है —
अब यह केवल मंडली नहीं, जनसैलाब है।

भीड़ (नारा लगाती हुई)
"मनखे मनखे एक समान!"
"सतनाम! सतनाम!"

EXT. मुख्य चौक – निरंतर

बाबा हाथ उठाते हैं।

संगीत धीमा पड़ता है।
बाबा गुरु घासी दास जी
"सत्य सदा से है, और सर्वत्र व्याप्त है।
वही सनातन है — वही 'सत' है।
और उसी का नाम है — 'सतनाम'।
जो इस शरीर रूपी मंदिर में उस सत्य को अनुभव कर ले —
वही सच्चा 'सतनामी' है।"
भीड़ मंत्रमुग्ध।

बाबा (स्वर ऊँचा करते हुए)
"मैं समाज के सभी ज्ञानी पुरुषों का आह्वान करता हूँ —
असत्य जाति-पांति का त्याग करो!
एक हो जाओ।
'सतनामी' बन जाओ!"

MONTAGE – सामाजिक परिवर्तन
— ब्राह्मण, बनिया, श्रीवास्तव
— कुरमी, तेली, सुनार
— गोंड, राउत, लोहार
सब एक साथ पंथी नृत्य में।
भेद मिटते हुए।
एक नई पहचान — सतनामी।

EXT. शहर से बाहर की बस्ती – सांझ गहराती हुई

भीड़ के बीच से एक वृद्ध महिला रोती हुई आगे आती है।
वृद्ध महिला
(रोते हुए)
"बाबा गुरु जी! हमें समाज से निकाल दिया...

हम नरक का जीवन जी रहे हैं...”
वह चरणों में गिर जाती है।
बाबा झुककर उसे उठाते हैं।
बाबा
“क्या हुआ माता जी? किसने यह किया?”

वृद्ध महिला
“मेरे पति को कोढ़ हो गया...
लोग कहते हैं यह हमारे पाप का फल है।
बेटों ने घर से निकाल दिया...
हम गाँव के बाहर झोपड़ी में रहते हैं...”
वह फूट-फूट कर रोती है।

EXT. झोपड़ी – रात्रि

बाबा दिशा बदल देते हैं।
जनसैलाब उनके पीछे।
वे झोपड़ी के सामने बैठ जाते हैं।
बाबा (मुस्कराकर)
“माता जी, मुझे भूख लगी है...
क्या भोजन नहीं कराओगी?”
महिला चकित।
भीड़ सन्न।

बाबा (अपने साथियों से)
“आज का विश्राम और भोजन यहीं होगा।”
सब वहीं बैठ जाते हैं।

INT. झोपड़ी – रात्रि

दीपक की हल्की लौ।
कोढ़ से पीड़ित वृद्ध व्यक्ति कांपता हुआ बैठा है।
बाबा उसे अपने पास बिठाते हैं।
सब एक साथ भोजन करते हैं।
भीड़ भावुक।

भोजन के बाद
बाबा अपने तुम्मा से जल हथेली में लेते हैं।
आंखें बंद।
गहरा ध्यान।
धीरे से जल रोगी के शरीर पर छिड़कते हैं।
बाबा
"डरो मत।
सतनाम की शक्ति तुम्हारे भीतर है।
तुम शीघ्र स्वस्थ हो जाओगे।"

EXT. झोपड़ी – रात्रि गहरी

सब विश्राम करते हैं।
कैमरा ऊपर — तारों भरा आकाश।

EXT. झोपड़ी – अगली सुबह

सूर्योदय।
वृद्ध रोगी जागता है।
अपने हाथों को देखता है —
घाव गायब। त्वचा स्वच्छ।
वह अवाक्।
दौड़ता हुआ बाहर आता है।

वृद्ध व्यक्ति (आँखों में आँसू)
"बाबा!"
वह बाबा के चरणों में गिर पड़ता है।

भीड़ (एक स्वर में)
"सतनाम! सतनाम!"
कैमरा ऊपर उठता है।
हजारों लोग एक साथ खड़े।
एक नई चेतना जन्म ले चुकी है।

FADE OUT.

🎬 SCENE 23 – (ENGLISH VERSION)

EXT. TOWNSHIP – SUNSET

Golden-orange sky.
Rhythmic beats of drums and cymbals.
Entering the street —
Baba Guru Ghasi Das, radiant in white robes.
Hundreds now follow him.
The chant echoes:
"SATNAM!"
"All humans are equal!"

TOWN SQUARE
Baba raises his hand.
Silence falls.

BABA

"Truth has always existed.

It is eternal and omnipresent.

That Truth is 'Sat'.

And its name is 'Satnam'.

Whoever realizes it within this body-temple is a true 'Satnami'."

SOCIAL TRANSFORMATION MONTAGE

Different castes standing together.

Dancing.

No division.

A new identity emerges — SATNAMI.

OUTSKIRTS – EVENING

An old woman collapses at his feet.

OLD WOMAN

"They cast us out…

My husband has leprosy…

They say it is our sin…"

Baba gently lifts her.

NIGHT – HUT

Baba sits outside.

BABA

"I am hungry, Mother.

Will you not feed me?"

Crowd sits with him.

He declares:
"Tonight we stay here."

Inside the hut.
Dim oil lamp.
Baba sits beside the leprosy patient.
They all eat together.
Afterwards —
Baba takes water in his palm.
Closes his eyes in meditation.
Sprinkles water gently.
BABA
"Fear not.
The power of Satnam resides within you.
You shall recover."

MORNING
Sunrise light.
The old man wakes.
His skin healed.
Tears stream down his face.
He runs and falls at Baba's feet.
Crowd chants:
"SATNAM! SATNAM!"
Camera rises into the sky.
A revolution of equality has begun.

FADE OUT.

SCENE 24

🎬 दृश्य 24 — "पंथ अभ्यास : सतनाम का प्रथम योग"

Film Title: Baba Guru Ghasi Das Ji
Year: 1775
Location: एक गाँव का चौबारा (Village Crossroad)
Time: सुबह 6 बजे

EXT. गाँव का चौबारा – भोर – 1775

WIDE AERIAL SHOT
धुंध से ढका गाँव। उगते सूर्य की स्वर्णिम किरणें मिट्टी के घरों पर पड़ती हैं।
मंदिर की घंटी की दूर से आती ध्वनि। पक्षियों का कलरव।

SLOW DOLLY IN
चौबारे के बीच सफेद वस्त्रों में खड़े हैं —
बाबा गुरु घासी दास जी
उनके चारों ओर 18–20 साधक।
मंदर, झांझ, मजीरे की लयबद्ध थाप।

MUSIC RISES — PANCHI BEAT BEGINS
MID SHOT – बाबा का शांत चेहरा
आँखों में करुणा।
धीरे हाथ उठाते हैं।
बाबा (गंभीर, मधुर स्वर में)
"सतनाम का महिमा भारी,
सतनाम का करो विचार..."

CUT TO – GROUP FORMATION
पंक्ति बनती है।
पैरों की थाप — धूल उड़ती है।
कैमरा पैरों से ऊपर उठता है — कमर, छाती, हाथ — सब एक लय में।

🎶 MUSICAL MONTAGE (RHYTHMIC EDITING)
CLOSE UP – पाँव की थिरकन
सा रे सा | सा रे ग म |
CUT – हाथ दसों दिशाओं में फैलते
ग म पा धा |
TOP SHOT (DRONE STYLE)
नृत्य करते साधक — मंडलाकार संरचना बनाते हुए।

बाबा (VOICE OVER)
"काया थिरकाओ धीरे-धीरे,
मन बुद्धि चित्त लगाओ..."
SLOW MOTION
कमर से गले तक लहराती देह।
हाथ आकाश की ओर — फिर धरती को स्पर्श।

SOUND DESIGN
मंदर की गहरी थाप।
झांझ की तीव्र टंकार।
सांसों की लय।

बाबा (उपदेशात्मक स्वर)
"साँसों का भी सुरता रखना,
काया-मन-साँस का मेल..."
INSERT SHOT

एक युवक आँखें बंद कर साँसों पर ध्यान केंद्रित करता है।
एक वृद्ध महिला आँसू भरी आँखों से नृत्य करती है।

INTENSITY BUILDS
CAMERA ROTATES 360°
नर्तक मंडल बनाकर घूमते हैं।
धूल में सूर्य की किरणें — सुनहरी आभा।
समूह गान
"पंथ अभ्यास नित्य करो भाई..."

TRANSITION TO STILLNESS
अचानक —
संगीत धीमा होता है।
पूर्ण हुआ ये पंथ अभ्यास,
अब बैठो पद्मासन में..."

WIDE SHOT
सभी साधक एक साथ पद्मासन में बैठते हैं।
मौन छा जाता है।

बाबा स्वयं पद्मासन में
कैमरा धीरे-धीरे उनके चारों ओर घूमता है।
सूर्य अब पूर्ण रूप से उदित।
बाबा (धीमे स्वर में)
"चित्त लगाओ साँसों में अब,
आती-जाती पवन विचार..."

EXTREME CLOSE UP
बाबा की बंद आँखें।

चेहरे पर तेज।

पृष्ठभूमि में प्रकाश का आभामंडल।

FINAL VISUAL
DRONE SHOT – ऊपर उठता कैमरा
चौबारे में बैठे साधक — एक मंडल की तरह।
बीच में बाबा — शांति का
केंद्र।
पंथी गीत
सतनाम का महिमा भारी,
सतनाम का करो विचार।
पंथ अभ्यास नित्य करो भाई,
जिसकी महिमा इसकी हज़ार।
काया थिरकाओ धीरे-धीरे,
मन बुद्धि चित्त लगाओ।
साँसों का भी सुरता रखना,
काया-मन-साँस का मेल।
“सतनाम” प्रथम योग है,
सतनाम का करो विचार।
कमर से गले तक थिरकाओ,
मंदर झाँझ मजीरे थाप।
दसों दिशाओं में हाथ थिरकाओ,
काया खींचो, फेंको साँस।
धीरे-धीरे सिर गला घुमाओ,
आगे-पीछे चक्र समान।
पूर्ण हुआ ये पंथ अभ्यास,
अब बैठो पद्मासन में।

चित्त लगाओ साँसों में अब,
आती-जाती पवन विचार।
इतना बस करते जाओ,
मिले नित्य सिद्धि हज़ार।

🎬 ENGLISH SCREENPLAY VERSION

EXT. VILLAGE CROSSROAD – DAWN – 1775

Golden sunlight pierces through morning mist.
A sacred rhythm begins.
At the center stands
Baba Guru Ghasi Das
Surrounded by disciples dressed in white.

BABA (chanting)
"The glory of Satnam is immense,
Contemplate the truth of Satnam..."
Drums echo. Cymbals clash.

DANCE SEQUENCE
Feet strike earth in rhythm.
Hands stretch toward ten directions.
Bodies move from waist to neck — wave-like.

BABA (V.O.)
"Let body sway gently...
Align mind, intellect, and consciousness..."

BREATHING SEQUENCE
Close-up of inhaling.
Exhaling in synchronized flow.
"Satnam is the first Yoga..."

CLIMAX MOVEMENT
Circular choreography.
Camera spins overhead.
Dust particles glow in sunlight.

BABA
"Now sit in Padmasana..."
Music fades. Silence rises.
All sit cross-legged.
Meditative hum resonates.

FINAL FRAME
Camera ascends high above.
A perfect human mandala.
Baba at the center.
Sunlight crowns him.

FADE OUT.

SCENE 25

🎬 दृश्य 25 — बाबा गुरु घासी दास जी (1775)
📍 स्थान: गांव के गौंटिया की बैठक का बरामदा
🕔 समय: सुबह पाँच बजे,

उषा की प्रथम लालिमा
🎞️ FADE IN:

EXT. गांव का आंगन – भोर हल्की धुंध।

पूरब दिशा से आती सुनहरी किरणें। पक्षियों का मधुर कलरव।

गांव के गौंटिया की विशाल

कच्ची बैठक का बरामदा।
करीब 20–25 ग्रामीण — गौंटिया और सम्मानित
बुजुर्ग — श्वेत वस्त्रों में पद्मासन में बैठे हैं।

बीच में तेजस्वी आभा लिए हुए
✨ बाबा गुरु घासी दास जी
उनके चारों ओर उनके साथी — मंदर, मंदरी, झांझ, मंजीरा लिए शांत मुद्रा में।

SCENE 1 – आध्यात्मिक आरंभ
बाबा (गंभीर, शांत स्वर में)
बाबा:
"अपने मेरुदंड को सीधा — ठीक नब्बे अंश में रखो...
शरीर को सामान्य और सहज रहने दो...

अपनी इन्द्रियों को अपनी श्वास की गति पर केंद्रित करो…”
कैमरा धीरे-धीरे लोगों के चेहरों पर घूमता है।
आँखें बंद। श्वास गहरी।

CLOSE UP – बाबा का चेहरा
बाबा:
“मन, चित्त और बुद्धि को मेरुदंड के सबसे निचले भाग — मूल कमल स्थान पर लगाओ…
अब धीरे-धीरे ध्यान को मस्तिष्क के शिखर तक ले जाओ…”
VISUAL EFFECT (INTERNATIONAL CINEMA STYLE)
एक पारदर्शी आध्यात्मिक ग्राफिक — मेरुदंड के भीतर श्वेत प्रकाश स्तंभ।
सात कमल क्रमशः प्रकाशित होते हुए।

बाबा (विस्तार से)
“हमारे मेरुदंड के मध्य में श्वेत रंग का एक स्तंभ है —
यही सुषुम्ना है…
यही हमारे शरीर और मस्तिष्क के बीच संदेशों का सेतु है…
जब यह नब्बे अंश में स्थिर रहता है, तब जीवन संतुलित होता है…
अपने मन को इस श्वेत स्तंभ के चारों ओर भंवर की तरह घुमाओ…
दाहिने से बाएँ…
सुषुम्ना जागृत होगी…
और तब ब्रह्मांड का सकारात्मक ज्ञान तुम्हारी ओर आकर्षित होने लगेगा…”

SCENE 2 – संगीत का प्रारंभ
बाबा हल्का संकेत करते हैं।
मंदर… मंदरी… झांझ… मंजीरा…
धीरे-धीरे लय प्रारंभ।

सूर्योदय की स्वर्णिम किरणें बाबा के चेहरे पर।

बाबा गाते हैं (गंभीर आध्यात्मिक स्वर में)
(गीत पूर्ण रूप में प्रस्तुत — कैमरा हर पद के साथ प्रतीकात्मक दृश्य दिखाता है)
🎵
"भांवर दे जाना प्राणी हो...
सेतखाम निज बानी है..."
भांवर दे जाना प्राणी हो ? घोर
सेतखाम निज बानी है।
एक भांवर परैय प्रेम के,
सुमता लान समानी हो।
सेतखाम निज बानी है।
भांवर दे जाना प्राणी हो।
सेतखाम निज बानी है।
दुई भांवर परैय ,दुऊ लोक के
जहां दुविधा भरम नशानी हो।
सेतखाम निज बानी है ,
भांवर दे जाना प्राणी हो ।
सेतखाम निज बानी है ।
तीन भांवर परैय तीनो गुण के,
जहां तीनगुन ताप नशानी हो।
सेतखाम निज बानी है ।
भांवर दे जाना प्राणी हो।
सेतखाम निज बानी है।
चार भांवर परैय चारो जुग के,
जहां सतगुरु मारग लखानी हो।
सेतखाम निज बानी है।

भांवर दे जाना प्राणी हो।
पांच भांवर परैय पांचों तत्व के,
जहां पांच नाम लखानी हो।
सेतखाम निज बानी है।
भांवर दे जाना प्राणी हो।
छै भांवर परैय छै दर्शन के,
जहां जगमग जोत जलानी हो।
सेतखाम निज बानी है।
भांवर दे जाना प्राणी हो।
सेतखाम निज बानी है।
सात भांवर परैय सतनाम के,
जहां हंसा अमर लोक जानी हो!!
सेतखाम निज बानी है।
भांवर दे जाना प्राणी हो।
सेतखाम निज बानी है।

VISUAL MONTAGE (EACH BHAWAR)
एक भांवर – प्रेम और समता का प्रकाश।
दुई भांवर – द्वैत समाप्त, भ्रम नाश।
तीन भांवर – तीन गुणों का संतुलन।
चार भांवर – चार युगों का चक्र।
पांच भांवर – पंच तत्व का जागरण।
छै भांवर – छह दर्शन, ज्योति प्रज्वलित।
सात भांवर – सतनाम, हंसा अमर लोक की ओर उड़ता हुआ।

SCENE 3 – गीत के बाद
संगीत धीरे-धीरे मंद पड़ता है।
गांव के लोगों के चेहरे पर शांति।

कुछ की आँखों से अश्रुधारा — पर वह दुख नहीं, अनुभूति है।

बाबा (व्याख्या करते हुए)
बाबा:
“पहला भंवर — प्रेम का जागरण...
दूसरा — द्वैत का अंत...
तीसरा — तीन गुणों का संतुलन...
चौथा — सतगुरु का मार्ग...
पांचवां — पंच तत्व का बोध...
छठा — आंतरिक ज्योति...
सातवां — सतनाम का साक्षात्कार...
जब यह सातों पूर्ण होते हैं —
तब हंसा अमर लोक को जान लेता है...”

EXTREME CLOSE UP
एक वृद्ध गौंटिया — आँखें बंद — चेहरा प्रकाशमय।

FINAL MEDITATION SHOT
कैमरा ऊपर उठता है।
बरामदा — गांव — उगता सूर्य।
पीछे बाबा की आवाज़:
“सतनाम ही जीवन का सार है...”

🎬 FADE OUT
संगीत — मंद, गूंजता हुआ।

🌍 English Version

SCENE 25 – THE AWAKENING OF THE INNER LOTUS
YEAR: 1775
LOCATION: VILLAGE HEADMAN'S VERANDA
TIME: 5:00 AM – DAWN

FADE IN:

Golden sunrise. Mist floating. Birds singing.

Villagers sit in PADMASANA.

At the center — Baba Guru Ghasi Das.

Baba (calm, resonant voice)

"Keep your spine straight — at ninety degrees...

Relax the body...

Focus your senses on your breath..."

Spiritual Visualization

A luminous white column inside the spine.

Seven lotuses glowing one by one.

Baba

"In the center of the spine flows the white pillar — the Sushumna...

When awakened, it attracts universal positive knowledge...

Rotate your awareness like a vortex around it..."

Music Begins

Traditional instruments create a rhythmic vibration.

Baba sings the sacred hymn.

Each stanza visualized symbolically –

Love… dissolution of duality… balance of three qualities…

Four ages… five elements… six philosophies…

Seven – SATNAM – the immortal realm.

After the Song

Baba explains each verse in depth.

Villagers meditate simultaneously.

Tears of realization. Silence. Enlightenment atmosphere.

FINAL SHOT

Camera rises above the veranda.

Sun fully risen.

Voice over:

"Satnam is the eternal truth…"

🎥 **End of Scene 25**

SCENE 26

🎬 दृश्य 26 — बाबा गुरु घासी दास जी
(1775)
"जागरण का प्रभाव"
📍 स्थान: वही गांव – गौंटिया की बैठक से पूरा गांव
🕛 समय: उसी दिन प्रातः से संध्या तक

🎞 FADE IN:

EXT. गांव – सुबह का उजाला

सूरज अब पूरी तरह उग चुका है।
हल्की धुंध छँट रही है।
पृष्ठभूमि में मंद स्वर में "सतनाम... सतनाम..." की गूंज।

SCENE 1 – ध्यान का परिणाम
गौंटिया की बैठक के बरामदे में बैठे ग्रामीण धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलते हैं।
उनके चेहरों पर आश्चर्य, शांति और गहन स्थिरता।
एक वृद्ध गौंटिया अपने हाथ जोड़ता है।
गौंटिया (भावुक स्वर में)
"बाबा... आज पहली बार भीतर उजाला दिखा..."
कैमरा बाबा के शांत, करुणामय चेहरे पर जाता है।
✨ बाबा गुरु घासी दास जी
बाबा (मृदु मुस्कान के साथ)
"जब भीतर का दीपक जलता है...
तभी बाहर का अंधकार मिटता है..."

SCENE 2 – परिवर्तन की शुरुआत
MONTAGE

- दो परिवार जो वर्षों से आपस में विवाद में थे — आज एक-दूसरे को गले लगाते हैं।
- एक व्यक्ति जो मद्यपान करता था — मटका तोड़कर प्रण लेता है।
- महिलाएँ कुएं पर — जाति भेद भूलकर साथ पानी भरती हैं।
- बच्चे "सतनाम" बोलते हुए खेलते हैं।

पृष्ठभूमि में बाबा का वॉइस ओवर:
"सतनाम केवल शब्द नहीं...
यह जीवन जीने का मार्ग है..."

SCENE 3 – सामाजिक घोषणा
EXT. गांव का चौपाल – दोपहर
पूरा गांव एकत्र।
मंदर, मंदरी, झांझ की मध्यम लय।
गौंटिया आगे आता है।
गौंटिया
"आज से इस गांव में
भेदभाव नहीं होगा...
छुआछूत नहीं होगी...
सब सतनाम के अनुयायी बनकर समानता से रहेंगे..."
गांव में "सतनाम!" की सामूहिक ध्वनि।

SCENE 4 – बाबा का अंतिम उपदेश
बाबा (गंभीर और दिव्य स्वर में)
"सात भांवर केवल ध्यान का अभ्यास नहीं...

यह जीवन के सात संकल्प हैं —

1. प्रेम
2. समता
3. संयम
4. सत्य
5. सेवा
6. साधना
7. सतनाम का बोध

जब यह सात पूर्ण होते हैं —
मनुष्य हंसा बनकर अमरलोक की ओर बढ़ता है…"

SCENE 5 – आध्यात्मिक चरम

VISUAL EFFECT

कैमरा ऊपर उठता है।
गांव का पूरा दृश्य — लोग हाथ जोड़कर खड़े।
सूर्य की किरणें सीधे बाबा पर पड़ती हैं —
उनके पीछे प्रकाश का आभामंडल।
पृष्ठभूमि में सामूहिक गान:

🎵

"भांवर दे जाना प्राणी हो…
सेतखाम निज बानी है…"

SCENE 6 – भावनात्मक क्लोज़

एक छोटी बच्ची बाबा के चरणों में फूल रखती है।

बच्ची

"बाबा… क्या मैं भी अमर लोक जा सकती हूँ?"

बाबा (स्नेहपूर्वक)

"बेटी…

सतनाम के मार्ग पर चलने वाला हर प्राणी
अमर लोक का यात्री है…"

🎬 FINAL SHOT
सूर्य अस्ताचल की ओर।
गांव में दीप जल उठते हैं।
ऊपर आकाश में उड़ते पक्षी — प्रतीक "हंसा" का।

🎞️ FADE OUT
ध्वनि — "सतनाम… सतनाम…" धीरे-धीरे गूंजती हुई।

🌍 ENGLISH VERSION

SCENE 26 – THE TRANSFORMATION
LOCATION: SAME VILLAGE
TIME: DAWN TO SUNSET

FADE IN:
The villagers open their eyes after meditation.
Faces glowing with serenity.

Headman
"Today, for the first time, I saw light within…"

MONTAGE
- Enemies embracing.
- Alcohol pot breaking.
- Women drawing water together beyond caste barriers.

- Children chanting “Satnam.”

Baba
“Satnam is not a word.
It is a way of life.”

Declaration
The village renounces discrimination.
Unity proclaimed.

Final Blessing
Baba explains seven vows of life.
Camera rises to the sky.
Sunset. Birds flying.
Voice fades:
“Satnam… is eternal truth…”

🎬 **End of Scene 26**

SCENE 27

🎬 दृश्य 27 — बाबा गुरु घासी दास जी
(1775)
"सुप्रीम पावर के ज्ञाता"
📍 स्थान: गांव से बाहर विस्तृत मैदान
🕔 समय: प्रातःकाल से मध्याह्न

🎞 FADE IN:

EXT. गांव के बाहर विशाल मैदान – सूर्योदय

आकाश में हल्की सुनहरी लालिमा।
हवा स्थिर। वातावरण में असामान्य शांति।
सैकड़ों ग्रामीण एकत्र।
केंद्र में तेजस्वी आभा से युक्त —
✨ बाबा गुरु घासी दास जी
उनके पीछे उगता सूर्य — ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकाश उन्हीं से प्रस्फुटित हो रहा हो।

SCENE 1 परम शक्ति बोध
बाबा (गंभीर, गूंजता स्वर)
"यह सृष्टि किसी अंधकार की उपज नहीं...
यह एक परम चेतना की रचना है...
वही परम शक्ति — सतपुरुष...
जिसका अंश प्रत्येक प्राणी में विद्यमान है..."
कैमरा भीड़ पर घूमता है — लोग मंत्रमुग्ध।

बाबा (आगे कहते हुए)
“जब सुषुम्ना जागृत होती है...
तो मनुष्य केवल शरीर नहीं रहता...
वह ब्रह्मांडीय चेतना से जुड़ जाता है...
मैंने उस चेतना को अनुभव किया है...
वह प्रकाश... जो न जन्म लेता है, न मृत्यु को प्राप्त होता है...”

SCENE 2 – दिव्य प्रदर्शन (CINEMATIC SPIRITUAL PEAK)
अचानक बादलों के बीच से तीव्र प्रकाश किरणें उतरती हैं।
हवा में हल्की कंपन।
बाबा ध्यान मुद्रा में नेत्र बंद करते हैं।

VISUAL EFFECT
- उनके मेरुदंड के भीतर श्वेत स्तंभ प्रकाशित।
- सात कमल एक-एक कर प्रज्वलित।
- उनके चारों ओर ऊर्जा का वृत्त — भंवर की तरह घूमता हुआ।

भीड़ विस्मित।
एक युवक धीरे से कहता है:
“ये केवल संत नहीं... ये तो परम शक्ति के ज्ञाता हैं...”

SCENE 3 – तत्वों पर संतुलन
हवा तेज चलती है — फिर शांत।
पास का दीपक बुझने ही वाला था — पर लौ स्थिर हो जाती है।
बाबा (आँखें खोलते हुए)
“परम शक्ति को जानने वाला
प्रकृति से संघर्ष नहीं करता —
वह उसके साथ एकाकार हो जाता है...”

SCENE 4 – भविष्य दृष्टि
बाबा दूर क्षितिज की ओर देखते हैं।
बाबा
“समय आएगा जब यह संदेश
गांवों से निकलकर
राजाओं और नगरों तक पहुँचेगा…
सतनाम का प्रकाश
भेदभाव की जंजीरों को तोड़ेगा…”
भीड़ एक स्वर में:
“सतनाम!”

SCENE 5 – आध्यात्मिक चरम दृश्य
EXTREME WIDE SHOT
पूरा मैदान।
ऊपर से कैमरा धीरे-धीरे उठता है।
बाबा के चारों ओर खड़े लोग —
मानो एक जीवित मंडल बना रहे हों।
आकाश में उड़ते पक्षी — हंसा का प्रतीक।

बाबा (अंतिम संवाद)
“परम शक्ति बाहर मत खोजो…
वह तुम्हारे भीतर है…
जब मन, चित्त और बुद्धि एक हो जाएँ —
तब मनुष्य स्वयं प्रकाश बन जाता है…”

🎬 FADE OUT
संगीत — मंदर और झांझ की गूंज के साथ।

🌍 ENGLISH VERSION

SCENE 27 – KNOWER OF THE SUPREME POWER
LOCATION: OPEN FIELD OUTSIDE THE VILLAGE
TIME: SUNRISE

FADE IN:

Hundreds gather.

At the center stands Baba Guru Ghasi Das, radiant against the rising sun.

Baba (deep, resonant voice)

"This universe is born of Supreme Consciousness...

That Supreme Power lives within every being..."

Spiritual Visualization

White luminous column inside his spine.

Seven lotuses ignite.

Energy vortex forms around him.

The crowd whispers:

"He is the knower of the Supreme..."

Baba

"One who realizes the Supreme Power

does not fight nature –

he becomes one with it."

Final Declaration

"The Supreme is within you.

Unite mind, consciousness, and wisdom –

and you become light itself."

🎬 End of Scene 27

SCENE 28

🎬 दृश्य 28 — बाबा गुरु घासी दास जी
(1775)
"परम शक्ति की परीक्षा"
📍 स्थान: गांव के बाहर विशाल पीपल वृक्ष के नीचे
🕘 समय: पूर्वाह्न

🎞️ FADE IN:

EXT. पीपल वृक्ष – पूर्वाह्न

विशाल पीपल वृक्ष।
सैकड़ों ग्रामीण एकत्र।
घोड़ों की टापों की आवाज़।
धूल उड़ती है।
स्थानीय जमींदार और उसके सैनिक पहुँचते हैं।
भीड़ में हलचल।
बीच में शांत, स्थिर, तेजस्वी —
✨ बाबा गुरु घासी दास जी

SCENE 1 – चुनौती
जमींदार (अहंकारपूर्ण स्वर)
"सुना है तुम स्वयं को परम शक्ति का ज्ञाता कहते हो?
यदि ऐसा है... तो कोई प्रमाण दो!"
भीड़ में सन्नाटा।
बाबा (मुस्कुराते हुए, शांत स्वर)
"जो सूर्य को देख रहा है...
उसे दीपक का प्रमाण क्यों चाहिए?"

जमींदार तिलमिला उठता है।

SCENE 2 – दार्शनिक संवाद
जमींदार
"यदि तुम्हारे पास परम शक्ति का ज्ञान है...
तो इस सूखे वृक्ष को हरा कर दिखाओ!"
भीड़ विस्मित।
सूखा वृक्ष पास ही खड़ा है।
बाबा (गंभीर, स्थिर दृष्टि)
"परम शक्ति तमाशा नहीं करती...
वह चेतना को जागृत करती है..."
बाबा भूमि पर बैठते हैं।
आँखें बंद।
मंदर की धीमी ध्वनि।

SCENE 3 – आंतरिक शक्ति का प्रदर्शन
हवा स्थिर।
आकाश में बादल छंटते हैं।
बाबा का चेहरा तेजस्वी।
बाबा (नेत्र बंद, गूंजता स्वर)
"परम शक्ति प्रकृति में नहीं —
प्रकृति परम शक्ति में है...
जो अपने भीतर के वृक्ष को हरा कर ले...
उसे बाहर का वृक्ष स्वयं हरा दिखाई देगा..."
अचानक हल्की वर्षा की बूँदें गिरती हैं।
सूखे वृक्ष की शाखा पर एक छोटा हरा अंकुर चमक उठता है।
भीड़ से सामूहिक स्वर:
"सतनाम!"

जमींदार स्तब्ध।

SCENE 4 – अहंकार का पतन
जमींदार धीरे-धीरे आगे आता है।
घुटनों पर बैठ जाता है।
जमींदार (कंपित स्वर)
"मैंने शक्ति को बाहरी चमत्कार समझा...
आज जाना — असली शक्ति आत्मज्ञान है..."
बाबा
"अहंकार अज्ञान की जंजीर है...
जब वह टूटती है —
तभी मनुष्य स्वतंत्र होता है..."

SCENE 5 – चरम संवाद
जमींदार
"क्या हर व्यक्ति उस परम शक्ति को जान सकता है?"
बाबा
"हर प्राणी में वही प्रकाश है...
परंतु उसे देखने के लिए
मन को निर्मल और मेरुदंड को स्थिर करना होगा...
सात भांवर पार करो —
सतनाम का साक्षात्कार होगा..."

SCENE 6 – जनजागरण
जमींदार अपनी तलवार नीचे रख देता है।
जमींदार (भीड़ की ओर)
"आज से मेरे राज्य में
कोई ऊँच-नीच नहीं होगी...
सतनाम ही सत्य होगा!"

भीड़ एक स्वर में:
"सतनाम! सतनाम!"

🎬 FINAL SHOT
कैमरा ऊपर उठता है।
पीपल वृक्ष की हरी पत्ती हवा में लहराती है।
सूर्य की किरणें बाबा के पीछे आभामंडल बनाती हैं।

🌍 ENGLISH VERSION

SCENE 28 – THE TEST OF THE SUPREME

A proud landlord challenges Baba.

Landlord
"If you know the Supreme Power — prove it!"

Baba
"One who sees the sun does not need a lamp as proof."

Landlord demands a miracle.
Baba replies:
"The Supreme does not perform tricks.
It awakens consciousness."

Rain falls lightly.
A green sprout appears on a dry branch.
Crowd chants: "Satnam!"

Landlord (kneeling)

“I mistook power for dominance…

Today I see — true power is inner awakening.”

Baba

“When ego falls, freedom begins.”

🎬 FADE OUT

Echoing chant: “Satnam…”

SCENE 29

🎬 दृश्य 29 — बाबा गुरु घासी दास जी
(1775)
“सामाजिक क्रांति का उद्घोष”
📍 स्थान: ग्राम चौपाल – विशाल जनसभा
🕔 समय: सांध्य बेला, सूर्यास्त से पूर्व

🎞️ FADE IN:

EXT. ग्राम चौपाल – सांध्यकाल

आकाश में केसरिया आभा।
सैकड़ों ग्रामीण एकत्र।
महिलाएँ, बुजुर्ग, युवा, बच्चे — सब उपस्थित।
मंच के मध्य तेजस्वी व्यक्तित्व —
✨ बाबा गुरु घासी दास जी
पीछे मंदर और झांझ की धीमी लय।

SCENE 1 – सामाजिक विकृतियों का उल्लेख
बाबा (गंभीर, करुणामय स्वर)
“हे मानव...
तुम परम चेतना के अंश हो...
फिर क्यों स्वयं को तामसिक प्रवृत्तियों में बाँधते हो?”
भीड़ शांत।

बाबा (स्वर में तीव्रता)
“मदिरापान —
तुम्हारी चेतना को अंधकार में ढकेल देता है।

स्त्रीगमन की विकृति —
परिवार और समाज की नींव को तोड़ देती है।
पशु अत्याचार —
करुणा के हृदय को पत्थर बना देता है।
मांसाहार और तामसिक भोजन —
मन को स्थूल और चंचल बनाते हैं।"

SCENE 2 – जीवंत संवाद
भीड़ में से एक युवक आगे आता है।
युवक (संकोच से)
"बाबा... यदि हम इन सबका त्याग कर दें...
तो जीवन में आनंद कहाँ से आएगा?"
बाबा (मुस्कुराकर)
"आनंद बाहर के नशे में नहीं...
आनंद भीतर की जागृति में है।
जिसने सुषुम्ना को जागृत किया —
उसे किसी मदिरा की आवश्यकता नहीं।"

SCENE 3 – परिवर्तन का क्षण
एक व्यक्ति शराब का मटका लेकर आगे आता है।
व्यक्ति (आँखों में पश्चाताप)
"आज से यह विष त्यागता हूँ..."
वह मटका भूमि पर तोड़ देता है।
भीड़ "सतनाम!" का उद्घोष करती है।
एक शिकारी अपना जाल और हथियार रख देता है।
महिलाएँ आँसू पोंछती हैं — पर वह दुःख के नहीं,
मुक्ति के आँसू हैं।

SCENE 4 – क्रांति का उद्घोष
बाबा (उद्घोष की मुद्रा में)
"आज से यह संकल्प लो —

- मदिरापान का त्याग
- स्त्री का सम्मान
- पशु पर दया
- मांसाहार और तामसिक भोजन का त्याग
- सत्य, सेवा और सतनाम का पालन

यही सच्ची क्रांति है —
यही आध्यात्मिक स्वतंत्रता है!"
भीड़ एक स्वर में:
"हम संकल्प लेते हैं!"

SCENE 5 – आंदोलन का विस्तार
MONTAGE (INTERNATIONAL CINEMATIC FLOW)

- संदेश पड़ोसी गांवों तक पहुँचता है।
- लोग समूह में "सतनाम" का जाप करते हुए चलते हैं।
- शराब की दुकानों पर ताले।
- पशुओं को मुक्त किया जा रहा है।
- स्त्रियों के प्रति सम्मान का व्यवहार।

वॉइस ओवर — बाबा की गूंजती आवाज़:
"सच्ची शक्ति आत्मसंयम में है...
जो स्वयं को जीत लेता है —
वही जगत को दिशा देता है..."

SCENE 6 – ऐतिहासिक चरम
कैमरा ऊँचाई से पूरा क्षेत्र दिखाता है।
सैकड़ों दीप जलते हुए।

लोगों का विशाल समूह —
मानो एक आंदोलन जन्म ले चुका हो।
बाबा के पीछे सूर्यास्त की अंतिम किरण।

बाबा (अंतिम संवाद)
"यह आंदोलन किसी एक गांव का नहीं...
यह मानवता के उत्थान का मार्ग है...
सतनाम — ही जीवन का परम सत्य है..."

🎬 FADE OUT
गूंजता स्वर — "सतनाम... सतनाम..."

🌍 **ENGLISH VERSION**

SCENE 29 – THE SOCIAL AWAKENING
Location: Village Square
Time: Sunset

FADE IN:
Hundreds gathered.
Baba Guru Ghasi Das stands illuminated by the golden sky.

Baba
"O human, you are a fragment of Supreme Consciousness.
Why bind yourself to darkness?"

He speaks against:
- Alcohol addiction
- Exploitation and immoral conduct
- Animal cruelty

- Meat consumption and tamasic food

Young Man
“If we give up these pleasures… where is joy?”

Baba
“Joy is not in intoxication.
It is in awakening.”

A man breaks his liquor pot.
A hunter drops his weapons.
Women weep in relief.

Baba (raising his hand)
“Take this vow:
Renounce intoxication.
Respect women.
Show compassion to animals.
Abandon violence and tamasic food.
Live by Satnam.”

MONTAGE
Message spreads to nearby regions.
Liquor shops close.
Communities unite.

Final Words
“This is not just reform.
This is a spiritual revolution.”

🎬 **End of Scene 29**

SCENE 30

दृश्य 30

कहानी का शीर्षक – बाबा गुरु घासी दास जी
वर्ष – 1776, आषाढ़ माह
समय – प्रातः 5 बजे से दोपहर 12 बजे तक
स्थान – एक गाँव से दूसरे गाँव की ओर जाती सतनाम पदयात्रा

EXT. कच्चा ग्रामीण मार्ग – भोर – 5:00 AM

हल्की धुंध। आषाढ़ की नमी भरी हवा।
सतनाम पदयात्रा आगे बढ़ रही है। मृदंग, झांझ, मंजिरा।
पंथी गीत गूंज रहे हैं।
भीड़ के मध्य तेजस्वी व्यक्तित्व —
बाबा गुरु घासी दास जी
सैकड़ों अनुयायी एक स्वर में —
भीड़:
"सतनाम... सतनाम..."

EXT. खेतों के बीच मार्ग – सुबह 8:30 बजे

किसान हल चला रहे हैं।
बैल मिट्टी में जूझ रहे हैं।
धरती कठोर है — तीन वर्षों से अल्प वर्षा।
एक किसान रुकता है।
पहला किसान (आवाज़ लगाते हुए):
"अरे! गुरु बाबा आ गए!"
धीरे-धीरे सभी किसान हल छोड़ देते हैं।
कुछ बैल खुद ही रुक जाते हैं।

वे दौड़ते हुए मार्ग पर आते हैं।

EXT. विशाल पीपल वृक्ष के नीचे – 10:30 AM

विशाल पीपल वृक्ष की छाया।
तेज धूप।
सब लोग वृक्ष के नीचे एकत्र।
किसान दंडवत प्रणाम करते हैं।
दूसरा किसान (व्याकुल):
"गुरु बाबा... तीन वर्ष से वर्षा नहीं हुई।
जमीन पत्थर हो गई है।
हल नहीं चलता... बैल खींच नहीं पाते..."
तीसरा किसान (आँखों में आँसू):

"अकाल पड़ा है बाबा।
इस वर्ष बोवाई के लिए बीज भी नहीं हैं।

बस... ये सात मुट्ठी धान के बीज बचे हैं।
और सात एकड़ खेत बाकी हैं..."
वह अपनी हथेली खोलता है —
सिर्फ सात मुट्ठी बीज।
कैमरा क्लोज-अप —

बीजों पर सूरज की किरण।
सन्नाटा।

बाबा गुरु घासी दास जी शांत भाव से मुस्कुराते हैं।
वे धीरे से बीज अपनी हथेली में लेते हैं।
बाबा (गंभीर, दिव्य स्वर में मंत्रोच्चार):

सतनाम का सभी पसरा

तहां तहां सतनाम की राखा...अन्नपूर्णा पास बैठाली, गई थोड़ो भई ख़ुसालो। चिन्नत मनी कल्प तराई काम धेनु को साथ लियए,आया आप कुबेर भंडारी।साथ लक्ष्मी आज्ञाकारी। सतपुरूष पूरण किया सवारथ । बिच आ बैठे पांच पदार्थ । राखा बरमा विष्णु,महेश,काली भैरू हनु गणेश। सिद्ध चौरासी अहै नव नाथ, बावन वीर जती चौंसठ। धाकन गगन पृथिवी का बासन रहे, अम्बोल न डोले आसान राखा हुआ। आप निरंकार थोड़ो भाग गईं, समुद्रों पार अटूट भण्डार, अकूत अपार। खात खरचत कुछ होय न ऊना,देव देवाय दूना चौना। सतपुरूष गुरु की झोली मेरे हाथ,गुरु वचनी बंधे पांच तात। वे अंत बे अंत भंडार, जिनकी पैज रखी करतार। मंतर पूरना जी का सम्पूर्ण भया,बाबा सतपुरूष जी का।गुरु के चरण कमल को नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

(मंत्र पूरा उच्चारित करते हैं — वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर उठता है)

कैमरा — आकाश की ओर।

बादलों की हल्की रेखा।

EXT. खेत – निरंतर

बाबा स्वयं बीज बोना प्रारंभ करते हैं।

सभी लोग विस्मित।

एक एकड़...

दो...

तीन...

बीज समाप्त नहीं होते।

सात एकड़ भी पूर्ण।

भीड़ स्तब्ध।

पहला किसान (फुसफुसाते हुए):

“यह कैसे संभव है...?”

बैल का दृश्य
एक किसान दुखी खड़ा है।
तीसरा किसान:
“गुरु बाबा... मेरा बैल नागर नहीं खींचता... पूरा गरियार है...”
बाबा उसके पास जाते हैं।
बैल के माथे पर हाथ फेरते हैं।
बाबा (धीरे):
“बावन वीर जाति चौंसठ...”
फिर किसान से —
बाबा:
“इन बेजुबानों का भी ध्यान रखो।
दोपहर की तपती धूप में इन्हें कम से कम चार घंटे विश्राम दो।
तभी ये तुम्हारे सच्चे साथी बनेंगे।”
बैल अचानक हल खींचना शुरू करता है।
मिट्टी चिरती चली जाती है।
किसान आश्चर्यचकित।

क्लाइमेक्स
बादलों की गर्जना।
हल्की फुहार गिरती है।
किसान जयकारा लगाते हैं —
भीड़:
“सतनाम!”
“बाबा गुरु घासी दास जी की जय!”
बाबा शांत दृष्टि से आकाश देखते हैं।
बाबा:
“विश्वास में शक्ति है।
करुणा में समृद्धि है।

सतनाम में असीम भंडार है।"

कैमरा ऊपर उठता है।

पीपल वृक्ष की पत्तियाँ हवा में झूमती हैं।

दृश्य धीरे-धीरे धुंधला।

SCENE 30 (ENGLISH VERSION)

TITLE – BABA GURU GHASIDAS JI
YEAR – 1776, MONTH OF ASHADHA
TIME – 5:00 AM TO NOON
LOCATION – SATNAM FOOT MARCH BETWEEN VILLAGES

EXT. RURAL DUST ROAD – DAWN

Morning mist. Devotional music fills the air.

Hundreds walk in harmony.

At the center — Baba Guru Ghasidas Ji.

Crowd chants: "Satnam... Satnam..."

EXT. FIELDS – MORNING

Farmers struggle with hardened soil.

Three years of drought.

They see the procession and run forward.

EXT. UNDER A GREAT PEEPAL TREE – LATE MORNING

Farmers bow.

Farmer 1: "Gurudev... no rain for three years. The land has turned to stone."

Farmer 2 (showing palm):
"Only seven handfuls of paddy seeds remain…
Seven acres are yet to be sown…"
Silence.
Baba takes the seeds.
He chants powerfully.
"Satnam pervades all creation…
Wherever the eye reaches,
there the protection of Truth resides…"
Spiritual energy builds.

FIELD SEQUENCE
He begins sowing.
One acre…
Two…
Three…
The seeds do not diminish.
All seven acres are sown.
Gasps of disbelief.

THE OX SCENE
A farmer complains his ox refuses to pull the plough.
Baba gently touches the animal.
"Bawan Veer Jati Chounsath…"
He turns to the farmers:
"Care for these voiceless beings.
Give them rest under the burning sun.
Compassion creates strength."

The ox begins pulling smoothly.

FINAL MOMENT

Thunder rolls softly.

Light rain begins.

Farmers shout:

"Satnam!"

"Victory to Baba Guru Ghasidas Ji!"

Baba looks at the sky.

"Faith brings abundance.

Compassion sustains life.

Truth holds endless treasure."

Camera rises above the peepal tree.

FADE OUT.

SCENE 31

दृश्य 36

कहानी का शीर्षक – बाबा गुरु घासी दास जी
वर्ष – 1776
स्थान – ग्रामीण क्षेत्र से रतनपुर राजदरबार तक
समय – कुछ दिनों बाद

ACT 1 – चमत्कार की गूंज

EXT. गाँव का चौक – दिन

किसान समूहों में चर्चा कर रहे हैं।
पहला किसान (उत्साह से):
"सात मुट्ठी बीज से सात एकड़ की बोवाई!"
दूसरा किसान:
"और मेरा गरियार बैल... अब ऐसे चल रहा है जैसे नई जान आ गई हो!"
एक युवक घोड़े पर बैठा, यह सब सुनकर गंभीर हो जाता है।
कट टू —

EXT. कच्चा मार्ग – निरंतर

वही युवक तेजी से घोड़ा दौड़ाता हुआ रतनपुर की ओर।

ACT 2 – राजदरबार
INT. रतनपुर दरबार – दिन
भव्य सभा। सैनिक, मंत्री, दरबारी।
राजसिंहासन पर क्षेत्रीय शासक बैठा है।

दूत झुककर प्रणाम करता है।
दूत:
“महाराज, एक संत ग्रामीणों के बीच विचित्र प्रभाव डाल रहे हैं।
कहा जाता है कि उन्होंने सात मुट्ठी बीज से सात एकड़ बो दिए।”
दरबार में फुसफुसाहट।
मंत्री:
“महाराज, यदि यह सत्य है तो यह असाधारण है।
यदि असत्य है, तो जनभावना भटक सकती है।”
राजा गंभीर स्वर में —
राजा:
“उन्हें आदर सहित आमंत्रित किया जाए।
हम सत्य जानना चाहते हैं।”

ACT 3 – संत और सत्ता का संवाद

EXT. राजमहल प्रांगण – अगला दिन

बाबा गुरु घासी दास जी सादगीपूर्ण वेश में प्रवेश करते हैं।
साथ में कुछ अनुयायी।
दरबार में मौन।
राजा खड़े होकर अभिवादन करता है।
राजा:
“गुरुदेव, आपके कार्यों की चर्चा दूर-दूर तक है।
क्या यह चमत्कार है?”
बाबा शांत मुस्कान के साथ —
बाबा:
“जहाँ विश्वास और करुणा एक साथ होते हैं,
वहाँ प्रकृति स्वयं सहयोग करती है।
मैंने कुछ नहीं किया।

सतनाम ने किया।"
दरबार में सन्नाटा।
राजा:
"और सात मुट्ठी बीज?"
बाबा:
"भंडार असीम है, महाराज।
मन की कमी ही अभाव बनती है।"
राजा प्रभावित।

सामाजिक संदेश
बाबा दरबार में उपस्थित जनों से —
बाबा:
"मनखे मनखे एक समान।
राजा और रंक में कोई भेद नहीं।
सभी में परम सत्य निवास करता है।
पशुओं पर दया, धरती का सम्मान —
इसी में राज्य की समृद्धि है।"
राजा सिर झुका देता है।
राजा: "आपका संदेश हमारे राज्य में स्वतंत्र रूप से फैलेगा।"

FINAL VISUAL
जैतखाम की श्वेत छवि आकाश में उभरती है।
दरबार के बाहर जनता सतनाम गा रही है।
कैमरा ऊपर उठता है।
वॉयसओवर —
बाबा (V.O.): "सत्ता क्षणिक है।
सत्य शाश्वत है।"

FADE OUT.

SCENE 31 (ENGLISH VERSION)

TITLE – BABA GURU GHASIDAS JI
YEAR – 1776
LOCATION – FROM RURAL FIELDS TO THE ROYAL COURT OF RATANPUR

ACT 1 – The News Spreads

Villagers excitedly narrate the miracle.

A messenger rides swiftly toward the royal capital.

ACT 2 – The Royal Court

Inside the grand court, the regional ruler listens.

Messenger:

"Your Majesty, a saint has sown seven acres with seven handfuls of seeds."

Whispers fill the hall.

King:

"If this is truth, it must be understood. Invite him respectfully."

ACT 3 – Saint Meets Power

Baba Guru Ghasidas enters humbly.

King:

"Was it a miracle?"

Baba:

"When faith joins compassion, nature responds.

I did nothing. Truth did."

Silence.

King:
"And the endless seeds?"
Baba:
"The universe holds infinite abundance.
Scarcity lives only in fear."
He turns to the court:
"All humans are equal.
Compassion toward animals, respect for earth —
this sustains a kingdom."
The King bows slightly.

FINAL SHOT
The white Jaitkham rises against the sky.
Voice Over:
"Power fades.
Truth remains."
FADE TO BLACK.

SCENE 32

दृश्य 37

कहानी का शीर्षक – बाबा गुरु घासी दास जी
वर्ष – 1777
स्थान – सोनाखान राजदरबार एवं जोक नदी सीमा क्षेत्र
समय – प्रातः 10 बजे से संध्या तक

ACT 1 – षड्यंत्र

INT. सोनाखान राजदरबार – सुबह 10 बजे

भव्य सभा। सिंहासन पर सोनाखान का राजा।

दरबार में तनावपूर्ण वातावरण।

गुप्तचर झुककर प्रणाम करता है।

गुप्तचर:

"महाराज, रतनपुर के राजा ने संत बाबा गुरु घासी दास जी को अपना गुरु स्वीकार किया है।

उनके अनुयायी दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं।"

मंत्री आगे बढ़ता है।

मंत्री (उत्तेजित स्वर में):

"महाराज! यदि राजा और गुरु एक हो गए,

तो वे हमारे राज्य को भी प्रभावित कर सकते हैं।

यह आध्यात्मिक प्रभाव राजनीतिक शक्ति बन सकता है।"

दरबार में भय की फुसफुसाहट।

राजा कठोर स्वर में —

सोनाखान राजा:

"हाथी-सवार सैनिक भेजे जाएँ।

उन्हें पकड़कर दरबार में प्रस्तुत किया जाए!"
नगाड़ा बजता है।
कट टू —

ACT 2 – सीमा पर सामना
EXT. जोक नदी – दोपहर
एक विशाल नदी — जो दोनों राज्यों की सीमा है।
एक ओर सतनाम रैली — शांत, भजन, पंथी गीत।
दूसरी ओर — हाथी-सवार सैनिक।
सैनिकों को आदेश मिलता है —
"नदी पार करो!"
हाथी पानी में उतरते हैं।

समानांतर दृश्य

EXT. सतनाम शिविर – उसी समय

रतनपुर के राजा सैनिकों सहित पहुँचते हैं।
रतनपुर राजा (चिंतित):
"गुरुदेव, आपकी सुरक्षा हेतु मेरे सैनिक तैनात रहेंगे।"
बाबा मुस्कुराते हैं।
बाबा:
"राजन, सत्य को रक्षा की आवश्यकता नहीं।

आप अपने राज्य का कार्य संभालें।
मुझे किसी का भय नहीं।"
रतनपुर राजा नतमस्तक।

ACT 3 – चमत्कार

EXT. जोक नदी – निरंतर

हाथियों का पानी कमर तक पहुँचता है।
अचानक —
गर्जना।
आकाश में बादल।
हाथियों के पैर कठोर होने लगते हैं।
धीरे-धीरे वे पत्थर बन जाते हैं।
सैनिक भयभीत।
सैनिक:
"महाराज! हाथी... चल नहीं रहे!"
पूरा दृश्य स्तब्ध।
नदी के मध्य — पत्थर बने हाथी।

ACT 4 – पश्चाताप
समाचार फैलता है —
कई राज्यों में चर्चा।
सोनाखान राजा स्वयं मंत्री सहित नदी तट पहुँचता है।
बाबा शांत खड़े हैं।
राजा घुटनों पर बैठ जाता है।
सोनाखान राजा:
"गुरुदेव, हमें क्षमा करें।
हम भय में अंधे हो गए थे।"
बाबा उसे उठाते हैं।
बाबा:
"भय ही विभाजन का कारण है।
सत्य किसी राज्य को नहीं छीनता,

सत्य मन को जीतता है।"
राजा हाथ जोड़ता है।
सोनाखान राजा:
"हमें भी ज्ञान दें।"

अंतिम दृश्य
दोनों राज्यों के लोग एक साथ खड़े।
नदी तट पर "सतनाम" की गूंज।
भीड़:
"मानव मानव एक समान!"
"सतनाम!"
कैमरा ऊपर उठता है।
नदी, पत्थर बने हाथी, और शांति।

FADE OUT.

SCENE 32 (ENGLISH VERSION)

TITLE – BABA GURU GHASIDAS JI
YEAR – 1777
LOCATION – COURT OF SONAKHAN & JONK RIVER BORDER

ACT 1 – The Conspiracy

Inside the royal court of Sonakhan.

A spy reports:

"Your Majesty, the King of Ratanpur has accepted Baba Guru Ghasidas as his spiritual master. His followers are increasing."

A minister adds:
“This spiritual movement may turn into political strength.”
The King commands:
“Send elephant-mounted soldiers. Bring him here.”

ACT 2 – At the River Border
At the Jonk River dividing the two states:
On one side — peaceful Satnam procession.
On the other — armed soldiers on elephants.
They march into the river.

Parallel Scene
The King of Ratanpur arrives to protect Baba.
Ratanpur King:
“Allow my army to guard you.”
Baba:
“Truth needs no protection.
I fear none.”

ACT 3 – The Miracle
As elephants move deeper into water —
Thunder roars.
Their legs harden.
One by one, elephants turn into stone.
Soldiers panic.
The river freezes into silence.

ACT 4 – Repentance

News spreads across kingdoms.

The King of Sonakhan arrives, kneels before Baba.

"Forgive us. Fear blinded us."

Baba replies:

"Fear divides.

Truth unites."

The King bows to receive wisdom.

FINAL SHOT

People of both kingdoms chant together:

"Satnam!"

"Mankhe Mankhe Ek Saman!"

Camera rises above the river —

Stone elephants remain as silent testimony.

FADE TO BLACK.

SCENE 33

दृश्य 33

कहानी का शीर्षक – बाबा गुरु घासी दास जी
वर्ष – 1777
स्थान – सोनाखान राज्य, जोक नदी के पास स्थित एक विशाल सरोवर
समय – संध्या 7 बजे

ACT 1 – सरोवर के किनारे

EXT. विशाल सरोवर – संध्या

सूर्य अस्त हो रहा है। आकाश सुनहरी और लालिमा से भर गया है।
शांत जल में आकाश का प्रतिबिंब झिलमिला रहा है।
बाबा गुरु घासी दास जी धीरे-धीरे चलते हुए
रतनपुर के राजा और सोनाखान के राजा को सरोवर के किनारे लाते हैं।
दोनों राजा आदरपूर्वक खड़े हैं।

बाबा गुरु घासी दास जी (शांत स्वर में):
"राजनों...
जो सतनाम को घट-घट में पहचान लेता है,
और हर प्राणी में परम सत्य को देख लेता है —
उसे संसार की कोई भी संपत्ति आकर्षित नहीं कर सकती।"
दोनों राजा ध्यान से सुनते हैं।
बाबा सरोवर का जल अपने हाथों में लेते हैं।
धीरे-धीरे कुछ गूढ़ मंत्र उच्चारित करते हैं।

ACT 2 – दिव्य महल का प्रकट होना
अचानक सरोवर का जल चमकने लगता है।
जल के भीतर से प्रकाश उठता है।
धीरे-धीरे एक अद्भुत दिव्य महल जल के ऊपर प्रकट होने लगता है —
स्वर्णिम प्रकाश से चमकता हुआ।
दोनों राजा स्तब्ध।
सोनाखान राजा (हैरान):
“यह... यह कैसे संभव है?”
रतनपुर राजा:
“ऐसा दिव्य दृश्य मैंने कभी नहीं देखा...”

ACT 3 – जल पर चलना
बाबा शांत मुस्कान के साथ सरोवर की ओर बढ़ते हैं।
वह जल की सतह पर कदम रखते हैं।
और ऐसे चलते हैं
जैसे कोई धरती पर चल रहा हो।
दोनों राजा विस्मय से देखते रह जाते हैं।
उसी क्षण —
दिव्य महल का द्वार खुलता है।
महल से एक स्वर्णिम मार्ग निकलता है
जो सरोवर पार कर सीधे राजाओं के पास आकर टिक जाता है।
बाबा:
“आइए राजनों...
सत्य के इस द्वार को स्वयं देखिए।”
दोनों राजा स्वर्ण मार्ग पर धीरे-धीरे चलते हुए महल तक पहुँचते हैं।

ACT 4 – दिव्य ज्ञान
INT. दिव्य महल – निरंतर
महल का अंदरूनी भाग स्वर्णिम प्रकाश से भरा है।
दीवारों पर अद्भुत प्रतीक और ज्योति।
बाबा दोनों राजाओं को महल दिखाते हैं।
बाबा:
"राजन...
यह सब केवल माया है।
धन, वैभव, राज्य —
सब नश्वर हैं।"
दोनों राजा ध्यान से सुनते हैं।
बाबा (गंभीर स्वर में):
"सच्चा राज्य वह है
जो मन और आत्मा पर विजय प्राप्त करे।
सतनाम का मार्ग ही अमर मार्ग है।"
दोनों राजा विनम्र हो जाते हैं।

ACT 5 – सत्य का बोध
कुछ समय बाद बाबा दोनों राजाओं को लेकर महल से बाहर आते हैं।
वे फिर से सरोवर के किनारे खड़े होते हैं।
बाबा हाथ उठाते हैं।
दिव्य महल धीरे-धीरे प्रकाश में विलीन होकर
अदृश्य हो जाता है।
सरोवर फिर से शांत।
दोनों राजा भावविभोर होकर
बाबा के चरणों में सिर झुका देते हैं।
दोनों राजा:
"गुरुदेव... हमें सत्य का मार्ग मिल गया।"

बाबा आशीर्वाद देते हैं।

बाबा:

"सत्य को पहचानो...
और समस्त प्राणियों में उसी परम सत्य को देखो।"

अंतिम दृश्य

सरोवर के ऊपर चाँद उगता है।
हवा में एक ही स्वर गूँजता है —
"सतनाम..."

"मनखे मनखे एक
समान..."

FADE OUT.

SCENE 33 (ENGLISH VERSION)

TITLE – BABA GURU GHASIDAS JI
YEAR – 1777
LOCATION – A GREAT LAKE NEAR THE JONK RIVER,
SONAKHAN REGION
TIME – EVENING, 7 PM

ACT 1 – At the Sacred Lake

Baba Guru Ghasidas brings the Kings of Ratanpur and Sonakhan to the edge of a vast lake during sunset.

The sky glows golden.

Baba: “A ruler who realizes Satnam in every heart cannot be tempted by the wealth of the world.”
He lifts water from the lake in his hands
and softly chants mystical words.

ACT 2 – The Divine Palace Appears
The water begins to glow.
A radiant divine palace slowly rises from the lake.
The kings stare in disbelief.
Sonakhan King:
“How can such a miracle exist?”

ACT 3 – Walking on Water
Baba steps onto the lake.
He walks on the water
as if walking on solid earth.
At that moment
the palace doors open.
A golden pathway extends from the palace
across the water to the kings.
Baba:
“Come, and witness the illusion of worldly power.”
The kings walk carefully along the golden path.

ACT 4 – The Secret of Satnam
Inside the palace everything shines with divine light.
Baba:
“All this wealth, power and glory are temporary illusions.”

He continues –
"The only eternal kingdom
is the kingdom of truth within the soul."
The kings listen humbly.

ACT 5 – Realization
Baba leads them back to the shore.
With a gentle gesture
the palace dissolves into light.
The lake returns to silence.
Both kings bow deeply.
Kings:
"Master, today we understand the truth."
Baba:
"See the divine truth in every living being."

FINAL SHOT
Moonlight spreads across the lake.
A spiritual chant echoes across the land:
"Satnam..."
"Mankhe Mankhe Ek Saman..."

FADE TO BLACK.

SCENE 34

दृश्य 34

कहानी का शीर्षक – बाबा गुरु घासी दास जी
वर्ष – 1777
स्थान – एक गाँव का चौक, देवी मंदिर और तालाब के पास
समय – सुबह 7 बजे

ACT 1 – गाँव का चौक और देवी मंदिर

EXT. गाँव का चौक – सुबह

हल्की धूप फैल रही है।
देवी मंदिर के सामने भीड़ लगी हुई है।
कुछ लोग बकरा और मुर्गा लेकर खड़े हैं।
ढोल की धीमी आवाज़।
भय और अंधविश्वास का माहौल।
इसी समय दूर से सतनाम पंथी गीत की धुन सुनाई देती है।
सफेद वस्त्रों में चलते हुए
बाबा गुरु घासी दास जी
अपने अनुयायियों के साथ गाँव में प्रवेश करते हैं।
अचानक मंदिर से
बकरे की चीख सुनाई देती है।
बाबा रुक जाते हैं।
धीरे-धीरे मंदिर के पास पहुँचते हैं।

ACT 2 – प्रश्न
बाबा गुरु घासी दास जी (शांत स्वर में):
“क्या कर रहे हो भाइयों?
इस पवित्र स्थान पर इन बेजुबान प्राणियों की हत्या क्यों?”
गाँव के कुछ लोग आगे आते हैं।
पहला ग्रामीण (दुखी स्वर में):
“गुरु बाबा... हमारे गाँव में एक ही तालाब है।
उसमें स्नान करते ही पूरे शरीर में खुजली होने लगती है।”
दूसरा ग्रामीण (तालाब की ओर इशारा करते हुए):
“दूसरे गाँव वाले हमें अपने तालाब में स्नान करने नहीं देते।
कहते हैं कि हमसे उनका पानी भी अपवित्र हो जाएगा।”
वह धीरे से बोलता है —
“हमारे कुल देवी का प्रकोप है।
उन्हें मनाने के लिए आज बलि दी जा रही है।”
तभी तीसरा आदमी भीड़ चीरते हुए आता है।
तीसरा ग्रामीण (घबराकर):
“अरे! यह तो बाबा गुरु घासी दास जी हैं!”
वह तुरंत बाबा के चरणों में गिर जाता है।
तीसरा ग्रामीण:
“गुरु जी, लोग आपको पहचान नहीं पाए।
हमारा जीवन नरक बन गया है।”
वह कुछ लोगों और बच्चों के
चर्म रोग दिखाता है।
भीड़ में सन्नाटा।

ACT 3 – सत्य का संदेश
बाबा सबको करुणा से देखते हैं।
बाबा गुरु घासी दास जी:

“कोई भी देवी अपने ही पुत्रों से कभी नाराज़ नहीं होती।”
वे धीरे से आगे कहते हैं —
“और बेजुबान प्राणियों की हत्या से कोई देवता प्रसन्न नहीं होते।”
भीड़ चुप।
बाबा:
“यदि यह तालाब स्नान और पीने योग्य हो जाए...
तो क्या तुम सब इन निर्दोष प्राणियों की बलि देना छोड़ दोगे?”
लोग एक-दूसरे की ओर देखते हैं।
फिर एक साथ बोलते हैं —
भीड़:
“हाँ गुरु जी... हम वचन देते हैं।”

ACT 4
बाबा धीरे-धीरे तालाब के किनारे जाते हैं।
पूरा गाँव उनके पीछे चलता है।
बाबा अपने तुम्बा से थोड़ा जल निकालते हैं।
हथेली में लेकर
आँखें बंद कर कुछ मंत्र बोलते हैं।
फिर वह जल तालाब में छिड़कते हैं।
अचानक —
तालाब का मटमैला पानी साफ होने लगता है।
कीचड़ नीचे बैठ जाती है।
कुछ ही क्षणों में पानी
स्वच्छ और चमकदार हो जाता है।
भीड़ विस्मय में।

ACT 5 – विश्वास
फिर भी लोग डरते हैं।

कोई पानी को छूने की हिम्मत नहीं करता।
बाबा मुस्कुराते हैं।
वे स्वयं तालाब में उतरते हैं।
धीरे-धीरे स्नान करते हैं।
फिर बाहर आते हैं।
बाबा:
"अब यह जल पूर्णतः शुद्ध है।
आप सब इसका उपयोग कर सकते हैं।"
भीड़ में खुशी और आश्चर्य।

ACT 6 – करुणा का वचन
बाबा सबकी ओर देखते हैं।
बाबा गुरु घासी दास जी:
"आज से मुझे वचन दो —
किसी भी बेजुबान प्राणी की हत्या
देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के नाम पर नहीं करोगे।"
पूरे गाँव के लोग हाथ जोड़ लेते हैं।
सभी ग्रामीण (एक स्वर में):
"हम वचन देते हैं गुरु जी!"
बकरा और मुर्गा
आज बच जाते हैं।
बच्चे खुशी से तालाब की ओर दौड़ते हैं।
भीड़ में जयकारा गूंजता है —
"सतनाम!"

"मनखे मनखे एक
समान..."

FADE OUT.

SCENE 34 (ENGLISH VERSION)

TITLE – BABA GURU GHASIDAS JI
YEAR – 1777
LOCATION – VILLAGE SQUARE NEAR A TEMPLE AND POND
TIME – MORNING 7 AM

ACT 1 – The Village Ritual

Villagers gather near a small temple.

A goat and a rooster are tied for sacrifice.

At that moment

Baba Guru Ghasidas

arrives with his followers singing Satnam hymns.

A cry of a goat echoes.

Baba stops.

Baba:

"Brothers... why are you killing these innocent animals in a sacred place?"

ACT 2 – The Problem

A villager explains.

Villager:

"Our only pond causes terrible itching when we bathe in it."

Another villager points to the pond.

Second Villager:

"Other villages refuse to let us use their water."

He whispers nervously —

"They say our village goddess is angry.

We are offering animal sacrifices to please her."
A third man recognizes Baba.
He falls at his feet.
Third Villager:
"Forgive us, Guru Ji.
Our lives have become miserable."
He shows the skin diseases on villagers and children.

ACT 3 – Baba's Teaching
Baba speaks gently.
Baba:
"No divine mother is ever angry with her own children."
He continues —
"No God becomes happy with the killing of innocent beings."
Then he asks —
"If this pond becomes pure...
will you promise to stop animal sacrifice?"
The villagers respond together.
Crowd:
"Yes, Guru Ji."

ACT 4 – The Miracle
Baba walks to the pond.
He pours water from his tumba into his palm.
After chanting sacred words
he sprinkles it into the pond.
Suddenly the muddy water clears.

Within moments the pond becomes crystal clear.
The villagers stare in amazement.

ACT 5 – Faith
Still afraid, no one touches the water.
Baba smiles.
He steps into the pond
and bathes.
Then he turns to the villagers.
Baba:
"The water is now pure.
You may use it without fear."

ACT 6 – The Promise
Baba raises his hand.
Baba:
"Promise me today —
never again will you harm innocent animals
in the name of worship."
The villagers fold their hands.
All Villagers:
"We promise, Guru Ji."
The goat and rooster are released.
Children run joyfully toward the pond.
The air echoes with a powerful chant — "Satnam!"
"Mankhe Mankhe Ek Saman!"

FADE OUT.

SCENE 35

दृश्य 35
हिंदी

फिल्म का शीर्षक: बाबा गुरु घासी दास जी
वर्ष: 1777
स्थान: शिवनाथ नदी के किनारे, गाँव के प्रवेश पर विशाल बरगद का वृक्ष
समय: सुबह 11 बजे

EXT. शिवनाथ नदी तट – विशाल बरगद वृक्ष – सुबह

शिवनाथ नदी शांत गति से बह रही है। नदी के किनारे बसे छोटे से गाँव के प्रवेश द्वार पर एक विशाल और प्राचीन बरगद का वृक्ष खड़ा है।
उसके नीचे कई भगवाधारी साधु आसन लगाए बैठे हैं।
दूर से मृदंग और मंजिरों की धीमी ध्वनि सुनाई देती है।
बाबा गुरु घासी दास जी अपने अनुयायियों के साथ सतनाम का संदेश देते हुए गाँव की ओर बढ़ रहे हैं।
उनके अनुयायी धीरे-धीरे गाते हैं —
अनुयायी (समूह में)
सतनाम... सतनाम...
जैसे ही वे बरगद के पास पहुँचते हैं, एक भगवाधारी साधु उनका रास्ता रोकता है।

साधु (व्यंग्य करते हुए)
देखो... इस क्षेत्र का नया संत आ गया।
गाँव-गाँव भटकता फिरता है।

बाकी साधु जोर से हँसने लगते हैं।

दूसरा साधु
अरे! यह कैसा संत है?
इसके वस्त्र में तो कोई भक्ति का रंग ही नहीं!
सभी साधु फिर से हँसते हैं।

बाबा गुरु घासी दास जी
(शांत मुस्कान के साथ)
सभी संत समाज को सतनाम।

तीसरा साधु (हँसते हुए)
यह सतनाम कौन सा धर्म है?

बाबा गुरु घासी दास जी
सत्य ही सबसे बड़ा धर्म है।
हर प्राणी में एक ही सत्य का प्रकाश है — वही सतनाम है।

तभी एक साधु बीच में टोक देता है।
साधु
अगर तुम्हारे पास कोई चमत्कार है,
तो दिखाओ।

बाबा गुरु घासी दास जी
सत्य को किसी चमत्कार की आवश्यकता नहीं होती,
साधु महाराज।
सत्य स्वयं ही पर्याप्त है।

दूसरा साधु
बड़ी-बड़ी बातें तो कोई भी कर सकता है।
अगर कोई प्रमाण है तो दिखाओ...
नहीं तो यहाँ से चले जाओ।

धीरे-धीरे आसपास के गाँव के लोग भी वहाँ जमा होने लगते हैं।
साधु आपस में धीरे से बात करते हैं।
साधु (धीरे से)
अगर ये कोई चमत्कार दिखाए तो
आज भोजन की व्यवस्था हो जाएगी।

एक साधु आगे बढ़कर बोलता है —
साधु
अगर तुम्हारे पास शक्ति है
तो बिना आग और पानी के
हम सब साधुओं के लिए भोजन बनाकर दिखाओ।

बाबा गुरु घासी दास जी
(मुस्कुराते हुए)
बस इतनी सी बात?
तो आप सब अपने-अपने भोजन के पात्र सामने रख दीजिए
और मन में जो भोजन चाहें, उसका स्मरण कीजिए।

सभी साधु जल्दी-जल्दी अपने भोजन पात्र सामने रख देते हैं।
चारों ओर सन्नाटा छा जाता है।
बाबा गुरु घासी दास जी अपने तुम्बा से थोड़ा जल हथेली में लेते हैं।
वे आँखें बंद करते हैं और कुछ मंत्र उच्चारित करते हैं।
फिर जल को आकाश की ओर घुमाकर चारों ओर छिड़क देते हैं।
अचानक एक अद्‌भुत दृश्य घटित होता है।

साधुओं के भोजन पात्रों से
विभिन्न प्रकार के भोजन स्वयं प्रकट होने लगते हैं।
पूरी जगह पर सुगंध फैल जाती है।

साधु आश्चर्यचकित रह जाते हैं।
वे खाने लगते हैं।
खाते-खाते थक जाते हैं,
लेकिन किसी भी पात्र का भोजन समाप्त नहीं होता।

धीरे-धीरे सभी साधु उठकर
बाबा गुरु घासी दास जी के चरणों में गिर पड़ते हैं।

साधु (लज्जित होकर)
हमें क्षमा करें गुरुजी।
हमने आपको पहचाना नहीं।

बाबा गुरु घासी दास जी
सत्य का मार्ग विनम्रता से शुरू होता है।

बाबा गुरु घासी दास जी गाँव की ओर देखते हैं।

बाबा गुरु घासी दास जी
आज से इस स्थान का नाम भंडारपुरी होगा।
जब तक लोगों की आस्था सत्य और सतनाम में बनी रहेगी,
यह भंडार कभी खाली नहीं होगा।

गाँव के लोग एक साथ जयकारा लगाते हैं —
भीड़
सतनाम!

सतनाम!
कैमरा धीरे-धीरे ऊपर उठता है।
विशाल बरगद वृक्ष के नीचे
सतनाम की ध्वनि गूंजती रहती है।

FADE OUT

SCENE 35 (ENGLISH)

FILM TITLE: BABA GURU GHASI DAS JI
YEAR: 1777
LOCATION: VILLAGE ENTRANCE NEAR THE SHIVNATH RIVER, BENEATH A GIANT BANYAN TREE
TIME: 11:00 AM

EXT. SHIVNATH RIVERBANK – GIANT BANYAN TREE – MORNING

The Shivnath River flows calmly beside a village.

At the entrance of the village stands a massive ancient Banyan tree.

Several saffron-clad monks are resting beneath its shade.

From a distance, the soft sound of drums and cymbals echoes.

BABA GURU GHASI DAS JI approaches with his followers, spreading the message of Satnam.

His followers chant softly.

FOLLOWERS (CHANTING)

Satnam... Satnam...

As they reach the Banyan tree, a saffron-clad monk blocks their path.

MONK (mocking)

Look… the local saint of this region

wanders from village to village.

The other monks burst into laughter.

SECOND MONK

What kind of saint is this?

There is no color of devotion in his clothes!

More laughter.

BABA GURU GHASI DAS JI

(smiling calmly)

Satnam to all respected saints.

THIRD MONK

What religion is this — Satnam?

BABA GURU GHASI DAS JI

Truth is the greatest religion.

The same divine truth lives within every being.

That truth is Satnam.

A monk interrupts.

MONK

If you possess any miracle…

show it.

BABA GURU GHASI DAS JI

Truth does not require miracles, respected saint.

Truth itself is enough.

SECOND MONK

Anyone can speak big words.

If you have proof — show it.

Otherwise leave this place.

Villagers begin gathering around the scene.

The monks whisper among themselves.

MONK (whispering)

If he performs something miraculous, we might at least get food today.

One monk steps forward.

MONK

If you truly have power, prepare food for all of us without fire and without water.

BABA GURU GHASI DAS JI

(smiling)

Is that all?

Then place your food bowls in front of you

and think of whatever food you desire.

The monks quickly place their empty bowls before them.

Silence fills the air.

Baba Guru Ghasi Das Ji takes a little water from his tumba into his palm.

He closes his eyes and softly chants sacred words.

Then he lifts his hand toward the sky

and sprinkles the water around.

Suddenly, an astonishing miracle unfolds.

Different kinds of delicious food begin appearing inside the monks' bowls.

A fragrant aroma spreads everywhere.

The monks stare in disbelief.

They begin eating.

They eat and eat... until they are full.

Yet the bowls never become empty.

One by one, the monks stand and fall at Baba Guru Ghasi Das Ji's feet.

MONK (humbly)

Forgive us, Guruji.

We failed to recognize you.

BABA GURU GHASI DAS JI

The path of truth begins with humility.

Baba Guru Ghasi Das Ji looks toward the village.

BABA GURU GHASI DAS JI

From today, this place will be called Bhandarpuri.

As long as people keep faith in Truth and Satnam, this divine store will never be empty.

The villagers raise their voices together.

VILLAGERS

Satnam!

Satnam!

The camera slowly rises above the giant Banyan tree.

The sacred chant of Satnam echoes across the river.

FADE OUT

SCENE 36

🎬 दृश्य 36 — बाबा गुरु घासी दास जी (1775)

“आंदोलन से पंथ तक — आध्यात्मिक क्रांति का उदय”
📍 स्थान: गिरौदपुरी के समीप विस्तृत मैदान
🕛 समय: प्रातःकाल से रात्रि तक

🎞️ FADE IN:

EXT. विस्तृत मैदान – सूर्योदय

ड्रोन शॉट।
हरी धरती पर हजारों लोग एकत्र।
सफेद वस्त्रों की धवल लहरें।
मंच के मध्य — शांत, तेजस्वी, दिव्य आभा से घिरे:
✨ बाबा गुरु घासी दास जी
पीछे उगता सूर्य।
संगीत — मंदर की गहरी थाप।

SCENE 1 – उद्घाटन
बाबा (गंभीर, गूंजता स्वर)
“आज जो आरंभ हुआ है...
वह केवल एक गांव का परिवर्तन नहीं...
यह मानव चेतना का पुनर्जागरण है।”
भीड़ पूर्ण मौन।

SCENE 2 – संगठन की स्थापना
बाबा अपने प्रमुख शिष्यों को आगे बुलाते हैं।

बाबा
“आज से यह केवल उपदेश नहीं रहेगा...
यह एक मार्ग होगा...
एक पंथ —
जो सत्य, समता और सतनाम पर आधारित होगा।”
शिष्य एक साथ हाथ जोड़ते हैं।

SCENE 3 – सात संकल्प (CINEMATIC RITUAL)
बाबा भूमि पर खड़े होकर हाथ आकाश की ओर उठाते हैं।
बाबा
“जो इस पंथ में आएगा —
वह सात संकल्प लेगा:
1. सत्य का पालन
2. मदिरा और नशे का त्याग
3. स्त्री का सम्मान
4. जीवों पर दया
5. मांसाहार और तामसिक भोजन का त्याग
6. आत्मसंयम
7. सतनाम का नित्य स्मरण”

भीड़ (एक स्वर में)
“हम संकल्प लेते हैं!”

SCENE 4 – आध्यात्मिक चरम
VISUAL SEQUENCE
- हजारों लोग दीप जलाते हैं।
- सूर्यास्त की लालिमा।
- कैमरा 360° घूमता है — मानो पूरा क्षेत्र एक जीवित ज्योति बन गया हो।

बाबा ध्यान मुद्रा में।
हल्की हवा।
दीपक की लौ स्थिर।

SCENE 5 – ऐतिहासिक घोषणा
बाबा (दृढ़ स्वर)
"यह पंथ किसी जाति का नहीं —
यह मानवता का है।
परम शक्ति का ज्ञान
हर हृदय तक पहुँचेगा।
आज से यह आंदोलन
सीमा नहीं मानेगा।"

SCENE 6 – विस्तार का दृश्य
MONTAGE (EPIC GLOBAL TONE)
- संदेश अन्य गांवों तक जाता है।
- दूरस्थ क्षेत्रों से लोग आते हैं।
- एक आध्यात्मिक ध्वज लहराता है।
- बच्चे 'सतनाम' लिखते हैं।

वॉइस ओवर:
"जब सत्य संगठित होता है —
तब इतिहास बदलता है।"

SCENE 7 – अंतिम चरम
रात्रि।
हजारों दीपों की रोशनी।
आकाश तारों से भरा।
कैमरा धीरे-धीरे ऊपर उठता है।
नीचे एक प्रकाशमंडल —

मानो पृथ्वी पर नया नक्षत्र जन्म ले चुका हो।

बाबा (धीमे, पर शक्तिशाली स्वर में)
"मनुष्य जब स्वयं को जीत लेता है...
तभी वह संसार को दिशा देता है।
सतनाम — ही परम सत्य है।"
भीड़ की गूंज —
"सतनाम! सतनाम! सतनाम!"

🎬 FADE OUT
संगीत चरम पर — फिर शांत।

🌍 **ENGLISH**

SCENE 36 – FROM MOVEMENT TO SPIRITUAL ORDER

LOCATION: OPEN FIELD NEAR GIRODPURI
TIME: DAWN TO NIGHT

FADE IN:
Drone shot over thousands dressed in white.
At the center stands Baba Guru Ghasi Das.

Baba
"What began as awakening... now becomes a path — a spiritual order founded on Truth and Satnam."
Seven Vows Ceremony

Crowd repeats vows:

- Truth
- No intoxication
- Respect for women
- Compassion for all beings
- No meat or tamasic food
- Self-discipline
- Constant remembrance of Satnam

Visual Climax

Thousands of lamps light up.

Camera circles in 360 degrees.

The gathering resembles a galaxy of light.

Baba

"This path belongs to humanity.

The knowledge of the Supreme Power will reach every heart."

FINAL SHOT

Night sky full of stars.

Below — a sea of light.

Chant echoes:

"Satnam... Satnam..."

🎬 **End of Scene 36**

SCENE 37

🎬 दृश्य 37 — बाबा गुरु घासी दास जी (1775)

"साल वृक्ष — सुषुम्ना का प्रतीक"
📍 स्थान: घना साल वन, गिरौदपुरी के समीप
🕔 समय: प्रातःकाल — सूर्य की स्वर्णिम किरणें

🎞️ **FADE IN:**

EXT. घना साल वन – भोर

कैमरा नीचे से ऊपर की ओर पैन करता है —
एक ऊँचा, सीधा साल वृक्ष
(SHOREA ROBUSTA)
आकाश को छूता हुआ।
सूर्य की किरणें पत्तों के बीच से छनकर धरती पर गिरती हैं।
वृक्ष के नीचे शांत, तेजस्वी —
✨ बाबा गुरु घासी दास जी
सैकड़ों अनुयायी उनके चारों ओर।

SCENE 1 – वृक्ष का आध्यात्मिक अर्थ
बाबा (वृक्ष की ओर संकेत करते हुए)
"देखो इस साल वृक्ष को...
यह अपने पूरे जीवनकाल में
नब्बे अंश में सीधा खड़ा रहता है...
आसमान की ओर बढ़ता है..."
कैमरा वृक्ष के तने पर — पूर्णतः सीधा, स्थिर।

बाबा (गंभीर स्वर)
"जैसे साधक को अपना मेरुदंड सीधा रखना चाहिए...
वैसे ही यह वृक्ष भी सीधा होकर
ब्रह्मांड की सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करता है..."
हल्की हवा। पत्तों की सरसराहट।

SCENE 2 – सुषुम्ना का प्रतीक
बाबा
"यह साल वृक्ष —
हमारी सुषुम्ना का प्रतीक है।
जब मेरुदंड नब्बे अंश में स्थिर होता है,
तो चेतना ऊपर की ओर प्रवाहित होती है..."
VISUAL EFFECT

- वृक्ष के भीतर से प्रकाश ऊपर उठता हुआ।
- समानांतर दृश्य — मानव मेरुदंड में श्वेत प्रकाश स्तंभ।

SCENE 3 – चेतावनी
भीड़ गंभीर हो जाती है।
बाबा (दृढ़ स्वर)
"इस हरे-भरे साल वृक्ष को
कभी मत काटना...
यह केवल लकड़ी नहीं —
यह प्रकृति की जीवित साधना है..."
एक युवक सिर झुकाकर प्रतिज्ञा करता है।

SCENE 4 – भविष्य के लिए निर्देश
पास ही एक सूखा, स्वयं गिरे हुए साल का तना पड़ा है।
बाबा

"जब यह वृक्ष अपने आप सूख जाए...
या गिरा हुआ मिले...
तब इसे सम्मान से उठाओ...
श्वेत कपड़े से ढँककर
नब्बे अंश में स्थापित करो..."
अनुयायी ध्यान से सुनते हैं।

बाबा (आध्यात्मिक ऊँचाई के साथ)
"इसे सुषुम्ना स्वरूप मानो...
यह आने वाली पीढ़ियों को
ध्यान और जागरण की प्रेरणा देता रहेगा..."

SCENE 5 – प्रतीकात्मक स्थापना
CINEMATIC RITUAL
- अनुयायी सूखे साल तने को उठाते हैं।
- उसे श्वेत वस्त्र से आवृत करते हैं।
- भूमि में सीधा स्थापित करते हैं।

सूर्य की किरण सीधे उस पर पड़ती है।
भीड़ सामूहिक स्वर में:
"सतनाम!"

SCENE 6 – आध्यात्मिक चरम
कैमरा ऊपर उठता है।
एक ओर खड़ा जीवित साल वृक्ष।
दूसरी ओर श्वेत वस्त्र में स्थापित प्रतीक।
दोनों समानांतर —
प्रकृति और साधना का संगम।

बाबा (अंतिम संवाद)
"जो वृक्ष को समझ लेता है...
वह स्वयं को समझ लेता है।
जो सुषुम्ना को जागृत कर लेता है...
वह ब्रह्मांड से जुड़ जाता है।
सतनाम — ही वह सेतु है।"

🎬 **FADE OUT**
पत्तों की सरसराहट और "सतनाम" की गूंज।

🌍 ENGLISH VERSION

SCENE 37 – THE SAL TREE: SYMBOL OF SUSHUMNA
LOCATION: SAL FOREST NEAR GIRODPURI
TIME: SUNRISE

FADE IN:
Camera tilts upward along a tall, perfectly straight Sal tree.
Baba Guru Ghasi Das stands beneath it.

Baba
"Observe this Sal tree...
Throughout its life, it stands straight – reaching toward the sky."
Baba (continuing)
"As the seeker keeps the spine at ninety degrees, this tree attracts positive cosmic energy."

Visual Parallel

Light rising inside the tree trunk.

Cross-cut with a luminous white column inside a human spine.

Baba (warning tone)

“Never cut a living green Sal tree.

It is sacred — a living symbol of spiritual alignment.”

Instruction

“If it dries naturally or falls on its own, cover it with white cloth and install it upright at ninety degrees.

See it as the embodiment of Sushumna — a guide for future generations.”

Ritual Scene

Followers raise the dried trunk, wrap it in white cloth, and erect it upright.

Sunlight illuminates it.

Crowd chants: “Satnam!”

Final Words

“One who understands the tree understands himself.

Awaken the Sushumna —

and you unite with the cosmos.”

🎬 **End of Scene 37**

SCENE 38

🎬 दृश्य 38 — बाबा गुरु घासी दास जी (1775)

"जैतखाम की स्थापना — सुषुम्ना का जीवित ध्वज"
📍 स्थान: गिरौदपुरी के समीप पवित्र स्थल
🕛 समय: प्रातः से रात्रि तक — ऐतिहासिक दिवस

🎞 FADE IN:

EXT. पवित्र स्थल – भोर

कैमरा बादलों को चीरती सूर्य की पहली किरणों के साथ नीचे उतरता है।
विशाल मैदान। हजारों अनुयायी श्वेत वस्त्रों में।
मंच के मध्य — श्वेत वस्त्र से आच्छादित, नब्बे अंश में सीधा स्थापित साल वृक्ष का स्तंभ।
उसके समीप — तेजस्वी, शांत, दिव्य आभा से युक्त:
💫 बाबा गुरु घासी दास जी

SCENE 1 – ऐतिहासिक घोषणा
बाबा (गंभीर, गूंजता स्वर)
"आज यह केवल वृक्ष का स्तंभ नहीं...
यह हमारी सुषुम्ना का प्रतीक है...
यह सतनाम का ध्वज है..."
भीड़ पूर्ण मौन।

बाबा
"यह 'जैतखाम'

सत्य की विजय का चिन्ह होगा।
जब तक यह सीधा खड़ा रहेगा —
हमारी चेतना भी सीधी रहेगी।"

SCENE 2 – स्थापना का अनुष्ठान

CINEMATIC RITUAL

SEQUENCE

- शिष्य भूमि को पवित्र जल से सिंचित करते हैं।
- स्तंभ को मजबूती से स्थापित किया जाता है।
- श्वेत ध्वज ऊपर लहराता है।

मंदर, झांझ, मंजीरा की लय तीव्र होती है।
भीड़ सामूहिक उद्घोष:
"सतनाम! सतनाम!"

SCENE 3 – आध्यात्मिक व्याख्या

बाबा

"जैसे यह जैतखाम
धरती से आकाश तक जुड़ा है...
वैसे ही मनुष्य का मेरुदंड
धरती और ब्रह्मांड के बीच सेतु है।
जब तुम इसे देखोगे —
तुम्हें अपनी सुषुम्ना स्मरण होगी..."

SCENE 4 – दूर-दूर से आगमन

MONTAGE (EPIC EXPANSION)

- दूरस्थ गांवों से लोग पैदल आते हुए।
- महिलाएँ दीप लेकर।
- बच्चे 'सतनाम' गाते हुए।
- वृद्ध जैतखाम के सामने ध्यानमग्न।

वॉइस ओवर — बाबा की गूंज:
"यह ध्वज किसी जाति का नहीं...
यह आत्मजागरण का प्रतीक है..."

SCENE 5 – रात्रि का दिव्य दृश्य
रात्रि।
हजारों दीपक जल उठते हैं।
श्वेत जैतखाम चंद्रमा की रोशनी में दमकता है।
कैमरा 360° घूमता है —
मानो प्रकाश का सागर।

एक बालक (माँ से)
"माँ... यह आसमान तक क्यों जाता है?"
माँ (मुस्कुराकर)
"बेटा... यह हमें याद दिलाता है कि हमें भी ऊपर उठना है..."

SCENE 6 – अंतिम संवाद
बाबा (धीमे, पर प्रभावशाली स्वर में)
"जब भी मन डगमगाए —
इस जैतखाम को देखना...
यह तुम्हें स्मरण दिलाएगा —
सीधा रहो... सत्य पर अडिग रहो...
सतनाम — ही परम पथ है।"

🎬 FINAL SHOT
कैमरा ऊपर उठता है।
जैतखाम आकाश को छूता हुआ प्रतीत होता है।
तारों भरा आकाश — नीचे श्वेत ध्वज लहराता हुआ।
भीड़ की गूंज —

“सतनाम... सतनाम...”

🌍 **ENGLISH VERSION**

SCENE 38 – THE RAISING OF THE JAITKHAM
LOCATION: SACRED GROUND NEAR GIRODPURI
TIME: DAWN TO NIGHT

FADE IN:

A white upright pillar wrapped in cloth stands at ninety degrees.

Baba Guru Ghasi Das addresses thousands.

Baba

“This is not merely wood.

It is the symbol of Sushumna.

The flag of Truth.”

Ritual

The pillar is installed firmly.

A white flag rises.

Crowd chants: “Satnam!”

Baba

“As this pillar connects earth to sky, so does your spine connect you to the cosmos.”

Night Climax
Thousands of lamps glow.
The white Jaitkham shines under the moon.

Baba (final words)
“When your mind wavers,
look at this symbol.
Stand upright in truth.
Satnam is the eternal path.”

🎬 **End of Scene 38**

SCENE 39

🎬 दृश्य 39 — बाबा गुरु घासी दास जी (1775)

"मनखे मनखे एक समान — परम सत्य का उद्घोष"
📍 स्थान: जैतखाम स्थल, गिरौदपुरी के समीप
🕕 समय: प्रातःकाल — नवयुग का आरंभ

🎞️ **FADE IN:**

EXT. जैतखाम स्थल – सूर्योदय

सूर्य की पहली किरण श्वेत जैतखाम पर पड़ती है।
हजारों लोग एकत्र — विभिन्न जाति, वर्ग, आयु, वेशभूषा।
मंच के मध्य तेजस्वी व्यक्तित्व —
✨ बाबा गुरु घासी दास जी
हवा में श्वेत ध्वज लहरा रहा है।

SCENE 1 – ऐतिहासिक उद्घोष
बाबा (गंभीर, गूंजता स्वर)
"आज मैं तुम सबको एक ऐसा सत्य बताता हूँ
जो जाति, पंथ, भाषा और सीमाओं से परे है..."
भीड़ शांत।
बाबा (हाथ उठाकर)
"मनखे मनखे एक समान!"
क्षण भर का मौन — फिर गूंजता स्वर।
भीड़:
"मनखे मनखे एक समान!"

SCENE 2 – दर्शन की व्याख्या
बाबा
“मनुष्य-मनुष्य एक समान है।
कोई ऊँचा नहीं... कोई नीचा नहीं...
जिस परम सत्य ने मुझे बनाया —
उसी ने तुम्हें बनाया है...
उसी ने इस धरती के प्रत्येक प्राणी को बनाया है...”

VISUAL MONTAGE

- अलग-अलग जातियों के लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़ते हुए।
- एक धनी व्यक्ति और एक गरीब किसान साथ बैठते हुए।
- स्त्री और पुरुष समान रूप से जैतखाम के सामने ध्यानमग्न।
- बच्चे हँसते हुए साथ खेलते।

SCENE 3 – सार्वभौमिक संदेश
बाबा (आवाज़ में करुणा और शक्ति)
“केवल मनुष्य ही नहीं —
हर जीव में वही परम सत्य निवास करता है।
गाय, पक्षी, वृक्ष, वनस्पति —
सबमें वही चेतना है...”
कैमरा पशुओं और वृक्षों पर — प्रकाश झिलमिलाता हुआ।

SCENE 4 – सामाजिक परिवर्तन का मूर्त रूप
एक तथाकथित “अछूत” व्यक्ति संकोच से आगे आता है।
भीड़ में कुछ लोग हिचकिचाते हैं।
बाबा स्वयं आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ते हैं।
बाबा (स्पष्ट स्वर में)
“जिसे तुम अलग समझते हो —
वही तुम्हारा प्रतिबिंब है।

“मनखे मनखे एक समान!”
भीड़ भावुक।
लोग एक-दूसरे को गले लगाते हैं।

SCENE 5 – वैश्विक दृष्टि (INTERNATIONAL TONE)
VISUAL SEQUENCE
कैमरा धीरे-धीरे ऊपर उठता है।
गांव का दृश्य विस्तृत होकर धरती के मानचित्र में बदलता है।
विभिन्न देशों के लोग — अलग रंग, वेश, संस्कृति —
पर एक ही प्रकाश से जुड़े हुए।
वॉइस ओवर — बाबा की गूंज:
“परम सत्य किसी सीमा में नहीं बंधता...
वह हर हृदय में निवास करता है...”

SCENE 6 – जैतखाम के समक्ष सामूहिक संकल्प
बाबा
“आज संकल्प लो —
किसी भी प्राणी को तुच्छ नहीं समझोगे...
हर जीव में परम सत्य का दर्शन करोगे...”
भीड़ हाथ उठाकर:
“हम संकल्प लेते हैं!”

SCENE 7 – चरम दृश्य
सूर्य पूर्ण रूप से उग चुका है।
जैतखाम स्वर्णिम प्रकाश में नहाया हुआ।
हजारों लोग हाथों में हाथ डाले —
एक जीवित मानव श्रृंखला।
पृष्ठभूमि में सामूहिक उद्घोष:
“मनखे मनखे एक समान

सतनाम! सतनाम!"

🎬 FINAL SHOT
कैमरा ऊपर उठता है।
धरती — एक उज्ज्वल प्रकाशमंडल के रूप में।

बाबा (धीमे, दिव्य स्वर में)
"जब तुम हर प्राणी में परम सत्य को देखोगे —
तब जगत में भेद नहीं रहेगा...
तब मानवता पूर्ण होगी..."

🎬 FADE OUT
ध्वनि — "सतनाम..." अनंत में विलीन होती हुई।

🌍 ENGLISH VERSION

SCENE 39 – "ALL HUMANS ARE EQUAL"
LOCATION: JAITKHAM SITE
TIME: SUNRISE

FADE IN:
The white Jaitkham shines in golden dawn light.
Thousands gather from diverse backgrounds.

Baba Guru Ghasi Das
"Today I declare a truth beyond all divisions..."

He raises his hand:
“Mankhe-Mankhe Ek Saman — All Humans Are Equal!”

Baba
“No one is higher. No one is lower.
The same Supreme Truth that created me
created you...
and every living being.”

Visual Montage
Different communities holding hands.
Animals grazing peacefully.
Children playing together.

Baba
“The Supreme Truth lives in every being —
human, animal, tree, all existence.”

Climax
Crowd forms a human chain around the Jaitkham.
Sun fully risen.
Chant echoes:
“Mankhe-Mankhe Ek Saman!
Satnam!”

🎬 End of Scene 39

SCENE 40

कहानी का 40वाँ दृश्य

कहानी का शीर्षक – बाबा गुरु घासी दास जी

वर्ष – 1775

(परंतु दृश्य समय की सीमाओं से परे)
स्थान – गिरौदपुरी धाम से विश्व व्यापी आकाश तक
समय – संध्या से अनंत काल तक

संध्या का समय है। गिरौदपुरी की पावन भूमि पर श्वेत जैतखाम आकाश को स्पर्श करता हुआ खड़ा है। उसके चरणों में शांति, प्रकाश और सत्य की तरंगें फैल रही हैं। बाबा गुरु घासी दास जी पद्मासन में विराजमान हैं। उनके नेत्र अर्धनिमीलित हैं, किंतु उनके भीतर से जो प्रकाश निकल रहा है, वह केवल उस युग तक सीमित नहीं है।

हवा में धीमे स्वर गूंजते हैं —

"सतनाम... सतनाम..."

उनके शिष्य विनम्रता से पूछते हैं —

शिष्य: "गुरुदेव, क्या आपका यह संदेश आने वाले समय में भी जीवित रहेगा?"

गुरु घासी दास जी शांत मुस्कुराते हैं।

गुरु जी:

"सत्य कभी मरता नहीं।
जब तक पृथ्वी पर एक भी प्राणी श्वास लेगा,
तब तक 'मनखे मनखे एक समान' की वाणी गूंजती रहेगी।"

अचानक दृश्य परिवर्तित होता है —

जैसे समय की धारा बहने लगती है...

1775 से आगे...
शताब्दियाँ बीतती हैं...
राज्य बदलते हैं...
समाज बदलता है...
परंतु जैतखाम की श्वेत ध्वजा नहीं झुकती।
दृश्य अब भविष्य में पहुँचता है —
बच्चे विद्यालय में पढ़ रहे हैं —
"सभी मनुष्य समान हैं।"
एक शिक्षक कहता है —
"यह संदेश छत्तीसगढ़ की धरती से उठा था।"
दूर किसी अन्य देश में भी लोग हाथ पकड़कर खड़े हैं —
जाति, रंग, भाषा से परे।
वहाँ भी वही स्वर —
मनखे मनखे एक समान।"
फिर दृश्य और व्यापक हो जाता है —
वनों में पशु-पक्षी,
नदियों में बहता जल,
आकाश में उड़ते पक्षी,
समुद्र की लहरें —
सबमें एक ही चेतना धड़कती है।
गुरु जी की वाणी गूंजती है —
"केवल मनुष्य ही नहीं,
समस्त प्राणी जगत में
परम सत्य ही निवास करता है।
जिसने यह जान लिया,
उसने भेदभाव त्याग दिया।"
आकाश से दिव्य प्रकाश उतरता है।
जैतखाम से निकलती श्वेत किरणें पृथ्वी को आवृत कर लेती हैं।

लोग एक स्वर में बोलते हैं —
“सतनाम सत्य है।”
“मनखे मनखे एक समान।”
गुरु जी उठते हैं।
धरती को स्पर्श कर आकाश की ओर देखते हैं।
गुरु जी (गंभीर स्वर में):
“समय बदलेगा,
पर सत्य अटल रहेगा।
जब भी मानव भटकेगा,
उसे यह वाणी मार्ग दिखाएगी।”
धीरे-धीरे उनका स्वर प्रकाश में विलीन हो जाता है।
परंतु वाणी गूंजती रहती है —

मनखे मनखे एक समान…”
“सतनाम…”
संध्या अब अनंत में बदल चुकी है।
और यह संदेश —
सिर्फ 1775 का नहीं, बल्कि आने वाली हर शताब्दी का हो चुका है।

ENGLISH

Baba Guru Ghasidas sits in deep meditation near the sacred Jaitkham of Giroudpuri. The white tower rises toward the sky like a pillar of truth. Soft chants fill the air —

“Satnam… Satnam…”

A disciple bows respectfully.

Disciple:

“Gurudev, will your message live in the future as well?”

Guru Ji opens his eyes gently. A serene light radiates from his face.

Guru Ji:

"Truth never dies.

As long as even one being breathes on this earth,

the voice of 'Mankhe Mankhe Ek Saman' will continue to echo."

Time Begins to Flow...

The scene transforms.

Years pass.

Centuries pass.

Empires rise and fall.

Societies change.

But the white Jaitkham still stands — unshaken.

The vision moves into the future.

Children sit in classrooms learning:

"All human beings are equal."

A teacher says,

"This message once rose from the soil of Chhattisgarh."

In distant lands, people of different colors, languages, and cultures hold hands together.

And the same voice echoes —

"Mankhe Mankhe Ek Saman."

(Human beings are all equal.)

The Message Expands Further

Forests whisper in the wind.

Rivers flow with calm rhythm.

Birds fly across the sky.

Ocean waves move endlessly.

A divine voice resounds:

“Not only humans, but in every living being resides the Supreme Truth.

Whoever realizes this abandons all discrimination.”

A radiant white light emerges from the Jaitkham and spreads across the earth.

People everywhere speak together:

“Satnam is Truth.”

“Mankhe Mankhe Ek Saman.”

Guru Ji rises slowly, touches the earth, and looks toward the infinite sky.

Guru Ji (deep, timeless voice):

“Time will change, but Truth will remain eternal.

Whenever humanity loses its path, this message will guide it back.”

His form gradually dissolves into light.

But the echo remains –

“Mankhe Mankhe Ek Saman...”

“Satnam...”

The evening turns into eternity.

And the message no longer belongs only to 1775 – it belongs to every century yet to come

End 🔚